



अणुव्रत

अहिंसक-नैतिक चेतना का प्रतिनिधि पाक्षिक

वर्ष : 57 ■ अंक : 1 ■ 1-15 नवम्बर, 2011

संपादक
महेन्द्र जैन

प्रबन्ध संपादक
प्रदीप संचेती

सम्पर्क सूत्र

अणुव्रत महासमिति

अणुव्रत भवन, 210,
दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली--110002

दूरभाष : (011) 23233345

फैक्स : (011) 23239963

e-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

Website : anuvratinfo.org

संपादक-सम्पर्क

अहर्म, 118, कैलाशपुरी
टोंक रोड़, जयपुर-302018
मो. : 09828158454

e-mail : mahendrajain3@rediffmail.com

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : रु. 300

त्रैवार्षिक : रु. 700

दस वार्षिक : रु. 2000

विज्ञापन सहयोग :

आवरण पृष्ठ चतुर्थ 'रंगीन' : रु. 20,000

आवरण पृष्ठ 2 व 3 'रंगीन' : रु. 10,000

साधारण पृष्ठ 'पूरा' : रु. 5,000

साधारण पृष्ठ 'आधा' : रु. 3,000

इस अंक में

- दिशा-बोध
 - निष्काम भाव से हो ज्ञान-दान *आचार्य महाश्रमण* 3
- जीवन-दर्शन
 - कैसे करें संस्कार-निर्माण *आचार्य महाप्रज्ञ* 5
 - नारी अपनी शक्ति को पहचाने *आचार्य तुलसी* 8
- प्रेरक-प्रतिमान
 - शांतिदूत दलाईलामा को शांति पुरस्कार *डॉ. कृष्ण कुमार रत्न* 10
- अणुव्रत की बात
 - अणुव्रत को अधिक व्यापक कैसे बनाएं? *प्रो. दयानन्द भार्गव* 11
 - पर्दा-प्रथा-उन्मूलन में आचार्य तुलसी..... *समणी डॉ. कुसुमप्रज्ञा* 13
- परिवार-परिवेश
 - जिज्ञासाएं छात्रों की -
 - समाधान आचार्य महाश्रमण के *साभार* 16
 - स्वामी विवेकानन्द के नारी-विषयक विचार *डॉ. मंजुला सक्सेना* 19
 - कैसे बना रहे परिवार में सामंजस्य? *डॉ. उषा गोयल* 21
 - किशोर मन की उलझनों के ओर-छोर *शैलेन्द्र जैन* 23
 - कोमल मन को कोमल ही रहने दो *कविता* 25
 - जीवन का सच्चा धन : सत्संस्कार *मुनि दीपकुमार* 27
- काव्य
 - कौन जानता माँ की लीला! *स्वामी विवेकानन्द* 19
 - माँ! ओस की बूंद-सी तुम *संजय आचार्य 'वरुण'* 30
 - स्वागत है द्वार पर! *अशोक 'अंजुम'* 30
- स्थायी स्तंभ
 - संपादकीय 2
 - प्रेरक प्रसंग 7
 - झांकी हिन्दुस्तान की 20
 - राष्ट्र-चिंतन 24
 - अणुव्रत : गति-प्रगति 31-39

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से सम्पादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

समरस परिवार-सुखी राष्ट्र



‘वसुधैव कुटुम्बकम्’— समूचा विश्व एक परिवार है, यह हमारे प्राचीन ऋषियों का घोष है जिसमें मानव मात्र को अपने परिवार का सदस्य मानने की बात कही गयी है। इसी के साथ एक आगम वाणी उद्घोषित हुयी— ‘परस्परपग्रहोजीवानाम् ।’ जीवमात्र एक-दूसरे पर आश्रित है; अर्थात्— प्रत्येक प्राणी हमारा अपना है। परिवार-बोध के ये सूत्र युग-युग से हमारा मार्गदर्शन करते रहे हैं।

समाज से पहले व्यक्ति का परिवार बना। हर परिवार अपने प्रत्येक सदस्य के व्यक्तित्व-विकास का आधार होता है। परिवार के सह-जीवन में जिस आनंद, जिस अपनत्व तथा जिस रसात्मकता की प्राप्ति होती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। पारस्परिक सौहार्द, विनय, सम्मान, विश्वास, सहिष्णुता, समता, वात्सल्य, सेवा, प्रमोद आदि परिवार की श्रेष्ठता के सर्वमान्य लक्षण हैं। किन्तु; समय के गति-चक्र ने आज परिवार नामक संस्था में अनेक उलझनें पैदा कर दी हैं। संयुक्त परिवार के आनन्द की बात तो दूर, ‘हम दो हमारे दो’ वाले परिवार भी आज शान्त और सुखी जीवन व्यतीत नहीं कर पा रहे हैं। जीवन भर एक-दूसरे का साथ निभाने के संकल्प में बँधे दो प्राणी भी कुछ कदम चलते ही विमुख हो जाते हैं। जब परिवार ही सुखी नहीं है फिर समाज और राष्ट्र में समरसता की कल्पना करना तो दिवा-स्वप्न जैसा ही होगा।

अध्ययन बताते हैं— देश, काल, समय की परिस्थितियों से घिरा व्यक्ति का मन आज अशान्त है, वह तनाव में रहता है, इसलिये अपने परिवार की सुख-शांति के उपाय नहीं कर पाता, बालकों को अच्छे संस्कार नहीं दे पाता। और तो और, वह इस दिशा में सोच ही नहीं पाता कि उसको स्वयं अच्छे संस्कार ग्रहण करना है अथवा भावी पीढ़ी को भी संस्कारवान बनाना है।

अणुव्रत के प्रस्तुत अंक में हमारे पारिवारिक परिवेश के विभिन्न पहलुओं की विविध प्रकार से गवेषणा की गयी है, तो अनुभूत उपाय भी सुझाये गये हैं। विशेष रूप से इस बार किशोर वय के बालक-बालिकाओं ने खुलकर अपने विचार रखे हैं। एक ओर उन्होंने अपनी जिज्ञासाएं अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के समक्ष प्रस्तुत कर समाधान लिये हैं तो दूसरी ओर दसवीं कक्षा की बालिका कविता ने परिवारों के विघटन के कारणों और परिणामों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। और, एक अन्य रचना में किशोर मन की उलझनों के ओर-छोर मनोविश्लेषक के माध्यम से पकड़ने की कोशिश की गयी है।

लगभग पाँच सदी पहले सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव का अवतरण हुआ था। मानवता की राह दिखाने वाले वे एक महान् आध्यात्मिक गुरु और पहुँचे हुए संत थे। उनके पावन जन्म-दिवस (कार्तिक पूर्णिमा) पर विनम्र भावांजलि।

पिछले दिनों अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण द्वारा उद्घोषित ‘अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह’ का देशव्यापी अभियान चला। साम्प्रदायिक सौहार्द, अहिंसा, जीवन-विज्ञान, पर्यावरण आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर सैकड़ों स्थानों पर हजारों-हजारों व्यक्तियों ने इसमें पूरे उल्लास के साथ भाग लिया। चिन्तन गोष्ठियां हुयीं तो विद्यालयों में हजारों विद्यार्थियों ने नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करने, तोड़-फोड़ नहीं करने, कन्या भ्रूण हत्या नहीं करने जैसे संकल्प ग्रहण किये। देशभर से उद्बोधन सप्ताह समारोहों के समाचार, चित्र आदि हमें मिले हैं। इस अंक में कतिपय समाचार दिये गये हैं, यथासंभव अगले अंक में भी देने का प्रयत्न करेंगे।

‘अणुव्रत’ पाक्षिक इस अंक के साथ प्रकाशन के 57 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। प्रौढ़ावस्था के अनुरूप अणुव्रत मिशन के लिए प्रौढ़ विचारों के साथ-साथ अहिंसक-नैतिक समाज रचना के व्यावहारिक पहलुओं पर रचनात्मक कार्यों को रुचिकर एवं शालीन तरीके से प्रस्तुति देना इसका उद्देश्य है। इस दिशा में आगे बढ़ने का हम निरन्तर प्रयत्न करते रहेंगे। विश्वास है, आप भी राष्ट्र निर्माण के इस महान् यज्ञ में हमारे साथ पूरी आत्मीय सक्रियता के साथ जुड़ेंगे। नैतिक उत्थान के महान् पुरोधे गुरुदेव तुलसी ने व्यक्ति, परिवार और समाज के सौष्ठव का जो मार्ग प्रशस्त किया था, हम उस पर निःसंकोच बढ़ते रहेंगे।

— महेन्द्र जैन



निष्काम-भाव से हो ज्ञान-दान

● आचार्य महाश्रमण ●

हमारे सामने दो पथ हैं। एक अनुस्रोत का पथ और दूसरा प्रतिस्त्रोत का पथ। अनुस्रोत का मतलब है प्रवाह के साथ-साथ बह जाना और प्रतिस्त्रोत का मतलब है प्रवाह के प्रतिकूल यानी विरोधी दिशा में आगे बढ़ना। अनुस्रोत में बहना आसान होता है, प्रतिस्त्रोत में बहना कठिन होता है। यदि हवा पीछे से आ रही है तो पथिक के लिए चलना आसान हो जाता है और यदि हवा सामने से आ रही है तो थोड़ा गतिरोध भी हो सकता है। संसार के भी दो पथ हैं। एक असंयम का पथ और दूसरा संयम का पथ। असंयम का पथ अनुस्रोतगामी है जैसे भोग भोगना, ऐशो आराम में रहना। इसमें सामान्य आदमी रहता है। संयम का पथ प्रतिस्त्रोतगामी है जैसे महाव्रतों को स्वीकार कर लेना, गृहत्याग कर देना, अध्यात्म साधना के लिए समर्पित हो जाना। जिस आदमी ने प्रतिस्त्रोत का लक्ष्य बनाया है, जिसमें कुछ होने की, बनने की भावना पैदा हुई है, उसे कुछ कठोरता का जीवन जीना होता है, प्रतिस्त्रोत में चलना होता है। पूर्णतया प्रतिस्त्रोत में चलना हर आदमी के लिए संभव नहीं होता। इसलिए एक बीच का मार्ग भी निकाला गया कि यदि महाव्रती न बन सको तो सर्वथा अत्रती भी मत रहो, बीच के मार्ग को अपनाकर अणुव्रती बन जाओ। अणुव्रत को स्वीकार करने से आदमी के जीवन में कुछ प्रतिस्त्रोतगामिता आ जाएगी।

अणुव्रत एक मध्यम मार्ग है, जिस पर चलना ज्यादा कठिन नहीं है। कुछ लोग

अणुव्रत की नियमावली के आधार पर चलते हैं और प्रतिस्त्रोतगामिता का अभ्यास करते हैं। अणुव्रत की गतिविधि को प्रसारित करने के लिए एक वर्ग पर ध्यान दिया गया। वह है शिक्षक वर्ग। इससे दो लाभ हैं। पहला लाभ यह है कि शिक्षकों का स्वयं का जीवन उन्नत बनेगा, आदर्श बनेगा और निर्मल बनेगा। दूसरा लाभ है कि शिक्षक अणुव्रती होगा तो एक अच्छी संस्कार-युक्त वानरशक्ति तैयार हो जाएगी। श्री रामचन्द्रजी सीता को प्राप्त करने के लिए लंका गए तब उनके साथ वानर सेना थी। सामने रावण की सेना यानी राक्षस सेना थी। श्रीराम ने वानर सेना के माध्यम से और स्वयं के व लक्ष्मण के पराक्रम से रावण को हत-प्रहत करके लंका पर विजय प्राप्त कर ली। उसी प्रकार गुरुदेव तुलसी ने भी शिक्षक, विद्यार्थी अणुव्रत रूपी वानर सेना को तैयार किया, जो अनैतिकता, बुराईयां, भ्रष्टाचार रूप राक्षस सेना से लड़कर उन्हें परास्त कर सके।

अणुव्रत शिक्षक संसद अणुव्रत के प्रसार का कार्य कर रही है। मेरे विचारानुसार संसद के दो विभाग होने चाहिए। पहले

विभाग के सदस्य जो फील्ड में सारे काम न कर सकें, कम से कम वे स्वयं शिक्षक अणुव्रतों को स्वीकार करें और इस बात के लिए संकल्पित हों कि हम अपने जीवन में या शिक्षक काल में शिक्षक-अणुव्रत की आचार संहिता का पालन करेंगे। अणुव्रत के प्रति इतनी-सी प्रतिबद्धता है तो उसे अणुव्रत शिक्षक संसद का सदस्य बनाने में कठिनाई नहीं लगती। वे और काम करें तो स्वागत, न करें तो कोई चिन्ता की बात नहीं; क्योंकि उनकी प्रतिबद्धता मात्र अणुव्रत के पालन तक है। कार्य करने के लिए वे मुक्त हैं, कर सकें तो करें अन्यथा न करें। अणुव्रत शिक्षक संसद के दूसरे विभाग के सदस्य शिक्षक अणुव्रतों का पालन तो करेंगे ही, इसके साथ वे इस बात के लिए प्रतिबद्ध होंगे कि अणुव्रत का प्रसार करने में अपनी शक्ति का नियोजन करेंगे।

जिनके पास सरस्वती है, श्रम करने की शक्ति है पर संसाधनों की कुछ कमी होती है तो कार्य अच्छी तरह नहीं हो सकता। अकेली सरस्वती, अकेली लक्ष्मी और अकेली दुर्गा

समाज में लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा का योग बना रहे। मैं इनको प्रतीक के रूप में बता रहा हूँ। समाज में तीनों शक्तियों की अपेक्षा होती है। समाज या संस्था को लक्ष्मी की शक्ति भी चाहिए, विद्या-विवेक की शक्ति भी चाहिए और साथ में कार्य करने की, श्रम करने की शक्ति भी होनी चाहिए। तीनों का योग होता है तो हर संगठन अपने ढंग से अच्छा काम कर सकता है और विकास के शिखर पर आरोहण कर सकता है।

कितना काम कर सकेगी? अगर सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा तीनों अपनी कमेटी बना लें, तीनों मिल जाएं तो बहुत अच्छा कार्य हो सकता है। एक ओर लक्ष्मी का सहयोग हो, सरस्वती का योगदान हो और दुर्गा का मनोबल हो। इन तीनों का योग हो तो कार्य करने में सुविधा हो जाती है। लक्ष्मी बिल्कुल दूर जाकर बैठ जाएगी, सरस्वती से नाराज रहेगी तो शिक्षक संसाधनों के अभाव में ज्यादा कुछ कर नहीं पाएगा इसलिए लक्ष्मी सरस्वती से नाराज न रहे। सरस्वती लक्ष्मी से नाराज न रहे। दुर्गा भी अलग-थलग न रहे। इन तीनों दिव्य-शक्तियों की समिति का होना आवश्यक है। तीनों का समवाय हो जाता है तो कार्य करने में सुविधा हो जाती है।

शिक्षक के सामने दो कार्य मुख्य रूप से होते हैं। उसका पहला काम है विद्यार्थियों को ज्ञान-दान देना। उसका दूसरा कार्य है, बाल-बच्चों का भरण-पोषण कर सके वैसी व्यवस्था प्राप्त करना। शिक्षक यह सोचे कि अनुदान तो मुझे लेना पड़ता है, चूंकि मैं एक परिवार का सदस्य हूँ इसलिए परिवार के प्रति मेरा फर्ज है। उस फर्ज को निभाने के लिए पैसा तो लेना पड़ता है पर शिक्षा का दान देना नहीं पड़ता। वह मुझे अपनी इच्छा से, अपनी खुशी से, अपनी सेवा भावना से देना चाहिए। शोषण न शिक्षक की तरफ से हो और न व्यवस्थापक वर्ग की तरफ से हो। दोनों एक-दूसरे के पोषण के प्रति जागरूक रहते हैं तो शिक्षक सफलता के साथ शिक्षा-दान के क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है और वह अपनी सेवा भी अच्छी तरह अर्पित कर सकता है। आदमी पैसे को अधिक महत्त्व दे और सेवा को गौण कर दे तो इसका मतलब है, कहीं कामनाएं उसके भीतर में प्रस्फुटित हो रही हैं, काम की चेतना उजागर हो रही है। इसलिए उसका पैसे के प्रति आकर्षण ज्यादा है और सेवा के प्रति आकर्षण कम है। श्रीमद्भगवद्गीता में काम (कामना) से होने वाले नुकसान को सुन्दर रूपक के माध्यम से बताया गया है :

“धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च ।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ।।”

-- 3/38

-- जिस प्रकार धुएं से अग्नि और मैल से दर्पण ढक जाता है तथा जिस प्रकार जेर से गर्भ ढका रहता है, वैसे ही कामना की तीव्रता के कारण यह ज्ञान ढका रहता है।

अग्नि हो और धुआं छा जाए तो धुआं अग्नि को आवृत कर देता है। दर्पण पर मल लग गया, गंदगी लग गई फिर चेहरा देखने में कठिनाई होती है और जैसे जेर गर्भ को आवृत कर लेती है, इसी तरह सेवा की भावना या शुद्ध ज्ञान की चेतना को यह कामनारूपी धुआं, मल और जेर आवृत कर देती है। यह कामना-रूपी अग्नि संताप देने वाली है। इसे पूर्णतया समाप्त करना तो कठिन है पर उसको इतना कम कर दिया जाए कि हमारे कार्य में बाधक न बने। कामनाएं संतुलित रहें, आदमी की सेवा भावना प्रखर बनी रहे। पैसे की कामना सेवा की भावना को आवृत न करे। गीता में निष्काम कर्मयोग की बात कही गई है और जैन वाङ्मय में अनासक्ति

की बात कही गई है। दोनों ग्रंथों में कहा गया है--कर्म करो, कर्मयोगी बनो। कर्मयोगी वही बन सकता है जो फल की आशंसा छोड़ देता है। अणुव्रत के कार्यकर्ता मात्र सेवा की भावना से कार्य करें, कोई फलाशंसा नहीं रखें। गीता की भाषा में यह कर्मयोग हो जाएगा और जैन वाङ्मय के संदर्भ में निर्जरा का काम हो जाएगा, सेवा का काम हो जाएगा। जिसमें सेवा की भावना होती है, वह परावलम्बिता को छोड़ स्वावलम्बिता की दिशा में आगे बढ़ जाता है।

समाज में लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा का योग बना रहे। मैं इनको प्रतीक के रूप में बता रहा हूँ। समाज में तीनों शक्तियों की अपेक्षा होती है। समाज या संस्था को लक्ष्मी की शक्ति भी चाहिए, विद्या-विवेक की शक्ति भी चाहिए और साथ में कार्य करने की, श्रम करने की शक्ति भी होनी चाहिए। तीनों का योग होता है तो हर संगठन अपने ढंग से अच्छा काम कर सकता है और विकास के शिखर पर आरोहण कर सकता है।

“दिशाहीन जीवन कहीं भी पहुंच नहीं पाता और दिशा वही हो सकती है जहां समता है, संतुलन है, आत्म-विजय है। हमें जीवन की उसी भूमि पर पहुंचना है, अतः वैसे संस्कारों का निर्माण प्रारंभ से ही करना जरूरी है। जन्म, नामकरण, विवाह, पर्व और मृत्यु-- ये विशेष प्रसंग हैं। इन्हीं प्रसंगों पर व्यक्ति की पहचान होती है और पहचान के माध्यम बनते हैं संस्कार। संस्कार ऐसे हों कि जो देश और काल के प्रतिकूल नहीं हों, अनुपयोगी रूढ़ि से जकड़े हुए न हों, साथ ही अंधानुकरण और अस्वस्थ मनोरंजन की जिनमें प्रवृत्ति न हो। साथ ही साथ समाज के स्तर पर उत्तेजना और हिंसा के बीज बोने वाले भी न हों।

इसी तरह आहार-शुद्धि पर सोचा जाना चाहिए। यह केवल धर्मशास्त्र का ही विषय नहीं है, यह स्वास्थ्य-शास्त्र और व्यवहार-मनोविज्ञान का विषय भी बन चुका है। बहुत पुराना सूक्त है- जैसा अन्न खाते हैं, वैसा ही मन हो जाता है। विज्ञान ने इस सूक्त में कुछ और जोड़ दिया है- 'जैसा आहार, वैसा न्यूरोट्रांसमिटर' और 'जैसा न्यूरोट्रांसमिटर वैसा व्यवहार।'

आहार-शुद्धि और व्यसन-मुक्ति के फलित हैं- 1. स्वस्थ और संतुलित जीवन, 2. शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य में वृद्धि तथा 3. अपराधी मनोवृत्ति से बचाव।

-- आचार्य महाश्रमण

कैसे करें संस्कार-निर्माण

• आचार्य महाप्रज्ञ •



जीवन का अच्छा पक्ष—शुक्लपक्ष प्रकट हो या जीवन का बुरा पक्ष या अंधेरे का पक्ष प्रकट हो, यह हमारे पुरुषार्थ पर निर्भर है। यह निर्माता पर भी निर्भर है कि हम किस पक्ष को उभारें, जिससे संतान अच्छी बन सके। किस पक्ष को दबाएं, जिससे बुराइयां उभर कर ऊपर आ सकें और वे धीरे-धीरे शान्त या क्षीण हो जाएं। यह है हमारा करणीय कार्य। बच्चा क्या लेकर आया है, इस पर हमारा कोई वश नहीं है। करना इतना ही है कि उसमें जो अच्छाई के बीज विद्यमान हैं, उन्हें उभार कर ऊपर ला सकें। इसमें महिलाओं का दोहरा दायित्व है। पुरुषों का इकहरा दायित्व है। पुरुष का काम है अपने संस्कारों का निर्माण करना। महिला का काम है अपने संस्कारों का निर्माण करे और साथ-साथ संतान के संस्कारों का भी निर्माण करें क्योंकि संतान का सम्बन्ध जितना माता के साथ होता है, उतना पिता के साथ नहीं होता। उसे साहचर्य भी जितना माता

का मिलता है, उतना पिता का नहीं मिलता।

संस्कार निर्माण करने वाले व्यक्ति को पहले समझ लेना है कि किसका निर्माण करना है? दूसरे के संस्कारों का निर्माण करने से पहले स्वयं के संस्कारों का निर्माण जरूरी है। स्वयं को संस्कृत बना कर ही व्यक्ति दूसरों का संस्कार निर्माण कर पाता है।

संस्कार निर्माण का पहला सूत्र है—स्वार्थ का सीमाकरण। यह नहीं कहा जा सकता कि स्वार्थ को छोड़ दिया जाए। कोई भी व्यक्ति सर्वथा स्वार्थ को छोड़ नहीं सकता। राजनीतिक प्रणालियों में कितने परीक्षण हो गये। साम्यवादी प्रणाली में कम्यूनियों का विकास हुआ, किन्तु उन्हें लौटना पड़ा। यह समझ में आ गया कि वैयक्तिक स्वार्थ की पूर्ति हुए बिना आदमी में कोई अंतःप्रेरणा नहीं जाग सकती। हमारी सबसे बड़ी अंतःप्रेरणा है स्वार्थ। वैयक्तिक स्वार्थ होता है तब आदमी बहुत अच्छा काम करता है, मनोयोग से करता है। जहाँ समूह के लिए करना पड़ता है, वहाँ मनोवृत्ति दूसरे प्रकार की बन जाती है। वह सोचता है—सब काम कर रहे हैं, मैं अकेला नहीं करूंगा तो क्या फर्क पड़ेगा। इसी तरह दूसरे-तीसरे की मानसिकता बनती जाती है। सौधर्म चक्रवर्ती आकाश मार्ग से जा रहा था। सोलह हजार देव उसकी पालकी को उठाए हुए थे। एक देव ने सोचा—इतने लोग लगे हुए हैं, एक में छोड़ दूंगा तो क्या होगा? उसी

“बच्चे को लम्बा श्वास लेना सिखाया जाए और धीरे-धीरे इतना अभ्यास करा दिया जाए कि वह एक मिनट में चार-पांच श्वास लेना सीख जाए। अगर पांच या दस मिनट भी बच्चे को इस तरह का अभ्यास कराया जाए तो तीन महीने में बच्चे के व्यवहार में पर्याप्त अन्तर देखा जा सकता है। उसे क्रोध आना कम हो जाएगा, मादक वस्तुओं से वह बहुत दूर रहेगा। मादक वस्तुओं का सेवन मानसिक थकान मिटाने के लिए होता है। नशे की यह खूबी है कि वह एक बार तो स्वर्ग जैसी सुख की अनुभूति करा देता है किन्तु दीर्घ श्वास का अभ्यास करने वाला, वर्तमान में जीने वाला इस तरह के झूठे सुख की खोज में नहीं जायेगा।”

क्षण यह विचार सोलह हजार देवों के मन में भी संक्रांत हुआ और एक साथ सबने पालकी छोड़ दी। चक्रवर्ती समुद्र में गिर कर डूब गया।

व्यक्तिगत स्वार्थ एक बहुत बड़ी प्रेरणा है। इस सचाई को हम अस्वीकार न करें। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता—अब स्वार्थ को छोड़ कर परमार्थ



का जीवन जीएं। यह असंभव बात होगी और कोई मानेगा भी नहीं। महत्वपूर्ण और जरूरी यह है कि स्वार्थ को न छोड़ पाएं तो उसका सीमाकरण जरूर करें। ऐसा स्वार्थ भी नहीं होना चाहिए, जो दूसरे के स्वार्थ में बाधा डाले, कठिनाई पैदा करे। कोरा स्वार्थ किसी काम का नहीं होता।

एक राजा ने तीन नौकर रखे। परीक्षा लेने के लिए तीनों को राजा ने अपने पास बुलाया। राजा ने उनसे पूछा--'बताओ, अगर संयोगवश ऐसा हो जाए कि मेरी दाढ़ी और तुम्हारी दाढ़ी में एक साथ आग लग जाए, तो तुम क्या करोगे?' एक बोला--'महाराज! पहले अपनी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा।' राजा ने कहा--'तुम स्वार्थी आदमी हो, इसलिए काम के योग्य नहीं हो।' दूसरे ने कहा--'महाराज! मैं आपका सेवक हूँ, इसलिए पहले आपकी चिंता करूंगा, अपनी नहीं। मैं आपकी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा। राजा ने सोचा--यह चालाक और चापलूस आदमी है। जो कह रहा है, वैसा करेगा नहीं। वह भी नहीं जंचा। राजा ने तीसरे से पूछा। उसने कहा--'महाराज! ऐसी स्थिति में मैं एक हाथ से अपनी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा और दूसरे हाथ से आपकी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा।' राजा ने उसे अपनी सेवा में नियुक्त कर लिया। यह है स्वार्थ का सीमाकरण। केवल अपना ही स्वार्थ नहीं-दूसरे का भी हित साधना चाहिए।

परिवारों में कलह क्यों होती है? इसीलिए कि जहाँ देवरानियां-जेठानियां अपने-अपने बच्चे को प्राथमिकता देना शुरू करती हैं, वहाँ दूसरों पर इसकी तीव्र प्रतिक्रिया शुरू हो जाती है। जहाँ सामुदायिक जीवन है, वहाँ अपने स्वार्थ को असीम न बनाएं, उसकी एक सीमा रखें कि इससे आगे नहीं बढ़ना है तो समस्या कभी पैदा नहीं होगी।

संस्कार-निर्माण का दूसरा सूत्र है--उदार दृष्टिकोण। हमारा दृष्टिकोण विशाल होना चाहिए। संकीर्ण दृष्टि से देखने वाला अपने

आस-पास तक ही देख पायेगा। आदमी को दूर तक की और आगे-पीछे की बात भी जरूर देखनी चाहिए। दृष्टिकोण संकुचित होगा तो व्यवहार में उलझनें पैदा होंगी। दृष्टिकोण व्यापक और उदार होगा तो व्यापक हितों की ओर ध्यान दिया जाएगा। संघर्ष का कारण ही संकुचित दृष्टिकोण है। संकुचित वृत्ति परिवार की भी समस्या है, समाज की भी समस्या है। बहुत सीमित दृष्टि से बात सोची जाती है इसलिए अनेक समस्याएं उलझ जाती हैं।

संस्कार-निर्माण का तीसरा सूत्र है--हीनभावना और अहंभावना से मुक्त रहने का अभ्यास। महिलाओं में हीनभावना की समस्या ज्यादा देखी जाती है, यह स्वाभाविक भी है। पुरुष को अहंभाव अधिक सताता है तो महिलाओं को हीनभाव ज्यादा सताता है। हीनभाव और अहंभाव से मुक्त होकर संतुलित जीवन कैसे जिया जाए, यह एक प्रश्न है। हीनता के कारण भय पैदा होता है। भय के अनेक कारण हैं। भय के कारणों में ही आदमी बैठा है, इसलिए भय होना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। हीनता की अनुभूति भी

अस्वाभाविक बात नहीं है, किन्तु जिसे संस्कार का निर्माण करना है, उसके लिए यह अभ्यास जरूरी है कि वह कैसे हीनता और अहं की ग्रंथियों से बच सके?

संस्कार निर्माण का चौथा सूत्र है--संगठन और अनुशासन के प्रति विश्वास। इनके प्रति आस्था का निर्माण होना चाहिए। संस्कार निर्माण के लिए अनुशासन का मूल्यांकन बहुत जरूरी है। बहुत सारे सिद्धांत हैं, जिनमें तर्क की गुंजाइश होती है, किन्तु अनुशासन इस मामले में निरपवाद है। इस संबंध में कोई तर्क नहीं होता। एक सैनिक कभी तर्क नहीं करता। क्या सेना में पढ़े-लिखे लोग नहीं होते? वहाँ शिक्षित होते हैं, किन्तु वहाँ तर्क नहीं चलता। आदेश के सिवाय दूसरा कोई शब्द नहीं मिलता। संगठन भी उतना ही आवश्यक है। इन दोनों के प्रति एक नया दृष्टिकोण बनना चाहिए--अनुशासन में रहना है और अनुशासन का विकास करना है।

शक्ति अकेले की नहीं बनती और शक्तिशून्य जीवन किसी काम का नहीं होता। शक्ति संगठन के बिना आती नहीं। कहा गया--'संघे शक्तिः कलौ युगे।' इसके स्थान पर यह कहा जाना चाहिए--'संघे शक्तिः सदा युगे।' संघ में शक्ति तो हर काल में वांछनीय है। किसी काल विशेष में ही क्यों? शक्ति आती है संगठन से। शरीर में एक टिशू या सेल शक्ति कहाँ से ला पायेगा? अनेक सेल्स मिलते हैं, तब कहीं कोशिकाओं का संगठन बनता है और शक्ति आती है। संगठन में शक्ति है, यह त्रैकालिक सिद्धांत है, यह केवल कलियुग की ही बात नहीं है। संगठन और अनुशासन--दोनों की अनिवार्यता है। शिष्ट समाज वही होता है, जो अनुशासन और संगठन को मान कर चलता है।

अपने आवेशों पर नियंत्रण कैसे करें, इसका प्रारंभ से ही बच्चे को अभ्यास कराया जाना चाहिए। जो माता-पिता अपने बच्चों को इस तरह के संस्कार नहीं देते, वे उनके

जिन्होंने अपने बच्चे को अच्छे संस्कार नहीं दिए या आवेशों पर नियंत्रण करना नहीं सिखाया, वे माता-पिता उसके दुश्मन हैं। बच्चे को अच्छी शिक्षा दिला दी; किन्तु बच्चा शराब पीता है, अपराध में लिप्त है, झगड़ा-फसाद करता है तो वह शिक्षा किस काम की होगी? ऐसा आचरण वह इसलिए करता है कि उसे आवेशों पर नियंत्रण करना नहीं सिखाया गया। संस्कार/निर्माण का एक सूत्र है--बच्चे को एकाग्रता का अभ्यास कराया जाए।

शत्रु हैं। कहा गया--जो बच्चे को नहीं पढ़ाते हैं, वे माता-पिता उसके दुश्मन हैं। आज माता-पिता बच्चे को पढ़ा कर सोचते हैं--क्या मैंने इसे इसीलिए पढ़ाया था? बच्चे के आचरण और व्यवहार को देखकर आज अधिकांश अभिभावकों की यही प्रतिक्रिया होती है। आज इस सूक्त को बदल कर यह कहा जाना चाहिए--जिन्होंने अपने बच्चे को अच्छे संस्कार नहीं दिए या आवेशों पर नियंत्रण करना नहीं सिखाया, वे माता-पिता उसके दुश्मन हैं। बच्चे को अच्छी शिक्षा दिला दी किन्तु बच्चा शराब पीता है, अपराध में लिप्त है, झगड़ा-फसाद करता है तो वह शिक्षा किस काम की होगी? ऐसा आचरण वह इसलिए करता है कि उसे आवेशों पर नियंत्रण करना नहीं सिखाया गया। संस्कार निर्माण का एक सूत्र है--बच्चे को एकाग्रता का अभ्यास कराया जाए।

यदि बचपन से ही एकाग्रता का अभ्यास कराया जाए तो उसके बहुत अच्छे परिणाम सामने आएंगे। एकाग्रता के अभ्यास के साथ उसे संकल्प-शक्ति के विकास का भी अभ्यास कराया जाना चाहिए। अगर सात वर्ष की अवस्था से ये तीन बातें बच्चों को सिखा दी जाएं तो फिर किसी भी माता-पिता को आगे चलकर यह कहने की नौबत नहीं आएगी कि क्या हमने यही दिन देखने के लिए इतना पढ़ाया था? ऐसा होता है तो बच्चे में जो अच्छे संस्कारों के बीज निहित हैं, उनके अंकुरित होने, पल्लवित-पुष्पित होने और फलित होने का सहज ही अवसर मिल जाता है। यह ऐसी उर्वरा भूमि है, जिसमें अच्छे बीजों का उगना अनिवार्य है।

प्रश्न है--ये संस्कार कैसे दिए जाएं? इनके साधन क्या हो सकते हैं? इसका पहला अध्याय है--दीर्घ श्वास का प्रयोग। बच्चे को लम्बा श्वास लेना सिखाया जाए और धीरे-धीरे इतना अभ्यास करा दिया जाए कि वह एक मिनट में चार-पांच श्वास लेना सीख जाए। अगर पांच या दस मिनट भी बच्चे को इस तरह का अभ्यास कराया जाए तो तीन महीने में बच्चे के व्यवहार में पर्याप्त अन्तर देखा जा सकता है। उसे क्रोध आना कम हो जाएगा, मादक वस्तुओं से वह बहुत दूर रहेगा। मादक वस्तुओं का सेवन मानसिक थकान मिटाने के लिए होता है। नशे की यह खूबी है कि वह एक बार तो स्वर्ग जैसी सुख की अनुभूति करा देता है किन्तु दीर्घ श्वास का अभ्यास करने वाला, वर्तमान में जीने वाला इस तरह के झूठे सुख की खोज में नहीं जायेगा।

यह अनुभव सिद्ध तथ्य है कि श्वास लम्बा होता है तो आवेश विदा हो जाता है। आवेश को विदा करने का सबसे अच्छा उपाय है श्वास को लम्बा करना। आवेशों को निमंत्रित करने का सबसे सरल उपाय है--छोटा श्वास लेना। आवेश तब आता है, जब श्वास छोटा चलता है या जब आवेश आता है तब वह श्वास को छोटा बनाकर आता है। दीर्घ श्वास में आवेश आए, यह संभव ही नहीं है। ♦

गुरु नानक देव जयन्ती :

तीन प्रेरक प्रसंग

नानकदेव सात वर्ष के हुए तब उनके पिता उन्हें गोपाल पंडित के पास विद्याभ्यास के लिए ले गए। गोपाल पंडित ने नानकदेव को बड़े स्नेह से अपने पास बिठा कर उनसे पढ़ने के लिए कहा। नानकदेव ने अध्यापक से पूछा-- गुरु जी, आप मुझे क्या पढ़ायेंगे?

अध्यापक बोले -- मैं तुम्हें दुकानदारी का सारा हिसाब और गणित तथा दूसरी पुस्तकें पढ़ाऊंगा।

यह सुनते ही बालक नानकदेव ने उत्तर दिया-- किन्तु; मैं ऐसी पढ़ाई नहीं पढ़ूंगा। यह पढ़ाई तो इस नश्वर संसार में ही रह जाएगी। मैं तो ऐसी पढ़ाई पढ़ूंगा, जो अन्त समय में भी मेरे काम आए।

यह सुनकर गुरु जी आश्चर्यचकित होकर बालक नानक की तरफ देखते रह गए।

* * *

नानकदेव दौल खां लोदी के मोदीखाने का काम चला रहे थे; लेकिन वे बहुत से लोगो को बिना पैसा लिए ही सौदा तौल देते थे। उनका कहना था कि अगर किसी के पास पैसे नहीं हैं, तो क्या इसीलिए उसे जरूरत का सामान नहीं दिया जाए? गरीबों को नानकदेव की कृपा से मुफ्त में ही सामान मिलने लगा।

एक बार उनके साथ एक विचित्र घटना घटी। वह एक व्यक्ति को आटा तौल रहे थे। एक सेर, दो सेर, तीन सेर.. इस तरह बारह सेर तक तो गिनती ठीक आई, लेकिन तेरह आते ही आप ने 'तेरा' 'तेरा' कहना शुरू कर दिया। भला इस दुनिया में मेरा क्या है, सभी कुछ तेरा (ईश्वर का) है। यह कह कर उन्होंने सारा आटा उस व्यक्ति को दे डाला। इसका नतीजा यह हुआ कि उसी दिन उन्हें मोदीखाने से अलग कर दिया गया।

* * *

गुरु नानक का उपदेश देने का ढंग भी बड़ा निराला था। जब वे अरब में थे, तब एक बार मक्के की तरफ पैर कर सो गए। इस पर वहां के मौलाना-काजी लोग उन पर बिगड़े और बोले-- अल्लाह के घर की तरफ पैर कर मत सोओ।

गुरु नानक ने उत्तर दिया-- काजी जी, जिधर अल्लाह का घर न हो आप उधर ही मेरे पांव कर दो।

सब लोग चकित होकर उनकी ओर देखते रह गए। वे गुरु नानक के पांव किस तरफ करें, यह उनकी समझ में नहीं आया, क्योंकि मुल्ला और काजी जानते थे कि अल्लाह का निवास तो हर तरफ है।

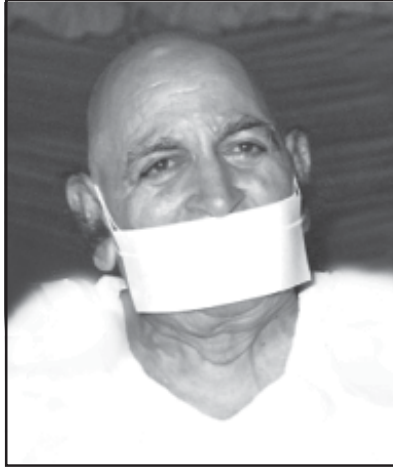
नारी अपनी शक्ति को पहचाने

● आचार्य तुलसी ●

समाज के दो घटक हैं--स्त्री और पुरुष। दोनों घटकों का स्वतंत्र अस्तित्व है पर दोनों की स्वतंत्र अस्मिता नहीं है। हमारे देश के पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष वर्ग की अपनी अस्मिता है, पहचान है, इसलिए उसका प्रभुत्व भी है। किन्तु स्त्री-जाति शताब्दियों-सहस्राब्दियों से उपेक्षित और प्रताड़ित होती रही है, इसलिए उसमें हीन भावना आ गई। हीन भावना जीवन के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। जो समाज हीनभावना से आक्रांत होता है, वह प्रगति नहीं कर सकता। हीन भावना छूटते ही प्रगति के द्वार खुल जाते हैं। यदि महिला समाज प्रगति का आकांक्षी है तो उसे सबसे पहले हीन भावना की गिरफ्त से मुक्त होना है। दुर्बलता या कमी का जहाँ तक प्रश्न है, वह किस वर्ग में नहीं होती? क्या पुरुष वर्ग में कोई कमी नहीं है? फिर महिलाएं स्वयं को हीन क्यों मानें?

महिला जाति की हीन भावना का एक कारण है उसका पुरुष पर निर्भर रहना। इस संदर्भ में विचारणीय पहलू यह है कि पुरुष को अगर महिला की अपेक्षा नहीं है तो महिला को पुरुष की अपेक्षा क्यों हो? एक महिला को पुरुष की जितनी जरूरत है, उतनी ही जरूरत पुरुष को महिला की होती है। क्योंकि वे एक-दूसरे के पूरक हैं। भारतीय परिवेश में पुरुष और महिला दोनों सापेक्ष रहकर ही अपने जीवन को पूर्णता दे सकते हैं। एक-दूसरे से कटकर वे अधूरा जीवन जीते हैं। ऐसी स्थिति में महिलाओं का पुरुष के हाथ की कठपुतली बने रहना किसी भी तरह वांछनीय नहीं है।

महिला पुरुष की सहचरी है, सहधर्मिणी है। उसे अपने घर में वे सभी अधिकार प्राप्त हैं, जो एक पुरुष को होते हैं। पर इस बात को सामाजिक स्वीकृति



की पत्नियां हैं। आर्थिक संपन्नता के कारण तीनों बहनें पूरे ठाट-बाट से रहती हैं। संयोग की बात, एक बहन को पति का वियोग हो गया। उसके बाद तो स्थितियां बदल गईं। दो बहनें उस परिवार में मालकिन की हैसियत से रहती हैं, क्योंकि वे सौभाग्यवती हैं। किन्तु तीसरी बहन के जीवन में एक दुःख क्या आया, दुःख का पहाड़ ही टूट पड़ा। उसे अपने ही घर में एक नौकरानी की तरह रहना पड़ता है। क्या कोई पुरुष अपनी पत्नी के वियोग में ऐसा जीवन जीता है? यदि नहीं, तो स्त्री ने कौन-सा अपराध किया है? जो उसे ऐसी

जीवनस्तर को उन्नत बनाने वाली तीन शक्तियां हैं--ज्ञानशक्ति, श्रद्धाशक्ति और चरित्रशक्ति। श्रद्धा की शक्ति महिलाओं को सहज प्राप्त है। ज्ञानशक्ति का विकास युग की देन है। चरित्रशक्ति को विकसित करने में 'अणुव्रत' पूरा सहयोगी बन सकता है। अणुव्रत की आचारसंहिता में एक चरित्रनिष्ठ समाज का पूरा चित्र है। अणुव्रत जीवन का सम्बल है और विकास का धरातल है। महिलाएं इस क्षेत्र में काम करें तो बड़ा काम हो सकता है।

नहीं मिलती है, तब वियोगिनी बहनों की दुर्गति होती है। आज विधवा-विवाह अथवा महिला के पुनर्विवाह को प्रोत्साहन मिल रहा है। क्यों? यदि वैधव्य भोगने वाली बहनों को भी समाज में सम्मान से जीने का अधिकार प्राप्त होता, उनकी खुशियों को नहीं छीना जाता, उन पर सामाजिक एवं नैतिक वर्जनाओं को बलात् नहीं थोपा जाता तो कोई भी भारतीय महिला पुनर्विवाह की बात नहीं सोचती। 'त्रिया-तेल-हमीर-हठ चट्टे न दूजी बार'-- यह कहावत व्यर्थ तो नहीं है। पर इसको व्यर्थता देने वाले सामाजिक परिवेश में परिवर्तन जरूर अपेक्षित है।

एक परिवार में तीन भाई हैं। तीनों

हृदय-विदारक वेदना भोगनी पड़े। समाज का दायित्व है कि ऐसी वियोगिनी योगिनियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण वातावरण का निर्माण करे और उन्हें सचेतन जीवन जीने का अवसर दे।

प्रश्न हो सकता है कि यह स्थिति महिला की ही क्यों होती है? पुरुष की क्यों नहीं? कारण स्पष्ट है। महिलाओं ने काटना तो बन्द किया ही, फुफकारना भी बन्द कर दिया। ऐसी स्थिति में उनका वर्चस्व कैसे स्थापित हो सकता है?

एक भयंकर काला नाग था। वह देखने में जितना हिंसक लगता था, उससे भी अधिक खतरनाक था। वह जहाँ रहता था, उस स्थान के आसपास जाने की

हिम्मत किसी में नहीं थी। एक बार उस नागराज का किसी संन्यासी से सम्पर्क हो गया। संन्यासी ने उसको अहिंसा का उपदेश दिया। संयोग की बात थी, संन्यासी के उपदेश से नागराज की मानसिकता बदल गई। उसने अहिंसा वृत्ति स्वीकार कर ली। उसके बाद उसने काटना छोड़ दिया, फुफकारना छोड़ दिया और अधिक घूमना-फिरना भी बन्द कर दिया।

एक दिन कुछ बच्चों ने देखा—नागराज निश्चेष्ट सोया पड़ा है। उन्होंने कुछ देले उठाकर फेंके, पर वह हिला तक नहीं। यह संवाद पूरे गांव में फैल गया। गांव से कुछ और लोग वहाँ आये। लकड़ी और देलों से नागराज की अच्छी मरम्मत होने लगी। कुछ दिनों बाद वही संन्यासी घूमता-फिरता वहाँ आ पहुँचा। नागराज संन्यासी को पहचानकर बोला—बाबाजी! आपकी अहिंसा ने मुझे मार दिया। इधर से आने वाले लोग इतना सताते हैं कि मेरा जीना दूभर हो गया। पहले ये लोग मेरे सामने भी नहीं आ सकते थे अब मेरी जिन्दगी के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। क्या मैं इन सबको सहन करता रहूँ?

संन्यासी ने एक क्षण मुस्कराकर पूछा—तुम किसी को काटते तो नहीं हो? नागराज के निषेधात्मक उत्तर पर संन्यासी ने फिर पूछा—क्या तुम फुफकारते भी नहीं हो? नागराज ने इस बार भी नकारात्मक उत्तर दिया। संन्यासी उसे संबोधित करते हुए बोला—देखो भाई! तुम संन्यासी नहीं हो, तुम्हारी अपनी सीमाएं हैं। तुमने अहिंसा का व्रत लिया है, पर इसका अर्थ यह तो नहीं है कि तुम अपने जीवन की सुरक्षा ही न करो। संन्यासी के परामर्श से नागराज ने फिर से फुफकारना शुरू कर दिया। एक ही दिन में लोग उससे भय खाने लगे। नागराज का प्रभाव स्थापित हो गया।

महिलाएं भी जब तक अपनी शक्ति का प्रदर्शन नहीं करेंगी, उसको काम में नहीं लेंगी, समाज उनका मूल्यांकन नहीं करेगा। भलमनसाहत बहुत अच्छी बात है, पर इसमें भी जब अति हो जाती है, तब वह दुर्बलता की प्रतीक बन जाती है। इस दृष्टि से

महिला समाज को शक्ति-जागरण और उसके उपयोग में सचेतन बनना जरूरी है।

गृहस्थ जीवन में तीन बातें घर की शोभा हैं—लक्ष्मी, शिक्षा और शासना। सौभाग्य से ये तीनों ही रूप नारी के हैं। लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा—इन तीनों देवियों को संसार पूजता है। परिवार और समाज में लक्ष्मी एवं सरस्वती का जितना महत्व है, दुर्गा का उसमें कम महत्व नहीं है। केवल लक्ष्मी और सरस्वती बनने से महिलाओं का काम नहीं चलेगा, उन्हें दुर्गा भी बनना पड़ेगा। दुर्गा बनने का मतलब हिंसा या आतंक फैलाने से नहीं, शक्ति को संजोकर रखने से है। हर युग, हर देश और हर जाति की महिला में ये तीन गुण स्वाभाविक हैं। लक्ष्मी उदारता की प्रतीक है, सरस्वती सृजनशीलता की प्रतीक है और दुर्गा शक्ति की प्रतीक है। बहनों ने अपने लक्ष्मी-सरस्वती रूप को सुरक्षित रखा है, पर दुर्गा रूप को विस्मृत कर दिया है। यह विस्मृति न नारी जाति के हित में है और न पुरुष समाज के हित में है। पूजा व्यक्ति की नहीं, शक्ति की होती है। शक्तिहीन की पूजा तो क्या, पहचान भी नहीं हो सकती। यदि महिलाओं को अपनी स्वतंत्र अस्मिता स्थापित करनी है तो उन्हें समुचित और सुनियोजित ढंग से अपनी शक्ति का समायोजन करना होगा।

कुछ महिलाएं अपने जीवन के सपाट धरातल पर तो निर्भीकता से जी लेती हैं, पर सामने समस्या को देखकर घबरा जाती हैं। समस्याएं न रहें, यह संभव नहीं है। मैं चाहता भी नहीं कि समस्याएं न आएँ। आवश्यक यह है कि समस्या उपस्थित होने पर घुटने नहीं टिकाकर उसका समाधान खोजा जाए। संसार में कोई भी समस्या ऐसी नहीं है, जिसका समाधान न हो। समाधान खोजने वाला व्यक्ति ही अपने कर्तृत्व को उजागर कर सकता है और समाज में अपना वर्चस्व स्थापित कर सकता है।

माउंटबेटन जब विद्यार्थी था, वह नौसैनिक की शिक्षा प्राप्त कर रहा था। एक दिन शिक्षक ने उससे पूछा—‘तुम नाव में बैठकर समुद्र में जाओगे, उस समय तूफान आ जाएगा तो क्या करोगे?’

माउंटबेटन तपाक से बोला—‘सर, मैं लंगर डाल दूंगा।’ ‘फिर तूफान आ गया तो?’ फिर लंगर डाल दूंगा।’ ‘मान लो एक तूफान और आ गया तो?’ ‘सर, जितनी बार तूफान आएगा, मैं लंगर डालता रहूंगा।’ अपने विद्यार्थी की इस निर्भीकता से प्रसन्न हो शिक्षक ने एक प्रश्न फिर पूछा—‘तुम्हारे पास इतने लंगर कहाँ से आएंगे?’ माउंटबेटन बिना एक क्षण रुके बोला—‘सर, जहाँ से इतने तूफान आएंगे।’ शिक्षक ने माउंटबेटन को नौ सेना के लिए उपयुक्त और योग्य विद्यार्थी घोषित किया।

महिला समाज को भी किसी समस्या से कायल होने की जरूरत नहीं है। पुरुषार्थ से समस्या स्वयं समाधान बन जाती है। इसके लिए अपेक्षा एक ही बात की है कि महिलाएं गुड़िया बनकर न बैठें। ये गहने और चटक-मटक वाले कपड़े जीवन को बोझिल बनाने वाले हैं। कुछ चिन्तनशील लोगों का अभिमत है कि स्त्रियों के लिए इतने आभूषणों का उपयोग पुरुष समाज का एक षडयंत्र हो सकता है। नारी को बंधन में रखने का सरल तरीका उसे यही लगा होगा। पुरुषों ने चाल चली और महिलाओं ने उसको अपना श्रृंगार मानकर स्वीकार कर लिया। लेकिन अब वह समय बीत गया है। भगवान महावीर ने तो ढाई हजार वर्ष पहले कह दिया था—‘सबसे आभरणा भारा।’ आभूषण कितना ही कीमती क्यों न हो, वह उपहार नहीं भार है। इस आगमवाणी को ध्यान में रखकर महिलाओं को सादगीपूर्ण जीवन जीने के लिए तैयार रहना चाहिए। वेशभूषा जितनी सीधी-सादी होगी, जीवनस्तर उतना ही उन्नत हो सकेगा।

जीवनस्तर को उन्नत बनाने वाली तीन शक्तियां हैं—ज्ञानशक्ति, श्रद्धाशक्ति और चरित्रशक्ति। श्रद्धा की शक्ति महिलाओं को सहज प्राप्त है। ज्ञानशक्ति का विकास युग की देन है। चरित्रशक्ति को विकसित करने में ‘अणुव्रत’ पूरा सहयोगी बन सकता है। अणुव्रत की आचारसंहिता में एक चरित्र-निष्ठ समाज का पूरा चित्र है। अणुव्रत जीवन का सम्बल है और विकास का धरातल है, महिलाएं इस क्षेत्र में काम करें तो बड़ा काम हो सकता है। ♦



शांतिदूत दलाई लामा को गाँधी शान्ति पुरस्कार

• डॉ. कृष्ण कुमार रत्न •

तिब्बत के धार्मिक नेता महामना दलाई लामा को शांतिदूत इसलिए कहा जाता है कि जब दुनिया में हर तरफ परमाणु विस्फोटों और आतंक की गतिविधियों का धुंआ छाया है, उस समय आध्यात्मिक संतों की श्रेणी में जो व्यक्तित्व सामने आता है, वह है आदरणीय दलाई लामा जिनके पिछले 50 वर्षों के अथक प्रयास शान्ति और अहिंसा के लिए समर्पित रहे हैं। ऐसे में उन्हें दक्षिणी अफ्रीका स्थित गाँधी डवलपमेंट ट्रस्ट द्वारा बिशप दशमंद टूटू की 80वीं वर्ष गाँठ पर विश्व में सुलह और शान्ति के लिए वार्षिक महात्मा गाँधी शांति व सद्भावना पुरस्कार से सम्मानित किया जाना अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण निर्णय है।

असल में जो लोग आज जिंदा किवदंती हो गये हैं उनमें अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेलसन मंडेला, महात्मा गाँधी तथा आचार्य महाप्रज्ञ के बाद जो नाम सदैव के लिए समस्त दुनिया के सामने है, वह है दलाई लामा का। अहिंसा की रोशनी और अपने सारे सरोकारों की बुनियाद शान्ति के प्रबल समर्थक दलाई लामा कहते हैं कि उन्हें शान्ति की तलाश में अपने पूरे समाज और विश्व को प्रेरित करना है। समूचे विश्व में उनकी इस धारणा को भरपूर बल मिला है।

उनके शब्दों में अहिंसा और शान्ति के अर्थों के गहरे संवाद सुनाई पड़ते हैं, जब वे कहते हैं - “अहिंसा वह नहीं जो मात्र कहने से हो अथवा बंट जाये, अहिंसा का रास्ता असल में वह है जिसके

द्वारा आप समाज के तमाम लोगों को बदलने की ताकत रखते हैं। मुझे नहीं पता कि मैं इसमें कहां तक कामयाब हुआ हूँ, पर यह जानता हूँ कि संसार में यदि शान्ति आती है तो इसका एक ही रास्ता है, और वह है-- हिंसा से परहेज और अहिंसा से सहयोग और विकास का रास्ता।”

उधर आचार्य महाप्रज्ञ भी सहयोग की भावना को इंगित करते हैं, जब वे कहते हैं-- अहिंसा ही वह मार्ग है जिस पर चलकर हम एक नया युग रच सकते हैं। सबसे पहले व्यक्ति विशेष पर अच्छा बनने का बल होना चाहिए। यदि व्यक्ति बनता है तो वह अपनी जिंदगी बदलने के साथ-साथ पूरा समाज व देश बदल सकता है। वे आचार्य महाप्रज्ञ ही थे, जिन्होंने अहिंसा यात्रा से उस समय देश को जोड़ने का प्रयास किया था जब हिंसा और आतंक के भय और साम्प्रदायिक ताकतों के ज्वार ने देश में बेहद तनावपूर्ण माहौल बना रखा था।

महामना दलाई लामा की विश्व को जो

वास्तविक देन है उसकी संजीदगी इस बात से ज्ञात होती है कि विश्व के 180 देशों में करोड़ों लोग उनके शान्ति प्रयासों का समर्थन करते हैं। पर, उनकी शान्ति की इस दुनिया में जलावतन सरकार के मुखिया के तौर पर (जिसे उन्होंने अब छोड़ दिया है) जाने जाने के बावजूद वे एक मात्र धार्मिक नेता हैं जिन्हें ऐसे लोगों ने भी सत्कार-सम्मान से नवाजा है जिनको शायद बौद्ध धर्म का कुछ भी ज्ञान नहीं है। वे मानते हैं कि दलाई लामा के शांति प्रयासों से एक नयी दुनिया बसाई जा सकती है, एक ऐसी दुनिया जिसमें सौहार्द और समरसता के अतिरिक्त शान्ति का एक ऐसा वातावरण बने जिससे विश्व में शान्ति का नया अध्याय लिखा जा सके।

शान्तिदूत दलाई लामा का यह कथन भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि इस विश्व में जो भी जिंदा अथवा जीवित रहेगा वह शांति प्रयासों से ही जिंदा रह सकेगा। अणु हथियारों से शांति कभी नहीं आ सकती।

इस अवसर पर, जब शान्ति के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित दलाई लामा को एक बार फिर शान्ति के लिए सम्मानित किया जा रहा है, हम उनका अभिनन्दन करते हैं, उनके इस आह्वान के साथ कि ‘एक नयी दुनिया हमारी है और आने वाला जीवन अहिंसामय हो सकता है यदि हम आने वाली पीढ़ी तक यह संदेश पहुंचा सकें।’

- 9/85, मालवीय नगर
जयपुर-302017

तिब्बत के आध्यात्मिक नेता परमपावन दलाई लामा को महात्मा गाँधी शांति पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। वे भारत में गाँधी पुरस्कार ग्रहण करेंगे। दलाई लामा को दक्षिण अफ्रीका स्थित गाँधी डवलपमेंट ट्रस्ट द्वारा सुलह और शांति के लिए प्रतिवर्ष दिए जाने वाले महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार के लिए इस साल चुना गया है। उन्हें यह पुरस्कार ग्रहण करने पिछले माह दक्षिण अफ्रीका जाना था, लेकिन वीजा न मिलने के कारण उन्हें अपनी यात्रा रद्द करनी पड़ी। गाँधी ट्रस्ट की ओर से सम्भवतः गाँधी जी की परपौत्री इला भारत आकर उन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित करेंगी।

अणुव्रत को अधिक व्यापक कैसे बनायें?

● प्रो. दयानन्द भार्गव ●

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत नाम से एक आचार-संहिता हमें दी। यद्यपि यह आचार-संहिता मुख्य रूप से जैन परम्परा के ढाँचे में ढली थी तथापि इसका उद्देश्य एक ऐसी सार्वभौम दृष्टि प्रदान करना था जो सम्प्रदायातीत हो और समाज में सर्वजन स्वीकार्य हो। इसका प्रचार भी इसी रूप में किया गया। आज यदि हम यह विचार करें कि इस आंदोलन को कैसे और भी अधिक व्यापक बनाया जाये तो सहज ही कुछ बिन्दु उभरकर आयेंगे—

1. जैन परम्परा में सभी व्रतों की भाषा निषेधपरक रहती है, यद्यपि उनका भाव सदा नकारात्मक नहीं होता। अणुव्रत के भी सभी व्रत प्रायः इसी पृष्ठभूमि में बने हैं। किन्तु; समाज की आवश्यकता केवल ऐसे व्रतों से पूरी नहीं होती। उदाहरण के लिए, अध्यापक और छात्रों के लिये जो अणुव्रत दिये गये हैं उनमें कुछ और संकल्प जोड़े जा सकते हैं; अध्यापक यह संकल्प ले सकता है कि वह अपने विषय से सम्बद्ध स्वाध्याय में प्रमाद नहीं करेगा ताकि वह अपने छात्रों को नवीनतम जानकारी दे सके। निषेध की भाषा में दिये गये व्रत व्यापक होते हैं। उदाहरणतः यदि कोई यह व्रत ले कि वह रिश्वत नहीं लेगा तो वह इस व्रत का पालन सदा कर सकता है। किन्तु यदि कोई यह व्रत ले कि वह स्वाध्याय करेगा तो इस व्रत का पालन सीमित समय में ही किया जा सकता है, क्योंकि कोई 24 घंटे तो स्वाध्याय नहीं कर सकता। अणुव्रत के अंतर्गत वर्तमान व्रत सब ऐसे हैं जो निषेधात्मक होने के कारण सदा पालन किये जा सकते हैं। किन्तु; तब भी सामाजिक दृष्टि से वे व्रत मनुष्य के संपूर्ण कर्तव्य का विधान नहीं करते। जैसा कि हमने ऊपर उदाहरण दिया कि वर्तमान की अणुव्रत संहिता में अध्यापक के लिये निरन्तर स्वाध्याय करने की प्रक्रिया का कोई संकेत नहीं है तथापि इस प्रक्रिया के बिना

कोई अध्यापक अपने दायित्व का पूर्ण रूप से निर्वाह करने का दावा नहीं कर सकता। यदि हम अणुव्रतों को समाज में और अधिक व्यापक बनाना चाहते हैं तो उनमें विधायक संकल्पों का भी समावेश करना होगा। यदि हम अन्य परम्पराओं की आचार-संहितायें देखें तो पायेंगे कि वहाँ विधायक संकल्पों का भी समावेश है।

2. वर्तमान में अणुव्रत का सूत्रधार तेरापंथ के आचार्य को ही माना जाता है; किन्तु समाज में अनेक पन्थों के अनुयायी रहते हैं। उन पन्थों के अपने-अपने आचार्य हैं, जिनके प्रति वे उसी श्रद्धा से समर्पित हैं जिस श्रद्धा से तेरापंथ के श्रावक तेरापंथ के आचार्य के प्रति समर्पित हैं। ऐसी दशा में अणुव्रत के व्यापक होने में एक मनोवैज्ञानिक बाधा तो है ही। इसलिए कोई सामाजिक आंदोलन तब तक बहुत व्यापक नहीं हो सकता जब तक उसके केन्द्र में किसी एक सम्प्रदाय का आचार्य मुख्य रहता है। सामाजिक आंदोलन को व्यापक होने के लिए सर्वथा सम्प्रदाय-निरपेक्ष होना पड़ेगा। इसका उपाय यह है कि अणुव्रत की विभिन्न घटकों के लिये बनायी गयी आचार-संहिताओं के केन्द्र में उन घटकों के संभालने का मुख्य दायित्व निभाने वाली संस्थायें रहें। उदाहरणतः चुनाव सम्बन्धी आचार-संहिता के केन्द्र में चुनाव आयोग को रखा जा सकता है। इसी प्रकार अध्यापकों सम्बन्धी आचार-संहिता के केन्द्र में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग रह सकता है। इस प्रकार अणुव्रत की मूल भावना अधिक व्यापक स्तर पर स्वीकार्य हो सकती है। यह विचारणीय बिन्दु है कि क्या यह उचित नहीं होगा कि अणुव्रत की भावना को अधिक व्यापक बनाने के लिये भिन्न-भिन्न आचार-संहिताओं का भार भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय-निरपेक्ष संस्थाओं को सौंप दिया जाये। वे ही संस्थायें समय-समय पर उस आचार-संहिता में परिवर्तन भी करती रहें और

प्रचार-प्रसार द्वारा यह भी सुनिश्चित करें कि उस आचार-संहिता का अधिक से अधिक पालन हो। वर्तमान आचार-संहिता उन संस्थाओं को इस प्रार्थना के साथ प्रेषित कर दी जाये कि वे अपने-अपने क्षेत्र में समुचित संशोधन और परिवर्तन के साथ इसे प्रचारित-प्रसारित करें। हमारे देश की पन्थ-निरपेक्ष नीति के यह अधिक अनुरूप होगा।

3. किसी आचार-संहिता की स्वीकार्यता के लिये केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है कि वह आचार-संहिता का प्रचार-प्रसार किसी सम्प्रदाय के द्वारा न होकर सम्प्रदाय-निरपेक्ष संस्था के द्वारा हो। इसके लिये तेरापंथ के आचार्य ऐसी संस्थाओं को यह प्रेरणा दे सकते हैं कि वे अपने-अपने कार्यक्षेत्र के लिए एक आचार-संहिता बनायें। इसके बाद उस आचार-संहिता का प्रचार-प्रसार उन-उन संस्थाओं द्वारा किया जाये तो ये आचार-संहिताएं अधिक व्यापक स्तर पर क्रियान्वित हो सकेंगी। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र जैसी वैश्विक संस्था को भी प्रेरणा दी जा सकती है। हमारी दृष्टि यह न हो कि यह आन्दोलन हमारा है, अर्थात् तेरापंथ का है और दूसरी संस्थायें उसमें सहायता कर रही हैं, बल्कि हमारा प्रयत्न यह हो कि यह आंदोलन उन-उन संस्थाओं का बन जाये और हम उनकी सहायता कर रहे हैं।

4. अणुव्रत आंदोलन एक नैतिक आंदोलन है। पुरानी भाषा में कहें तो इसके मूल में अशुद्धोपयोग से विरत होने का भाव है; किन्तु पूरे भारतीय-चिंतन में, और जैन-चिंतन में भी, अध्यात्म के बिना नैतिकता को अधूरा माना गया है। इस देश में पिछले 100 वर्षों में अनेक नैतिक आंदोलन हुए। अणुव्रत आंदोलन भी उनमें से एक है। किन्तु; अणुव्रत आंदोलन सहित इन सभी नैतिक आंदोलनों की पृष्ठभूमि में अध्यात्म का पर्याप्त पुट नहीं रहा। तेरापंथ परम्परा में

प्रेक्षाध्यान के द्वारा इस कमी को पूरा करने का प्रशंसनीय प्रयत्न हुआ। किन्तु; अभी तक हम अणुव्रत आंदोलन और प्रेक्षाध्यान का परस्पर अविनाभाव शायद स्थापित नहीं कर पाये हैं। अणुव्रत आंदोलन में सक्रिय रूप से जुड़े लोगों को मैंने प्रेक्षाध्यान से सक्रिय रूप से जुड़ते हुए कम ही देखा है। महर्षि पतंजलि के शब्दों में कहूँ तो अणुव्रत यदि बहिरंग योग है तो प्रेक्षाध्यान अंतरंग योग है। ये दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। आचार्य कुंदकुंद की भाषा में कहूँ तो अशुभ के छोड़ने पर हमसे कुछ छूटता तो है लेकिन मिलता तो शुद्धोपयोग से ही है।

5. अणुव्रत से केवल यही अपेक्षा नहीं की जाती कि व्यक्ति का कल्याण होगा, अपितु यह भी अपेक्षा की जाती है कि समाज सुधरेगा। समाज का सुधार एक सामूहिक कार्य है। व्रत व्यक्तिगत होते हैं। समाज केवल व्यक्तियों का समूह नहीं है, उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी है। इसलिये जो लोग समाज की चिंता करते हैं, उन्हें केवल व्यक्ति के सुधारने की चिंता न करके व्यवस्था के सुधारने की भी चिंता करनी पड़ेगी। उदाहरणतः जैन साधुसंघ में साधुओं के लिये केवल व्यक्तिगत नियम ही नहीं बने, संघीय व्यवस्था भी बनी है। अतः यदि अणुव्रत के द्वारा हम समाज और राष्ट्र का हित करना चाहते हैं तो अणुव्रत पर विचार करने वालों को विभिन्न व्यवस्थाओं पर भी विचार करना होगा। इस दिशा में आचार्य महाप्रज्ञ ने सापेक्ष अर्थशास्त्र की एक रूपरेखा हमें दी। इसमें रंग भरने की आवश्यकता है। इसी प्रकार राजनैतिक और सामाजिक व्यवस्था के सम्बन्ध में भी विचार किया जा सकता है। यह कार्य सरल नहीं है किन्तु सर्वतोमुखी सुख-शान्ति के लिये करणीय अवश्य है। जो सुझाव हमने ऊपर दिये हैं उसका व्यावहारिक रूप धूम्रपान के सम्बन्ध में देखा जा सकता है। दो या तीन दशक पूर्व रेल या बस में धूम्रपान करने वालों द्वारा उड़ाये गये धुएँ के कारण यात्रा करना कठिन था। इस सम्बन्ध में दो कदम उठाये गये। पहला काम तो यह किया गया कि सिगरेट के हर विज्ञापन तथा पैकेट पर यह चेतावनी लिखना अनिवार्य कर दिया गया कि धूम्रपान करना स्वास्थ्य

अणुव्रत से केवल यही अपेक्षा नहीं की जाती कि व्यक्ति का कल्याण होगा, अपितु यह भी अपेक्षा की जाती है कि समाज सुधरेगा। समाज का सुधार एक सामूहिक कार्य है। व्रत व्यक्तिगत होते हैं। समाज केवल व्यक्तियों का समूह नहीं है, उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी है। इसलिये जो लोग समाज की चिंता करते हैं, उन्हें केवल व्यक्ति के सुधारने की चिंता न करके व्यवस्था के सुधारने की भी चिंता करनी पड़ेगी।

के लिए हानिकारक है। दूसरा कार्य यह किया गया कि सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान का कानूनी तौर पर निषेध कर दिया गया। इन दो कदमों से जितनी राहत मिली और धूम्रपान कम हुआ वैसा व्यापक प्रभाव व्यक्तिगत स्तर पर एक-एक व्यक्ति के यह व्रत लेने से नहीं हो सकता था कि मैं धूम्रपान नहीं करूँगा।

धूम्रपान का एक उदाहरण है। जैसे सिगरेट के पैकेट पर यह लिखना अनिवार्य कर दिया गया कि धूम्रपान करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है वैसे हर नोट पर यह लिखा जा सकता है कि भ्रष्टाचार राष्ट्र को कमजोर बनाता है। भिन्न-भिन्न नौकरियों के लिए जो नियुक्ति पत्र दिये जाते हैं उन पर यह लिखना अनिवार्य किया जा सकता है कि आप अपने पद का दायित्व पूरी ईमानदारी, मेहनत और कुशलता से निभायेंगे। चुनाव के समय मत-पत्र पर यह लिखा जा सकता है कि चुनाव में किसी भी प्रकार के अनुचित साधन बरतने वाले व्यक्ति को वोट देना अपने ही पाँव पर कुल्हाड़ी मारना है। अभी कुछ समय में भारत के हर नागरिक को एक पहचान-पत्र मिल जाने वाला है। इस पहचान-पत्र पर यह लिखा जा सकता है कि आप कोई भी कार्य करने से

पहले यह देख लें कि आपके कार्य से समाज और राष्ट्र को कोई हानि तो नहीं होगी। यह सच है कि यह लिख दिये जाने पर भी बुराई पूरी तरह नहीं रुक जायेगी, किन्तु एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव तो मन पर पड़ेगा ही, जैसा कि सिगरेट के सम्बन्ध में हुआ है। व्रत लेने की स्थिति में भी यह संभावना तो रहती ही है कि व्रत भंग हो सकता है। व्यक्तिगत स्तर पर व्रत लेने का क्रम तो वर्तमान की तरह चलता ही रह सकता है; किन्तु उसके साथ-साथ हमारे द्वारा सुझाये गये कदम भी उठाये जा सकते हैं।

यह स्पष्ट है कि हमारे सुझावों का क्रियान्वयन तेरापंथ या किसी अन्य पंथ द्वारा सीधा नहीं किया जा सकता, किन्तु तेरापंथ सरकार पर इन सुझावों के क्रियान्वयन के लिये दबाव डाल सकता है। धूम्रपान के लिये भी सामाजिक दबाव से ही नियम बन पाया है। पिछले 50 वर्षों में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और पंडित जवाहरलाल नेहरू से लेकर आज तक के सभी राजपुरुषों का समर्थन अणुव्रत आंदोलन को मिला है। इसलिए अणुव्रत के कार्यकर्ता तेरापंथ संघ के आचार्य के नेतृत्व में राजनेताओं पर यह दबाव बना सकते हैं कि सरकार उपर्युक्त सुझावों का क्रियान्वयन करें। इसके साथ-साथ वर्तमान व्रत लेने की प्रणाली भी चालू रह सकती है, क्योंकि उसका हमारे सुझावों से कोई विरोध नहीं है।

इसके अतिरिक्त प्रेक्षाध्यान जैसे कार्यक्रम को तो अध्यात्म पुरुषों की देखरेख में ही चलाया जाना अधिक कारगर सिद्ध होगा। उसे सरकार के आदेश से नहीं चलाया जा सकता। किन्तु; प्रेक्षाध्यान के द्वारा जो व्यक्ति का रूपांतरण होगा, वह सामाजिक परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा। एक वाक्य में कहें तो व्यक्ति के रूपांतरण का कार्य धर्मपुरुष करें और सामूहिक व्यवस्था में राजपुरुष सकारात्मक परिवर्तन लायें तो ये दोनों एक-दूसरे के परिपूरक बन सकते हैं।

◆

जे-1/7, जीवन सुरक्षा फ्लेट्स
विद्यानगर, सेक्टर-2, जयपुर 302023

पर्दा-प्रथा उन्मूलन में आचार्य तुलसी का योगदान

• समणी डॉ. कुसुमप्रज्ञा •

रूढ़िग्रस्त समाज प्रगति की दौड़ में पीछे रह जाता है। यद्यपि प्राचीन काल में भी बहिनें पर्दा निकालती थीं, लेकिन मुगलकाल में शील की रक्षा के लिए यह अनिवार्य जैसा बन गया। पर्दा प्रथा का सबसे अधिक प्रभाव राजस्थान में रहा। युग बदलने पर भी यहां की बहिनों की मानसिकता पर्दा प्रथा को उठाने की नहीं रही। उन्होंने इसे शालीनता, कुलीनता और शिष्टता के साथ जोड़ दिया। गुरुदेव तुलसी के शब्दों में “बहिनों में मरोड़ घूंघट, लम्बा घूंघट, छोटा घूंघट आदि घूंघट के अनेक प्रकार प्रचलित थे। घूंघट के कारण बुजुर्गों के साथ सिर हिलाकर या टच-टच की प्रतीकात्मक भाषा में उनका संवाद होता था। घूंघट के कारण ठोकर लगने या खम्भे से टकराने की स्थिति भी पैदा हो जाती थी। किसी चीज को देखने के आकर्षण में बहिनें घूंघट में हाथ डालकर एक आंख को दो अंगुलियों के बीच में अवगुण्ठन से मुक्त कर लेती थीं।”

सन् १९५९ में कलकत्ता प्रवास के दौरान ओसवाल नवयुवक समिति कलकत्ता ने ‘समाज सुधार सप्ताह’ मनाने की घोषणा की। साप्ताहिक कार्यक्रम में एक दिन का कार्यक्रम पर्दा-प्रथा और दहेज-निवारण पर था। अनेक सामाजिक नेताओं ने पर्दा-प्रथा उन्मूलन करने का आह्वान किया लेकिन उनकी बात का महिलाओं पर प्रभाव नहीं पड़ा; क्योंकि बिना आंतरिक श्रद्धा के प्रभाव पड़ना कठिन होता है। कलकत्ता प्रवास में कुछ प्रमुख सुधारवादी नेताओं ने गुरुदेव के

पास आकर निवेदन किया—“आचार्यजी! अब आपको सामाजिक कुरूद्वियों के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए।” गुरुदेव ने कहा—“हमारा कार्यक्षेत्र अध्यात्म तक सीमित है इस क्षेत्र में आप लोग कार्य कर ही रहे हैं, हमारा मौन रहना ही ठीक है।” उन्होंने पुनः निवेदन किया—“समाज की जागृति हेतु महिलाओं का जागना जरूरी है। जब तक पर्दा रहेगा, महिलाएं शक्तिशाली नहीं बन पाएंगी। शक्ति के बिना जागरण का स्वप्न भी पूरा नहीं हो सकता। समाज पर आपका प्रभाव है। महिलाओं में आपके प्रति सहज श्रद्धा है। हमारा अनुभव कहता है कि धर्मगुरुओं के बिना यह काम होना कठिन है।”

उनके गंभीर चिन्तनयुक्त निवेदन ने गुरुदेव का ध्यान आकृष्ट किया। इससे पूर्व बम्बई प्रवास की एक घटना ने भी पूज्य गुरुदेव के मानस को झकझोर दिया था। उस घटना को आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में उद्धृत करना अधिक प्रासंगिक होगा।

“बम्बई की घटना है। मैं पास में बैठा हुआ था। पांच-दस साहित्यकार बात करने आए। दो मिनट बात हुई। बात-बात में उनका मूड बिगड़ गया। हमने पूछ लिया कि आप बातचीत क्यों नहीं कर रहे हैं? उन्होंने कहा—‘आज हमारा मूड बिगड़ गया है। हमने सुना था कि आचार्य तुलसी बड़े ही

क्रान्तिकारी संत हैं किन्तु आपके पास तो अज्ञान का, अंधकार का वातावरण है। बहिनों को पर्दे में देखकर आज तो हमारा मूड ऐसा बन गया है कि हम बात नहीं करेंगे।’ यह एक निमित्त बना पर्दा उन्मूलन आंदोलन का। गुरुदेव का व्यक्तित्व इतना क्रान्तिकारी था कि हर घटना से, हर परिस्थिति से वे सीख लेते थे और उसको कार्यरूप में परिणत कर देते थे।”

कलकत्ता प्रवास में पूज्य गुरुदेव ने इस कुरूद्वि के विरोध में बोलने का चिन्तन किया। इस विषय में उन्होंने मुनि नथमलजी (आचार्य महाप्रज्ञ) के साथ गहरा विमर्श करते हुए कहा—“अब हमें पर्दा आदि सामाजिक बुराइयों के विरोध में बोलना एवं लिखना चाहिए। मुनि ने निवेदन किया—“एक बार समाज में चर्चा और ऊहापोह का विषय बन जाएगा।” गुरुदेव ने आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया—“जब सामाजिक बुराइयों का प्रतिकार करना ही है तो चर्चा के भय से कब तक रुकेंगे? यदि हम सही रास्ते पर हैं



“तुम्हें मेरी शर्म आ रही है तो लो मैं आंखें बंद कर लेता हूँ, तुम पर्दा हटाकर भलीभांति सेवा करो।”

तो समाज की आलोचना से डरने की आवश्यकता नहीं है। पर्दा, अस्पृश्यता, बालविवाह, सतीप्रथा, दहेज आदि आज की ज्वलन्त समस्याएं हैं, उनके बारे में हमें अपना मंतव्य स्पष्ट करना होगा। यदि समय रहते हम समाज की चेतना को जागृत नहीं करेंगे तो समाज विकास की दौड़ में पिछड़ जाएगा।” पर्दे के बारे में स्पष्ट रूप में बोलते हुए आपने कहा—“पर्दा विकास में बाधक और कायरता का प्रतीक है, संकीर्णता का परिचायक है, अज्ञान का द्योतक है, असंयम का पोषक है। नारी-जीवन के लिए अभिशाप है। जब तक महिलाएं पर्दे की रूढ़ि से मुक्त नहीं होंगी, विकास के नए आयाम नहीं खोज सकेंगी। मैं पर्दा-प्रथा छोड़ने का परामर्श देता हूँ, साथ ही यह आगाह भी करता हूँ कि बहनें एक गड्ढे को छोड़कर दूसरे गड्ढे में गिरने की मूर्खता कभी न करें। पर्दा छोड़कर विलासिता या फैशन के प्रवाह में बहना भी ठीक नहीं।”

गुरुदेव के क्रान्तिकारी विचार प्रमुखपत्र ‘जैन भारती’ के मुख पृष्ठ पर प्रमुखता से प्रकाशित हुए। कुछ रूढ़िवादी लोगों ने इसका विरोध करते हुए कहा कि आचार्यश्री महिलाओं का मुंह देखना चाहते हैं। कुछ स्थितिपालक मानसिकता वाले लोगों के स्वर मुखर हुए कि आचार्यों को धर्म और अध्यात्म का उपदेश देना ही कल्पनीय है, घूँघट निकालना या नहीं निकालना, समाज से संबंधित है, उसमें आचार्यों का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।

गुरुदेव ने इस संदर्भ में प्रबुद्ध साधु-साध्वियों एवं श्रावक समाज की एक गोष्ठी आयोजित की। गोष्ठी में निम्न बिन्दु उभरकर सामने आए—

- धर्म का काम है अच्छाई को प्रश्रय देना और बुराई का प्रतिकार करना।

- बुराई व्यक्तिगत हो, पारिवारिक हो, सामाजिक हो या राजनीतिक, बुराई आखिर बुराई है।

- कोई भी प्रथा बुराई का रूप लेती है तो वह धर्म के क्षेत्र में आ जाती है।

- पर्दा भी एक सामाजिक बुराई है इसलिए हमारे कार्यक्रमों की सूची में इसे लिया जा सकता है।

कलकत्ता में पूज्य गुरुदेव के आह्वान का प्रभावी परिणाम सामने नहीं आया। कलकत्ता यात्रा के बाद द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर पूज्य गुरुदेव ने राजनगर में अणुव्रत आंदोलन के अन्तर्गत ‘नया मोड़’ अभियान चलाया। प्रारंभ में इस अभियान का पुराणपंथी साधु-साध्वियों ने विरोध भी किया लेकिन धीरे-धीरे उनकी समझ में आने लगा। साध्वीप्रमुखा लाडांजी ने इस प्रथा के उन्मूलन में भगीरथ प्रयत्न किया। सामूहिक प्रयत्न से हजारों महिलाओं ने इस प्रथा का बहिष्कार करना प्रारंभ कर दिया।

गुरुदेव दक्षिण-यात्रा के दौरान केरल पधारे। वहां साम्यवादी शासन था, अतः राजस्थान की पर्दे में लिपटी और गहनों में लदी बहनें कम्युनिस्ट लोगों के लिए अजूबा बन गईं। गुरुदेव ने तत्काल सह-यात्रियों की आवश्यक गोष्ठी बुलाकर उन्हें प्रतिबोध देते हुए कहा—“अब हमारा आगमन एक ऐसे प्रदेश में हुआ है, जिससे हम सर्वथा

जब सामाजिक बुराइयों का प्रतिकार करना ही है तो चर्चा के भय से कब तक रुकेंगे? यदि हम सही रास्ते पर हैं तो समाज की आलोचना से डरने की आवश्यकता नहीं है। पर्दा, अस्पृश्यता, बालविवाह, सतीप्रथा, दहेज आदि आज की ज्वलन्त समस्याएं हैं, उनके बारे में हमें अपना मंतव्य स्पष्ट करना होगा। यदि समय रहते हम समाज की चेतना को जागृत नहीं करेंगे तो समाज विकास की दौड़ में पिछड़ जाएगा।

अपरिचित हैं। यहां के लोगों का भी हमारे साथ कोई परिचय नहीं है। यहां शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार है। इसलिए पर्दा जैसी रूढ़ियों का कोई चिह्न नजर नहीं आता। इस परिवेश में हमारी बहनें घूँघट का परिवेश नहीं छोड़ेंगी तो यहां के नागरिकों के लिए एक मजाक बनकर रह जाएंगी। मुझे विश्वास है कि बहनें घूँघट की प्रतिबद्धता से मुक्त होकर उपासना का लाभ लेंगी। हमारी बहनें देश, काल और परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन को स्वीकार कर सकें तो यात्रा में रहें, अन्यथा वापसी के लिए मंगलपाठ सुन लें।”

गुरुदेव के इस प्रेरक प्रतिबोध का बहनों पर अकल्पित प्रभाव पड़ा। उस समय की स्थिति का चित्रण करते हुए ‘मेरा जीवन मेरा दर्शन’ ग्रंथ में आप कहते हैं—“मैंने सोचा भी नहीं था कि एक बार के निर्देश से बहनों की मानसिकता इस तरह बदल जाएगी। मेरा चिंतन था कि कम-से-कम दो-चार बार प्रेरणाएं देनी पड़ेंगी; किन्तु दूसरे दिन प्रातः बहनों ने दर्शन किये तो मैं चकित हो गया। उन्होंने घूँघट छोड़ने के साथ प्रायः आभूषण भी उतार दिए। सुहाग का प्रतीक माना जाने वाला सिर का ‘बोर’ तक उतारकर रख दिया। गुरु-दृष्टि की आराधना कैसी होती है, इस विषय में बहनों ने उदाहरण उपस्थित कर दिया।”

ओजस्वी वाणी से प्रभावित होकर जब महिलाओं ने पर्दा उठाना प्रारंभ किया उस समय परिवार एवं समाज की बुजुर्ग महिलाओं की रूढ़िग्रस्त मानसिकता के चित्र खींचने वाले कुछ प्रसंग तो अत्यन्त मार्मिक हैं। ये प्रसंग भावी पीढ़ी को आचार्य तुलसी के क्रान्तिकारी व्यक्तित्व एवं साहसी कर्तृत्व की साक्षी देते रहेंगे।

ताराचंदजी और केशरीचंदजी दोनों भाई बीकानेर के श्रद्धानिष्ठ, संघनिष्ठ, जागरूक और समर्पित श्रावक थे। केशरीचंदजी की बहू ने गुरुदेव के आह्वान पर पर्दा उठा दिया। इस बात को लेकर जेठानी के मन में तीव्र आक्रोश था। उनके परिवार की कोई बहू

पर्दा उठाए, यह उन्हें मान्य नहीं था। जब थामला में उस परिवार ने दर्शन किए तो ताराचंदजी की पत्नी ने गुरुदेव को निवेदन किया—“गुरुदेव! क्या करूं?” मेरा माथा सूना हो गया है। मैं सुबह से शाम तक कार्य करती हूँ किन्तु मेरा मन किसी कार्य में नहीं लगता। सारे कार्य यंत्र की भांति कर रही हूँ। मेरे मन में किंचित् भी शांति नहीं है। मेरे घर में कोई बहू खुले मुंह घूमे, इस बात को मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती। बेटियों की भांति यदि बहुएं भी मुंह खोलकर घर में घूमेंगी तो बहू-बेटी में अंतर ही क्या रहेगा?”

गुरुदेव ने उन्हें आधा घंटा समझाने का प्रयत्न किया। समझाने से उनके आवेश की तीव्रता कम हुई लेकिन रूढ़िवादी मानसिकता नहीं बदली। बहुत समझाने पर उन्होंने इतना स्वीकार किया कि “कलकत्ता, बम्बई आदि शहरों में कोई पर्दा उठाए, यह ठीक है, लेकिन पुश्तैनी घर बीकानेर में सब बहुएं पर्दे में रहें।”

— भारती भूषण खेमचंदजी सेठिया ने अपना पूरा जीवन संघ-सेवा में समर्पित कर दिया। उनकी पत्नी गुलाबदेवी भी ऋजुमना और श्रद्धानिष्ठ श्राविका है। उन्होंने जब पर्दा हटाया तो खेमचंदजी की मां बहुत नाराज हो गई। उन्होंने कहा—“बिना घूंघट मैं अपनी पुत्रवधू को घर में नहीं घुसने दूंगी। यदि वह मेरी बात नहीं मानेगी तो मैं कहीं अन्यत्र चली जाऊंगी। गुरुदेव ने उन्हें बहुत समझाने का प्रयत्न किया लेकिन आग्रह और आवेश के कारण उनकी स्थिति में कोई अंतर नहीं आया।

— २००५ में मुनि नगराजजी की प्रेरणा से सूरजमलजी एवं संपतमलजी गोठी की पत्नी ने पर्दा उठा दिया। उनके सास-श्वसुर व्याख्यान में गए हुए थे। जब वे दोनों बहुएं खुले मुंह व्याख्यान में आईं तो लोग आश्चर्यचकित होकर अजूबे की भांति उनको देखने के लिए एक दूसरे पर टूट पड़े। उत्कंठित होकर लोगों के देखने से तमाशे जैसी स्थिति हो गई। उनकी सास ने जब यह दृश्य देखा तो नाराज होकर व्याख्यान के बीच में उठकर

चली गई और घर जाकर बेहोश हो गई। बहुओं के घर आते ही कलह जैसी स्थिति हो गई। सास ने कहा—“मोट्यार के जीवतां ही सै गहनां खोल र निर्लज्ज बण र मूसल जियां खडूया होग्या। कुमाणस आयो भलो न गयो भलो।” बहुओं का घर में समय काटना कठिन हो गया। गांव की औरतें भी तरह-तरह की चर्चाएं करने लगीं। व्यंग्यबाण चलातीं—

“मोटर गाड़ी टेक्सी,
रॉड-सुहागन एकसी ॥”

फिर गोठीजी उनको गुरुदेव के पास छाप ले गए। गुरुदेव के समझाने पर घर के वातावरण में काफी अंतर आ गया।

— धर्मचंदजी चौपड़ा (गंगाशहर) की धर्मपत्नी सज्जनदेवी बचपन से ही क्रांतिकारी महिला थीं। जब वे घाघरा ओढ़ना छोड़कर प्रथम बार बिना पर्दे के साड़ी पहनकर साधियों के पास जाने लगीं तो सास ने कहा—“यदि घूंघट नहीं निकालोगी तो मुझे खाना खाने का त्याग है।” धर्मचंदजी उस समय परदेश गए हुए थे। उनकी मां ने पर्दे के विरोध में तीन दिन तक खाना नहीं खाया। तार देकर धर्मचंदजी को बुलाया गया। धर्मचंदजी के आने पर सज्जनदेवी ने साड़ी छोड़कर घाघरा ओढ़ना पहन लिया, लेकिन घूंघट नहीं निकाला। अनेक दिनों तक घर में विरोध एवं तनाव का वातावरण रहा लेकिन सज्जनदेवी अपनी बात पर दृढ़ रही।

पर्दा विकास में बाधक और कायरता का प्रतीक है, संकीर्णता का परिचायक है, अज्ञान का द्योतक है, असंयम का पोषक है। नारी-जीवन के लिए अभिशाप है। जब तक महिलाएं पर्दे की रूढ़ि से मुक्त नहीं होंगी, विकास के नए आयाम नहीं खोज सकेंगी। मैं पर्दा-प्रथा छोड़ने का परामर्श देता हूँ, साथ ही यह आगाह भी करता हूँ कि बहनें एक गड्डे को छोड़कर दूसरे गड्डे में गिरने की मूर्खता कभी न करें। पर्दा छोड़कर विलासिता या फैशन के प्रवाह में बहना भी ठीक नहीं।

जिज्ञासाएँ छात्रों की समाधान आचार्य महाश्रमण के

19 अगस्त, २०११ को तेरापंथ समवसरण में बड़ी संख्या में उपस्थित आलोक विद्यालय, केलवा के विद्यार्थियों को आचार्य महाश्रमण ने संबोधित किया। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने विभिन्न विषयों पर उन्मुक्त भाव से आचार्यप्रवर के समक्ष अपनी जिज्ञासाएँ रखीं और उनका समुचित समाधान प्राप्त किया। यहाँ प्रस्तुत हैं, प्रश्नोत्तरों के कुछ अंश।

- संपादक

■ परिवार

प्रश्न - परिवार को स्वर्गतुल्य कैसे बनाया जा सकता है ?

उत्तर - स्वर्गतुल्य परिवार के तीन आयाम हैं-संप (सौहार्द), संपत्ति और सुसंस्कार। प्रेम और सौहार्द के साथ-साथ अगर गरीबी न हो तो वह परिवार भौतिक दृष्टि से स्वर्गतुल्य बन जाता है। तीसरी बात - संस्कार। आदमी अगर ईमानदार है, नैतिक है, नशामुक्त है तो उसका परिवार स्वर्गतुल्य हो सकता है। इसी प्रकार व्यक्ति में अगर सद्गुण हैं, चरित्र है, जीवनमूल्य सुरक्षित हैं और जीवनोपयोगी साधन सुलभ हैं तो वह व्यक्ति स्वर्गिक सुख का अनुभव कर सकता है।

प्रश्न - परिवार के लोगों का दायित्व होता है कि वे अपने बच्चों को प्रगति का रास्ता दिखाएँ, लेकिन वे ही अगर इसमें बाधक बनने लगें तो क्या किया जाए ?

उत्तर - इसके लिए अभिभावकों के सामने विनम्रतापूर्वक अपनी बात रखें। अपने युक्तियुक्त तर्क उनके सामने रखें, उन्हें विश्वास में लें। आवेश के बिना एक बार, दो बार और कई बार उनके सामने अपने मन की बात रखेंगे तो उनके मन पर असर पड़ सकता है और वे आपकी बात को समझ और मान सकेंगे।

■ व्यक्ति

प्रश्न - आचार्यप्रवर! कोई आदमी चिंतामुक्त कैसे हो सकता है ?

उत्तर - चिंता की स्थिति में मन को

यह समझाएँ कि चिंता से आखिर होगा क्या ? अन्ततः उसका समाधान तो खोजना ही होगा। पूज्य गुरुदेव तुलसी का दिया हुआ सूत्र है- 'चिंता नहीं चिंतन करो।' सामने कोई समस्या या कठिनाई आ जाए तो उससे चिंतित नहीं होना चाहिए। शांत भाव से चिंतन करना चाहिए कि इस समस्या का समाधान कैसे हो सकता है ? मन को उस समय यह समझाना होगा कि चिंता से कोई लाभ नहीं। अगर ऐसा होता है तो कोई न कोई समाधान का मार्ग मिल सकता है।

प्रश्न - मन की एकाग्रता कैसे सध सकती है ?

उत्तर - इसके कुछ प्रयोग हैं, जिन्हें आपको सीखना होगा। जीवनविज्ञान और प्रेक्षाध्यान में दीर्घ श्वास, महाप्राण ध्वनि आदि कुछ प्रयोग हैं, जिनके अभ्यास के द्वारा मन की एकाग्रता को बढ़ाया जा सकता है। आप चाहें तो कार्यक्रम के बाद उस योग के बारे में आपको बताया जा सकता है।

प्रश्न - तनाव की स्थिति में हमारे द्वारा किया गया काम बहुधा सही होने की बजाय गलत क्यों हो जाता है ?

उत्तर - टेंशन या तनाव की स्थिति में सही निर्णय और सही कार्य की ज्यादा आशा नहीं की जा सकती। तनाव से बचने की बात इसीलिए तो कही जाती है। समस्या कोई भी हो, उसे लेकर तनावग्रस्त न बनें, उसका समाधान खोजें, मन को तनावमुक्त रखें।

प्रश्न - आचार्यप्रवर! अभी तो हम

छोटे हैं, इसलिए हमारे चिंतन और निर्णय में हमारे माता-पिता की भूमिका ज्यादा रहती है। लेकिन एक समय ऐसा आएगा, जब हमें अपने निर्णय स्वयं लेने पड़ेंगे, उसमें माता-पिता का और किसी का सहयोग नहीं मिलेगा। ऐसी स्थिति में हमें क्या करना होगा ?

उत्तर - तुम सब विद्यार्थी हो और अभी जीवन की प्रारंभिक अवस्था में हो। अध्ययनशील बने रहोगे तो धीरे-धीरे ज्ञान और चिंतन प्रौढ़ होता जाएगा और एक दिन वह इतना विकसित हो जाएगा कि अपना निर्णय तुम स्वयं लेने में सक्षम हो जाओगे। ठीक उसी तरह जैसे तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे निर्णय में आज सहयोग करते हैं। लेकिन यह क्षमता उन्होंने एकाएक नहीं प्राप्त कर ली। वे भी कभी तुम्हारी ही तरह दूसरों के सहयोग पर निर्भर थे। समय के साथ-साथ अनुभव बढ़ता गया और एक दिन वे अपने बारे में कोई निर्णय लेने में स्वयं समर्थ हो गए। अपने चिंतन, अनुभव और ज्ञान में वृद्धि करते रहो, कालान्तर में यह परावलंबिता की भावना अपने आप समाप्त हो जाएगी।

प्रश्न - मैं ब्राह्मण परिवार से हूँ और सोचा भी नहीं था कि कभी किसी जैनाचार्य का हमें इस तरह सान्निध्य मिलेगा। मन में अनायास ही एक श्रद्धा और आकर्षण पैदा हुआ है। इसका कारण क्या है ?

उत्तर - इसका एक कारण तो यह हो सकता है कि तुम्हें कुछ ऐसा परिवेश मिला होगा, जिससे साधु-साध्वियों के बारे में जानने का अवसर मिला। आदमी के पिछले जन्म का भी प्रभाव होता है। हो सकता है कि पिछले जन्म में तुम्हें साधुओं के सान्निध्य में रहने का अवसर मिला हो। अवचेतन में सुरक्षित वे संस्कार जागृत होकर एक आकर्षण का रूप ले रहे हैं। साधु-संतों के प्रति अनायास श्रद्धा और आस्था के यही कारण हो सकते हैं।

प्रश्न - चिड़चिड़ापन कैसे दूर कर सकते हैं ?

उत्तर - अभी कुछ देर पहले मैंने बताया था कि दीर्घ श्वास लेने का अभ्यास, ललाट

के मध्य भाग पर श्वेत चन्द्र का ध्यान और उसके साथ संकल्प करना कि मुझे अपने चिड़चिड़े स्वभाव को बदलना है। ये कुछ उपाय हैं, जिनसे मन की एकाग्रता सधती है और चिड़चिड़ापन दूर होता है।

प्रश्न - मेरे घर की अपनी कुछ कठिनाइयां हैं, जिनके कारण मैं चाहते हुए भी आगे बढ़ने में स्वयं को असमर्थ पाती हूँ। मैं आगे बढ़ूँ और कुछ कर सकूँ, यह किस तरह संभव हो सकता है?

उत्तर - इस पर विस्तार से बात कर अपनी उन कठिनाइयों को स्पष्ट करना होगा कि वे कठिनाइयां कौन-सी हैं जो मार्ग में बाधा बन रही हैं। उपाय की जहाँ तक बात है, प्रथम तो यह कि मनोबल मजबूत होना चाहिए। परेशानियों से डरना और घबराना नहीं चाहिए। दूसरी बात--कौन-सी परेशानी का क्या उपाय हो सकता है, दूसरे शब्दों में कहें तो कौन-सी बीमारी के लिए कौन-सी दवा काम करेगी, यह जानना जरूरी है। इसी प्रक्रिया से कोई उपाय निकलेगा।

प्रश्न - पापा मुझे जो बनाना चाहते हैं, और मैं जो बनना चाहता हूँ, इन दोनों में अन्तर है तो कौनसी बात पर मुझे आगे बढ़ना चाहिए?

उत्तर - बालक अपने अभिभावकों से संवाद स्थापित करें, अपने लक्ष्य को समझाएं, अपनी इच्छा से उन्हें अवगत कराएं, पर अनावेश और विनम्रतापूर्वक। बालक की जो रुचि होती है, वह मार्ग और मंजिल सम्यक हो।

प्रश्न - लेकिन हमें महसूस होता है कि अपने अभिभावकों को खोने के बाद हम कैसे रह पाएंगे?

उत्तर - दुनिया अपने ढंग से चलती है। तुम्हारे दादा के पिताजी और उनके दादाजी अभी विद्यमान हैं क्या? तुम जैसा सोच रहे हो, उसके अनुसार तो उनके जाने के बाद परिवार का क्रम थम जाना चाहिए था लेकिन वैसा नहीं हुआ। इसलिए यह मानने का कोई औचित्य नहीं है कि किसी के चले जाने से उसके परिवार के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लग जाएगा। किसी के न रहने से दुनिया नहीं चलेगी, ऐसी कोई बात नहीं है।

प्रश्न - स्वयं को कैसे पहचानें और मोक्ष का मार्ग क्या है?

उत्तर - प्राणी विभिन्न योनियों में भ्रमण करता है। इस भ्रमण को समाप्त करने का अर्थ है मोक्ष। जो सम्यक श्रद्धा, सम्यक ज्ञान और सम्यक आचार की साधना करता है, वह मोक्ष को पा सकता है। वर्तमान में इतनी सघन साधना संभव नहीं है। परन्तु साधना अनवरत चलती रहे तो शीघ्र मोक्ष प्राप्त हो सकेगा। जब मोक्ष प्राप्त होगा तो उससे पूर्व स्वयं की पहचान अपने आप हो जाएगी।

प्रश्न - जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिए?

उत्तर - विद्यार्थी जीवन का लक्ष्य बनाता है। कोई डॉक्टर बनने का, कोई इंजीनियर, वकील, राजनेता बनने का लक्ष्य रखता है। ये सब अच्छे हैं। किन्तु इन सबसे पहले हमारा लक्ष्य अद्यत्ता इंसान बनने का होना चाहिए। चेतना की पवित्रता का होना चाहिए।

■ **भ्रष्टाचार**

प्रश्न - अन्ना हजारे अभी भ्रष्टाचार की समाप्ति हेतु प्रभावी लोकपाल बिल लाने के लिए दिल्ली में अनशन कर रहे हैं। क्या उनका यह कदम ठीक है? हमें उनका समर्थन करना चाहिए?

उत्तर - हमारा यह मत है कि भ्रष्टाचार का विरोध होना चाहिए। इस पर हमारी पूर्ण सहमति है। भ्रष्टाचार के विरोध में हर तरफ से आवाज उठनी चाहिए। लेकिन

यदि यह संकल्प जाग जाए कि जीवन में कोई कठिनाई आए तो उसे झेलेंगे, सहन करेंगे, उसे पार करेंगे तो तुम कोई बड़ा काम करने में सक्षम हो सकोगे। कठिनाइयों से डरने या घबराने वाले से किसी बड़े काम की आशा नहीं की जा सकती। केवल साधु ही क्यों, गृहस्थों में भी यह संकल्प जागना चाहिए कि हम कोई बड़ा लक्ष्य बनाएंगे और उस दिशा में आगे बढ़ेंगे।

भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिए अपनाया जाने वाला तरीका क्या हो, उपाय क्या काम में लिए जाएं, यह चिंतनीय विषय है। जहाँ तक अन्नाजी के अनशन का प्रश्न है, न तो हम उसका विरोध करते हैं, न उस पर कोई कमेंट करना चाहते हैं। हम तो इतना ही कहना चाहेंगे कि भ्रष्टाचार होना नहीं चाहिए और होता है तो उचित तरीकों से उसका विरोध होना चाहिए।

प्रश्न - क्या अणुव्रत के द्वारा भ्रष्टाचार को मिटाया जा सकता है?

उत्तर - भ्रष्टाचार आज शिष्टाचार बन रहा है। अन्नाजी इसके लिए संघर्ष कर रहे हैं। अणुव्रत में प्रामाणिकता पर बल दिया गया है। इससे भ्रष्टाचार के प्रति जागरूकता आ सकती है। कष्ट आने पर भी प्रामाणिकता को न छोड़ें, यही भाव प्रत्येक व्यक्ति में भरा जाए तो भ्रष्टाचार पर काबू पाया जा सकता है।

प्रश्न - गुरुदेव! भ्रष्टाचार आज की मुख्य समस्या है। यह लगातार बढ़ता जा रहा है। हम भी समाज के ही सदस्य हैं। भ्रष्टाचार रूपी इस बुराई से हम स्वयं को कैसे बचाएँ?

उत्तर - पहली बात तो यह कि ईमानदारी के प्रति दृढ़ आस्था रखो। थोड़ा कष्ट भले ही सहन करना पड़े, हम ईमानदारी का रास्ता कभी नहीं छोड़ेंगे, यह भावना मन में हमेशा मजबूती से बनी रहे। इससे त्याग की भावना स्वतः मन में जागेगी, जो संकल्प पर दृढ़ रहने की ताकत देगी। जीवन में ऐसे क्षण आ सकते हैं, जब दूसरों के द्वारा प्रलोभन मिलता है। उस स्थिति में स्वयं को दृढ़ रखें और किसी के द्वारा ऐसी कोई चीज स्वीकार न करें, न किसी को दें, जो अनैतिकता की कोटि में आती हो। ऐसा संकल्प जाग जाए तो भ्रष्टाचार जैसी बुराई से बहुत बचाव हो सकता है।

प्रश्न - करप्शन सिर्फ अमीरों की वजह से है या हममें ही कोई कमी हो गई है?

उत्तर - करप्शन किसी वर्ग विशेष से संबंधित समस्या नहीं है। अमीर भी भ्रष्ट हो सकता है और गरीब भी हो सकता है। इसलिए करप्शन को किसी व्यक्ति या वर्ग विशेष के साथ जोड़कर न देखा जाए। अमीर

ही क्यों, गरीब भी किसी अनैतिक कार्य में लिप्त हो सकता है। जिसे जितना मौका मिलता है, वह उसका फायदा उठाता है। बस, इतनी सी बात है कि कोई छोटा चोर, कोई बड़ा चोर। अमीरों को कहीं ज्यादा अवसर मिलता हो, अन्य को कम मौका मिल पाता हो। करप्शन दोनों में मिल सकता है।

प्रश्न - करप्शन को रोका कैसे जा सकता है?

उत्तर - अणुव्रत का संकल्प जाग जाए कि मैं कोई अनैतिक और अप्रामाणिक काम नहीं करूंगा तो करप्शन पर ब्रेक लग सकता है। अभी अन्ना हजारे ने भ्रष्टाचार के खिलाफ एक आंदोलन शुरू किया है। ऐसे आंदोलनों और अभियानों से भी करप्शन निवारण पर विशेष ध्यान जाता है। दूसरों को इसके बारे में कुछ सोचने का मौका मिलता है और करप्शन में कुछ कमी आने का रास्ता बन सकता है।

■ भगवान

प्रश्न - विज्ञान किसी भगवान के अस्तित्व से इनकार करता है, आप बताएं कि भगवान होते हैं या नहीं?

उत्तर - भगवान होते हैं। लेकिन भगवान के संदर्भ में लोगों की जो अवधारणा है, उसे ठीक से समझ लेने की जरूरत है। जो आत्मा शुद्ध हो जाती है, वह भगवान में परिवर्तित हो जाती है। विज्ञान की जहां तक बात है, विज्ञान अभी भगवान तक पहुंचा ही नहीं। विज्ञान अभी भगवान से दूर है।

प्रश्न- भगवान को कैसे पा सकते हैं?

उत्तर - जैन दर्शन की मान्यता है कि आपकी आत्मा ही परमात्मा बन सकती है। राग-द्वेष आदि विकारों को छोड़ने की साधना कर स्वयं इस स्थिति तक पहुंचा जा सकता है। हम दूसरे भगवान को पाने की इच्छा क्यों करें? स्वयं भी तो भगवान बनने का प्रयास करें।

प्रश्न - आचार्यश्री! प्रायः सभी धर्म भगवान को मानते हैं और उसके अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, तो फिर हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि विभिन्न संप्रदायों में क्यों बटे हैं?

उत्तर - ईश्वर के अस्तित्व से इनकार नहीं, किन्तु ईश्वर के संबंध में अवधारणाएं

अलग-अलग हैं। हर आत्मा के भीतर परमात्मा का वास है। आप अगर अलग-अलग धर्मों के बारे में विस्तार से और गहराई से अध्ययन करें तो पाएंगे कि सभी धर्मों में अनेकानेक समानताएं हैं। अन्तर और विरोधाभास का जहां तक प्रश्न है, उसका कारण यह है कि प्रवर्तकों ने किसी भूमिका पर कोई बात कही और आने वाली पीढ़ियों ने उसका कुछ और अर्थ लगाया। समय के साथ उनके साथ अनुयायियों का आग्रह जुड़ता गया और असमानताएं बढ़ती गईं। ईगो बढ़ा और दूसरे धर्मों की कमी दिखाने के प्रयास होने लगे। आज धर्मों के संदर्भ में जो खींचतान और विरोध का वातावरण बना है, उसका यही मूल कारण है। अन्यथा धर्म तो विभाजन सिखाता ही नहीं। कुछ-कुछ मतभेद भी हो सकते हैं, जिनके कारण भी संप्रदायों में पार्थक्य हो सकता है।

प्रश्न - भगवान होते हैं, यह अभी आपने भी कहा। कहा जाता है कि वह अपने भक्तों की पुकार भी सुनता है। लेकिन मैं भगवान से अपने अस्वस्थ दादाजी को स्वस्थ कर देने की प्रार्थना वर्षों से कर रहा हूँ, इसके लिए कहां-कहां, किस तीर्थ में नहीं गया, लेकिन उनके स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हो रहा। कैसे कहूं कि भगवान सबकी सुनता है?

उत्तर - दुनिया का नियम है कि यहां आने वाले हर व्यक्ति को जाना पड़ता है। कोई भी इसका अपवाद नहीं हो सकता। राजा-रंक, ज्ञानी-ध्यानी, संत-महात्मा कोई भी नहीं। दूसरी बात- शरीर को व्याधियों का घर कहा गया है। इसे समय-समय पर छोटी-बड़ी बीमारियां आक्रान्त करती हैं। हमारा तो यह मानना है कि कोई भी भगवान ऐसा नहीं, तो कृत कर्मों के योग से मिले सुख-दुःख में कोई हस्तक्षेप कर सके। हमारे इस जन्म के ही नहीं, पिछले कई जन्मों के पुण्य-पाप उदय में आते हैं और उनके कारण आदमी कभी सुखी बनता है, कभी दुःखी। इसमें भगवान की कहीं कोई भूमिका नहीं है। हम अपने स्वास्थ्य के लिए यथासंभव पुरुषार्थ कर सकते हैं। बीमार हैं तो डॉक्टर को दिखा सकते हैं, लेकिन कोई भगवान हमें स्वस्थ कर देगा, यह आशा हमें नहीं करनी चाहिए।

■ साधना

प्रश्न - हमने सुना है साधना के लिए दीक्षित होना पड़ता है, क्या घर में रहकर साधना नहीं की जा सकती?

उत्तर - आपके कहने का आशय शायद यह है कि साधना घर में भी हो सकती है, उसके लिए किसी संघ या संप्रदाय में दीक्षित होने की क्या जरूरत? यह बात ठीक वैसे ही है कि पढ़ाई-लिखाई तो घर में भी हो सकती है, फिर इसके लिए स्कूल में एडमिशन लेने की क्या जरूरत? इस संदर्भ में आप जान लें कि स्कूल में अध्ययन का एक वातावरण मिलता है। वहां एक व्यवस्थित ज्ञान मिलता है। इतना ज्ञान घर में मिलना कुछ कठिन है। स्कूल में सामूहिक रूप से विद्याध्ययन का एक वातावरण मिलता है, परस्पर जानकारियां मिलती हैं, प्रेरणा मिलती है, सहपाठियों का सहयोग भी मिलता है। घर का वातावरण कुछ भिन्न होता है। ऐसे में वहां साधना कितनी हो पाएगी? साधना के लिए संन्यास का जीवन कहीं ज्यादा अनुकूल पड़ता है।

प्रश्न - क्या आपको साधु जीवन में किसी रिक्तता की अनुभूति नहीं होती?

उत्तर - पारिवारिक जनों का मोह छोड़कर साधना का मार्ग हमने स्वेच्छा से चुना है तो किसी की कमी का अनुभव क्यों हो? और कमी महसूस भी हो तो उसे सहन करना चाहिए। साधना में सहनशीलता पहली शर्त है। जैसे हम साधु हैं, हम न तो रात्रि में आहार करते हैं, न पानी पीते हैं। गर्मी के मौसम में रात्रि के समय प्यास लगे तो उसे हम सहन करते हैं। यह सहिष्णुता हमारी साधना का ही एक अंग है। यदि सहनशीलता की भावना जाग जाती है तो हमें कठिनाई की स्थिति में भी दुःख की अनुभूति नहीं होती। तुम लोग अभी बच्चे हो, किन्तु तुम्हारे भीतर भी यह संकल्प जाग जाए कि जीवन में कोई कठिनाई आए तो उसे झेलेंगे, तो तुम कोई बड़ा काम करने में सक्षम हो सकोगे। कठिनाइयों से डरने या घबराने वाले से किसी बड़े काम की आशा नहीं की जा सकती। केवल साधु ही क्यों, गृहस्थों में भी यह संकल्प जागना चाहिए कि हम कोई बड़ा लक्ष्य बनाएंगे और उस दिशा में आगे बढ़ेंगे।

स्वामी विवेकानंद के नारी-विषयक विचार

• डॉ. मंजुला सक्सेना •

प्रत्येक युग एवं स्थान में समय-समय पर ऐसे युगपुरुष जन्म लेते हैं, जो अपनी गहन, सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि एवं युग की आवश्यकतानुसार विचार-दृष्टि के कारण तत्कालीन युग में ही नहीं, वरन् अपनी दूरदर्शिता के कारण युगों-युगों तक समसामयिक एवं प्रासंगिक बने रहते हैं। चाहे नारी-सन्दर्भ में देखें या अन्य विषयों में, स्वामी विवेकानन्द की विचार-दृष्टि आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी उस युग में थी।

स्वामी विवेकानन्द ने नारी जाति, विशेषतः भारतीय नारी की महिमा प्रतिष्ठित की है। उनके अनुसार 'ईश्वर की प्रथम अभिव्यक्ति वह हाथ है जो पालना झुलाता है।'

नारी का परमोत्कर्ष मातृत्व में है और मां परमात्मा का स्वरूप है। श्वेताश्वतर उपनिषद में कहा गया है--

‘स्त्री त्वं पुमान्,
त्वं कु मार उत वा कु मारी।’

दाम्पत्य जीवन में पत्नी की गरिमा का उल्लेख करते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा--‘विवाह-संस्कार बड़ा सुन्दर होता है, एक दूसरे का हृदय स्पर्श करता है और वे ईश्वर तथा उपस्थित लोगों के सामने प्रतिज्ञा करते हैं कि वे एक-दूसरे के प्रति सच्चे रहेंगे। जब कोई व्यक्ति किसी सार्वजनिक पूजा में भाग लेता है, तब उसकी पत्नी उसके साथ रहती है। अपनी उपासना में हिन्दू पांच संस्कारों का अनुष्ठान करता है--ईश्वर, पितरों, दीनों, मूक पशुओं तथा ज्ञान की उपासना। जब तक किसी हिन्दू के घर में कुछ भी है, अतिथि को किसी

बात की कमी नहीं होती। जब वह संतुष्ट हो जाता है, तब बच्चे और तब पिता, फिर मां भोजन ग्रहण करते हैं।’

■ नारी का गौरव-मातृत्व

यूनिटेरियन चर्च में किए गए भाषण में उन्होंने कहा-‘धार्मिकग्रन्थों में उनको बहुत आदर की दृष्टि से देखा गया है, जहां स्त्रियां ऋषि-मनीषी हुआ करती थीं। उस समय उनकी आध्यात्मिकता सराहनीय थी। पूर्व की स्त्रियों को पश्चिमी मापदंड से जांचना उचित नहीं है। पश्चिम में स्त्री पत्नी है, बाद में वह मां है। हिन्दू मां-भाव की पूजा करते हैं और संन्यासियों को भी अपनी मां के सामने अपने मस्तक से पृथ्वी का स्पर्श करना पड़ता है। पातिव्रत्य का यहां बहुत सम्मान है। (डिट्राएट फ्री प्रेस, 25 मार्च, 1894)

■ नारी का चरम रूप - पूर्ण मां

‘भारतीय नारी--प्राचीन, मध्य कालीन और वर्तमान’ विषय पर बोलते हुए स्वामीजी ने कहा था-- ‘भारत में नारी ईश्वर की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है और उसका सम्पूर्ण जीवन इस विचार से ओतप्रोत है कि वह मां है और पूर्ण मां बनने के लिए उसे पतिव्रता रहना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि भारत में किसी भी मां ने अपने बच्चे का परित्याग नहीं किया। विवेकानन्दजी ने किसी को भी इसके विपरीत सिद्ध करने की चुनौती दी। भारतीय लड़कियों को यदि अमरीकन लड़कियों की भांति अपने आधे शरीर को युवकों की कुदृष्टि के लिए खुला रखने के लिए बाध्य किया जाए, तो वे मरना कबूल करेंगी। भारत को उसी देश के

कौन जानता माँ की लीला

• स्वामी विवेकानंद •

कौन जानता मां की लीला!
शायद तुम्हीं वह द्रष्टा हो,
जो जानता है
कि कौन उन गहराइयों का
स्पर्श कर सकता है,
जहां मां ने अपने शब्दहीन
अमोघबाण छिपा रखे हैं !
संभवतः शिशु ने उन छायाओं
की झलक पाई है,
इन दृश्यों के पीछे,
विस्मय और कौतूहल भरी आंखों से
वे कम्पित आकृतियां, जो
अनिवार्य प्रबल घटनाओं की कारण हैं!
मां के अतिरिक्त और कौन जानता है
कि वे कैसे, कहां से और कब आती हैं।
ज्ञानदीप्त उस ऋषि ने संभवतः
जो कुछ कहा,
कहीं उससे समधिक देखा था!
कब, किस आत्मा के सिंहासन पर
मां विराजेगी,
कौन जानता है!
किन नियमों में मुक्ति बंधी है,
कौन पुण्य करते उसकी
इच्छा संचालन!
वह किस धुन में कौन-सी
बड़ी से बड़ी व्याख्या कर दे, कौन जाने,
उसकी इच्छा मात्र ही वह विधान है,
जिसका कोई विरोध संभव नहीं।
पता नहीं,
पुत्र को कौन से वैभव प्राप्त हो जाएं
पिता ने जिसका स्वप्न भी न देखा हो
मां अपनी पुत्री में
हजार गुनी शक्तियां भर सकती है,
उसकी इच्छा !!

मापदंड से मापा जाए, इस देश के मापदंड से नहीं।
(डिट्राएट इवनिंग न्यूज, 25 मार्च 1894)

■ राष्ट्र का उद्धार नारियों पर निर्भर

स्वामी विवेकानन्द ने स्त्रियों को सदैव पूज्य, वरेण्य, जाति की उत्थापिका माना— 'स्त्रियों की पूजा करके ही सब जातियां बड़ी हुई हैं। जिस देश में, जिस जाति में स्त्रियों की पूजा नहीं होती, वह देश, वह जाति कभी बड़ी नहीं हुई और न हो सकेगी। तुम्हारी जाति का जो अधःपतन हुआ है, उसका प्रधान कारण है, इन्हीं सब शक्ति-मूर्तियों की अवहेलना।...संयुक्त राज्य ने हमारे हृदय में भविष्य में महान संभावनाओं की आशा उत्पन्न की है। किन्तु हमारा भाग्य सारे संसार के भाग्य के सदृश आज कानून बनाने वालों पर निर्भर नहीं करता वरन् स्त्रियों पर निर्भर करता है।'

इस तरह भारतीय नारी का आदर्श, उसकी वर्तमान स्थिति और उसका भविष्य रेखांकित करने के उपरान्त स्वामी जी भारतीय और पाश्चात्य नारियों की तुलना करते हुए भारतीय परिवार में मां की महत्ता प्रदर्शित करते हैं— 'पाश्चात्य देशों में स्त्री को पत्नी की दृष्टि से देखा जाता है। वहां स्त्री में पत्नीत्व की कल्पना की जाती है, इसके विपरीत प्रत्येक भारतीय नारी में मातृत्व की कल्पना करता है। पाश्चात्य देशों में गृह की स्वामिनी और शासिका पत्नी है, भारतीय गृहों में घर की स्वामिनी और शासिका माता है। पाश्चात्य गृह में यदि माता भी हो तो उसे पत्नी के अधीन रहना पड़ता है क्योंकि गृहस्वामिनी पत्नी है। हमारे घरों में माता ही सब कुछ है, पत्नी को उसकी आज्ञा का पालन करना ही चाहिए।'

इसके साथ ही उन्होंने देशवासियों को उनके कर्तव्य की याद दिलाते हुए उनका उद्बोधन किया— 'भारत! तुम मत भूलना कि तुम्हारी स्त्रियों का आदर्श सीता, सावित्री, दमयन्ती हैं, मत भूलना कि तुम्हारे उपास्य सर्वत्यागी उमानाथ शंकर हैं, मत भूलना कि तुम्हारा विवाह, तुम्हारा धन और तुम्हारा जीवन इन्द्रिय सुख, व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं है, मत भूलना कि तुम जन्म से ही 'माता' के लिए बलि-स्वरूप रखे गए हो और यह मत भूलना कि तुम्हारा समाज उस विराट महामाया की छाया मात्र है।'

स्वामी विवेकानन्द के ये अमूल्य विचार जितने उपयोगी तब थे, आज कहीं उससे अधिक हैं। मातृभूमि एवं नारी जाति के प्रति कर्तव्य भाव, सम्मान भाव रखने एवं नारी जाति के स्वयं जागरूक होने से ही हमारे देश का भविष्य उज्वल हो सकता है। हमें अपने प्राचीन आदर्शों की ओर उन्मुख होना चाहिए।

58, विनोबा विहार,
मालवीय नगर, जयपुर-17

झांकी हिन्दुस्तान की

आधी आबादी का सच

अमेरिका की मशहूर पत्रिका न्यूजवीक के सर्वे से भारत में महिलाओं की दयनीय स्थिति एक बार फिर सामने आई है। न्याय, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा आर्थिक एवं राजनीतिक अधिकारों की कसौटी पर इस पत्रिका द्वारा तैयार 9६५ देशों की सूची में भारत 9४9वें नम्बर पर आया। उसे कुल 9०० में से सिर्फ ४9. 9६ अंक प्राप्त हुए। अभी कुछ ही दिन पहले गैरसरकारी संगठन कम्युनिटी बिजनेस की एशिया की उभरती अर्थव्यवस्था वाले छह देशों की कामकाजी महिलाओं पर तैयार एक रिपोर्ट में भारत का नम्बर चीन, मलेशिया, हाँगकांग, सिंगापुर और जापान के बाद आया था। विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट 'लैंगिक समानता और विकास' के मुताबिक दुनिया में जन्म से पहले ही लड़कियों को मार देने की सबसे ज्यादा घटनाएं चीन के बाद भारत में ही होती हैं।

कम्युनिटी बिजनेस की एशिया रिपोर्ट में कहा गया कि भारत में पुरुषों की परिवार में वर्चस्वकारी एवं कमाऊ भूमिका बनी हुई है, वहीं महिलाओं का काम घर संभालना माना जाता है। छोटी उम्र में लड़कियों की शादी का सामूहिक दबाव उनके स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं कैरियर के विकास में बड़ी बाधा है। न्यूजवीक ने अपनी रिपोर्ट में ध्यान दिलाया है कि भारत आर्थिक रूप से बड़ी ताकत बनने की राह पर है, लेकिन देश की अधिकतर महिलाएं इस बदलाव से अछूती हैं। स्पष्टतः भारत की प्रगति अधूरी है।

पुडुचेरी के शिक्षामंत्री ने दसवीं की परीक्षा में खुद की जगह दूसरे को बिठाया?

तमिलनाडु सरकार पुडुचेरी सरकार के शिक्षामंत्री पी.एम. एल. कल्याणसुन्दरम् (34) के विरुद्ध यह जांच कर रही है कि उन्होंने कक्षा 10 की पूरक परीक्षा में अपने स्थान पर दूसरे व्यक्ति को बिठाया था।

कल्याणसुन्दरम् स्कूल की पढ़ाई छोड़कर पहली बार विधायक बने और उन्हें शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी एवं ट्रान्सपोर्ट विभागों का मंत्री बनाया गया। मंत्री महोदय ने लगभग बीस वर्ष पहले मेट्रिक की बोर्ड परीक्षा दी थी; किन्तु वे दो विषयों में फेल हो गये थे। उन दोनों विषयों की परीक्षा पास कर वे सैकण्डरी पास का सर्टिफिकेट लेना चाहते थे। चूंकि पुडुचेरी में स्कूल बोर्ड नहीं है अतः जयापुरम-डिण्डीवनम् परीक्षा सेंटर लिया था। आरोप है कि उन्होंने परीक्षा में अपने स्थान पर दूसरे व्यक्ति से परीक्षा दिलवा दी।

आज के बुद्धिवादी एवं वैज्ञानिक युग ने तकनीकी विकास को नए-नए आयाम दिए हैं, लेकिन अति उपभोक्तावाद ने हमारे सामने कई संकट भी खड़े कर दिए हैं। भूमंडलीकरण ने अनेक चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। सबसे बड़ा संकट है--मानवीय मूल्यों का संकट। उपभोक्तावादी अपसंस्कृति के प्रभाव से जीवन-व्यवहार में व्यावसायिकता हावी है, बाजार का वर्चस्व है। इसका दुष्प्रभाव व्यक्ति, समाज, राजनीति, शिक्षा आदि सभी पर दिखायी दे रहा है। परिवार भी इससे अछूते नहीं हैं। इस स्थिति में **यह सोचना अत्यन्त आवश्यक है कि हमारी पारिवारिक-वाटिका के वे सुरभित सुमन आज निर्मम होकर क्यों टूट रहे हैं, जिनकी सुकोमल पंखुड़ियों पर आत्मीय संवेदना की लालिमा थी, सौहार्द का पराग था, कर्तव्य की पावनता थी, शान्ति की स्निग्धता थी, प्रेम की सुगन्ध थी और सात्विकता की निर्मल उज्ज्वल कांति थी?**

वैसे तो पारिवारिक विघटन के कई कारण हैं, किन्तु आर्थिक चुनौती और मानवीय मूल्यों का पतन इनमें मुख्य हैं। धन का वर्चस्व तो इतना बढ़ गया है कि मानवता का भाव गुम होता जा रहा है। इससे हमारा पारिवारिक ढांचा भी चरमरा रहा है। माता-पिता-पुत्र-पुत्री, भाई-भाई, पति-पत्नी आदि सभी रिश्ते बदल-से रहे हैं। इस बदले हुए परिवेश में क्या हम परिवारों के विघटन को रोक सकते हैं अथवा उनके बीच कोई सामंजस्य का सूत्र बनाए रख सकते हैं, या फिर परम्परागत स्वरूप से अलग कोई नया सौमनस्य-सौहार्द का ताना-बाना बुनने का प्रयत्न कर सकते हैं? मेरे विचार से आज हमें नए सिरे से पारिवारिक सौमनस्य की एक व्यावहारिक राह तलाशनी होगी। वर्तमान परिवेश में परम्परागत संयुक्त-परिवार व्यवस्था का निर्वाह बहुत कठिन हो गया है। आर्थिक उदारीकरण व बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कारण युवा वर्ग अच्छे पैकेज वाले 'जॉब' पाने की महत्वाकांक्षा लेकर ऊंचे-ऊंचे संस्थानों में शिक्षा के लिए और बाद में अच्छे सरकारी या निजी संस्थानों में नौकरियां प्राप्त कर परिवार से दूर बड़े शहरों या विदेशों में रहने के लिए विवश हैं। वे गांवों से नगरों और महानगरों में

कैसे बना रहे परिवार में सामंजस्य?

• डॉ. उषा गोयल •

आ रहे हैं। गांव और शहर दोनों में परिवार टूट रहे हैं। स्पष्ट है यह विघटन विस्थापन की विवशता के कारण है। अब परिवार में बच जाते हैं--केवल वृद्ध माता-पिता, जिन्होंने पहले बहुत उत्साह और आशा के साथ जमाधन खर्च करके, अच्छे करियर के लिए, अपने बच्चों को पढ़ने के लिए बाहर भेजा था और अच्छे पैकेज वाली नौकरियां मिलने पर अपनी संतानों की तारीफ दूसरों के सामने करते नहीं अघाते थे, वे ही अब उम्र के इस पड़ाव पर आकर कसमसा रहे हैं। अकेलेपन की पीड़ा से बोझिल उनके मन में कहीं न कहीं चुभन-कसक होती है और शायद पछतावा भी कि उन्होंने इतनी महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा देकर क्यों बच्चों को अपने से अलग किया? बच्चों के 'करियर' व पारिवारिक भावनाओं के द्वन्द्व में वे कसमसा कर रह जाते हैं। वे अपनी संतानों से मिलने के इंतजार में पलकें बिछाए रहते हैं, बेसब्री से दिन गिनते रहते हैं। दीवाली जैसे त्यौहारों पर भी उनके नहीं आने पर वे बुझे मन से त्यौहार मनाते हैं। ऐसी व्यथाएं आज कई घरों में फैली हुई हैं। उन माता-पिता की उदासी और पीड़ा तो और भी गहरी है, जिनकी संतानें विदेशों में जाकर बस गईं।

अक्सर यह कह दिया जाता है कि सन्तानें यदि माता-पिता के पास नहीं आ सकतीं तो वे ही क्यों नहीं उनके पास चले जाते हैं? वस्तुतः इसमें भी अनेक व्यावहारिक रुकावटें आती हैं। जैसे-- महानगरों में अक्सर बेटे-बहू के पास रहने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं होता; वे शादी के बाद 'हम दो हमारे दो' की भावना से मनमाने ढंग से रहने के अभ्यस्त हो जाते हैं, ऐसे में माता-पिता के आने से वे अपनी स्वतंत्रता में व्यवधान महसूस करने लगते हैं। कई माता-पिता स्वयं भी अपना बसा-बसाया घर छोड़कर जाने के

लिए आसानी से तैयार नहीं होते। इतने सालों से अपने शहर में आस-पड़ोस, रिश्तेदारों-मित्रों और जान-पहचान के लोगों के बीच रहने की उनकी आदत एकाएक कैसे छूट सकती है? स्थान का मोह कैसे छूट सकता है? इनके साथ ही एक मानसिक दुविधा भी है। जिस प्रकार बच्चे स्वतंत्र रहकर जीना चाहते हैं, वैसे ही माता-पिता भी किसी के आधीन न रहकर स्वाभिमान से अपनी मनोनुकूल अभ्यस्त जीवन-चर्या बनाए रखना चाहते हैं।

आजकल कई परिवारों में यह स्थिति आ गई है कि एक ही शहर में रहते हुए भी माता-पिता और उनकी संतानें अलग-अलग घरों में रहती हैं। अपने-अपने अहंकार, स्वार्थ व महत्वाकांक्षा की पूर्ति के निमित्त वे अलग-अलग रहना पसंद करते हैं।

प्रश्न उठता है, आखिर कैसे हो परिवार में सामंजस्य? यद्यपि आज की जटिल स्थितियों में यह बहुत आसान नहीं है, लेकिन इस दिशा में कुछ प्रयास तो किए ही जा सकते हैं। कुछ सुझाव इस प्रकार हो सकते हैं--

1. एकल परिवार में छोटे बच्चे के उचित पालन-पोषण की समस्या रहती है, विशेष रूप से जब पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं। माता-पिता के साथ रहने से छोटे बालकों को समुचित संरक्षण प्राप्त होगा और उन्हें भी वृद्धावस्था में अकेलापन महसूस नहीं होगा, अपितु शारीरिक व मानसिक सुरक्षा प्राप्त हो सकेगी। इनमें आने वाली व्यावहारिक दिक्कतों को आपसी समझबूझ से हल किया जा सकता है।

2. महिलाओं के घर के बाहर जाकर काम करने से घर की व्यवस्थाओं में कुछ बदलाव भी जरूरी है। वे घर-बाहर के दोहरे दायित्व से बोझिल न हों, इसके लिए परिवार

के अन्य सदस्यों, विशेष रूप से पति का सक्रिय सहयोग मिलने से काफी सुविधा हो जाती है। घर के सदस्य परस्पर मैत्री-भाव से मिलजुलकर काम करें तो सामंजस्य बना रह सकता है।

3. परिवार में इस प्रकार का वातावरण बनायें कि माता-पिता को बेटे-बहू का घर भी उनका अपना ही घर लगे। “मेरे माता-पिता मेरे पास मेरे घर में रहते हैं” यह कहने की अपेक्षा वे यह कहें कि “मेरे माता-पिता अपने घर में आए हैं, मैं उनके पास रह रहा हूँ”—तो माता-पिता को बहुत अच्छा लगेगा। माता-पिता भी बेटे-बहू का घर नहीं कहकर हमारा घर कहें तो पारिवारिक भावना मजबूत होगी।

4. बुजुर्ग माता-पिता अपनी क्षमता व योग्यतानुसार अधिकारपूर्वक घर-बाहर के कुछ कामों में व्यस्त रहें। छोटे बालकों के पालन-पोषण में मदद करें। बालसुलभ किलकारियों से प्रफुल्लित रहें तो उनका स्वयं का उत्साह बना रहेगा और वे अपने-आपको बोझ नहीं अपितु उपयोगी मानेंगे, इससे उनका शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। इसी के साथ वे कुछ समय पार्क में टहलने जाएं, आपस में मेलजोल बढ़ायें, नए मित्र बनायें, सामाजिकता का विकास करें, मंदिर, आध्यात्मिक-केन्द्र, डे-केयर-सेन्टर, मनोरंजन केन्द्र, सेवा-संस्थान-क्लबों में भी जाएं। गरीब बच्चों को पढ़ाने आदि सेवा-कार्यों में व्यस्त रहें ताकि उन्हें अपना शहर, अपना घर छोड़ने की पीड़ा-कसक नहीं सताए।

5. बुजुर्ग बार-बार यह नहीं दोहरायें कि हमारा समय तो बहुत अच्छा था, आज तो बहुत खराब समय आ गया, युवा पीढ़ी बिगड़ रही है, आदि। यह समय भी आपका है और युवापीढ़ी भी आपकी है, उनसे आत्मीयता का रिश्ता जोड़ें। युवाओं और बच्चों की अच्छी बातों की खुले मन से तारीफ करना कभी नहीं भूलें। इससे उनका उत्साहवर्धन होता है और आपके प्रति उनके मन में आदर-भाव बढ़ता है। यदि उनकी किसी गलती को बताना जरूरी हो तो सहज आत्मीयता के साथ स्नेहपूर्वक समझायें। बुजुर्ग यह सोचें कि हमने अपने तरीके से काफी जिन्दगी बितायी अब थोड़ा-सा बच्चों के अनुसार भी जीकर देखें। अपनी रुचियां कायम रखते हुए बच्चों की इच्छाओं को भी स्वीकार

करने का मन बनायें। शरीर से वृद्ध होते हुए भी मन से सदा युवा बने रहें, बच्चों में बच्चे और युवाओं में युवा।

6. परिवार के युवा सदस्य बुजुर्गों की मान्यताओं और मूल्यों को सम्मान देते हुए विनम्रता का व्यवहार करें तो वे उनका दिल सहज ही जीत सकते हैं। धैर्यपूर्वक उनकी बातें सुनें, अगर पसन्द नहीं हो तो भी। उनके अनुभवों से लाभान्वित होने का प्रयास करें। उनकी भावनाओं, इच्छाओं और जरूरतों का ध्यान रखें। उन्हें समय-समय पर अपने साथ घुमाने-फिराने अवश्य ले जाएं। इससे उन्हें बहुत खुशी मिलती है।

7. जहां तक सम्भव हो रात्रि-भोजन व अवकाश के दिन ‘लंच’ सब साथ मिलकर करें। कुछ देर हंसी-मजाक करने और दिल खोलकर बातें करने से परिवार में आनन्द का वातावरण बना रहता है। परिवार के सदस्यों में मतभेद भले ही हों लेकिन मनभेद नहीं हों। किसी बात का विरोध या असहमति जरूरी हो तो शिष्टतापूर्वक कहें, आवेश की स्थिति में चुप रहना ही श्रेयस्कर होता है। ‘मौन ही सच्चा सम्भाषण है,’ इस सूत्र को ध्यान में रखकर परस्पर भावनाओं की कद्र करने का प्रयास करें। पारिवारिक सामंजस्य के लिए सभी सदस्यों के लिए एक स्वेच्छिक आचार-संहिता का पालन जरूरी है, जिसमें मन-वचन व कर्म में शिष्टता व उदारता, सहिष्णुता व आत्मीयता का समावेश हो। यह उपदेश की अपेक्षा आचरण-व्यवहार के द्वारा अपने आप संस्कार रूप में हो। अपनी-अपनी रुचियों को कायम रखते हुए भी दूसरे की जीवन-शैली में बाधक न बनें। अपने-अपने दुराग्रह छोड़ें। कुछ अपने अनुसार जीयें, कुछ दूसरों के अनुसार। तभी भिन्न-भिन्न रुचियों वाले सदस्यों के बीच भी सामंजस्य कायम हो सकता है।

कई बार ऐसी स्थितियां आती हैं, जब संयुक्त परिवार में साथ-साथ रहना बहुत मुश्किल हो जाता है। स्वार्थ, अहंकार, द्वेष, महत्वाकांक्षाओं के टकराव से शान्ति से जीना दूभर हो जाता है। इस प्रकार की स्थितियों से हार नहीं मानें, अपितु भरसक प्रयत्न करें कि स्थितियां सुधरें, सामंजस्य बढ़े। यदि सारे प्रयत्न निष्फल हो जाएं तो अलग रहकर शांति से जीयें, किन्तु सद्भाव बनाये रखने

का प्रयत्न करते रहें। आखिर मूल उद्देश्य तो पारिवारिक सौमनस्य व सौहार्द बनाए रखने का होना चाहिए। अलग-अलग रहते हुए भी यदि परिवार के सभी सदस्य परस्पर सुख-दुख में सहयोगी बन सकें तो यह श्रेयस्कर है। इसी पारिवारिक भावना को महत्व देते हुए कई पारिवारिक इकाईयाँ स्वेच्छा व परस्पर सहमति से अलग-अलग रहती हैं। बदलते परिवेश में परिवार के स्वरूप व संरचना में आवश्यक बदलाव अपेक्षित है।

आजकल ‘हम दो हमारे दो’ वाले एकल परिवारों में भी अनेक समस्याएं दिखाई दे रही हैं। पति-पत्नी के बीच मन-मुटाव व बच्चों के साथ कलह। पद, यश, धन का वर्चस्व, अहंकार, दुराग्रह व अति महत्वाकांक्षाओं का टकराव पति-पत्नी के मधुर रिश्ते में दरा उत्पन्न कर रहा है। बच्चों व माता-पिता की सोच, मान-मूल्य, व्यवहार, आचरण व जीवन शैली में बहुत भारी अंतर आ रहा है। इसमें टी.वी., इन्टरनेट आदि संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित जीवन-शैलियों के तथाकथित आधुनिक रूप, विरूप व विकृतियां, अच्छी-बुरी प्रवृत्तियां अपना प्रभाव डाल रही हैं। ऐसे परिवेश में माता-पिता अपनी महत्वाकांक्षाओं को अनावश्यक रूप से बच्चों पर लादने से बचें और बच्चों के मन व तौर-तरीकों को आत्मीयता से समझें और धैर्यपूर्वक समझायें। उन्हें संस्कारवान बनने के लिए प्रेरित करते रहें। बच्चे भी माता-पिता के साथ शिष्टता व सम्मानपूर्ण व्यवहार करें।

आज के बदलते परिवेश में हमारी जीवन-शैली, मान-मूल्य व पारिवारिक स्वरूप चाहे कितने ही बदल रहे हों, लेकिन यदि मानवीय संवेदना बनी रहे तो जीवन प्राणवान-ऊर्जावान बना रहता है। मानवता को बनाए रखने की धुरी है परिवार। परिवार में जन्म लेकर मनुष्य मानवीय संवेदना का पहला पाठ पढ़ता है और संस्कारों का विकास करता है। अतः यह बहुत जरूरी है कि हम अपने परिवार को विघटन से बचायें, पारिवारिक स्नेह-सौहार्द-सामंजस्य बनाये रखें, ताकि हम एक सुदृढ़ समाज व राष्ट्र के विकास में भागीदार बन सकें।

ई-170, सेकण्ड फ्लोर
लाजपत नगर-प्रथम, नई दिल्ली-28

किशोर-मन की उलझनों के ओर-छोर

● शैलेन्द्र जैन ●

बच्चों का किशोर अवस्था में आना कई बार माता-पिता के लिए अनेक मुश्किलें खड़ी कर देता है। इस उम्र के किशोर अपनी रचनात्मकता के शीर्ष पर होते हैं, पर यदि चूक हो जाए तो स्थिति विध्वंसक होने में भी देर नहीं लगती। ऐसी स्थिति में माता-पिता को अपने टीनएज बच्चे की मनोदशा को गहराई से समझना चाहिए और यदि आवश्यक समझें तो किसी योग्य मनोचिकित्सक से परामर्श भी कर लेना चाहिए।

यहाँ एक-दो ऐसे ही केसेज दिये जा रहे हैं जिससे हमें ज्ञात होगा कि मामला क्या था और कैसे सुलझा?

केस-9

आठवीं में पढ़ने वाली नमिता के माता-पिता अपनी बेटी की मार्क्सशीट लेकर मनोचिकित्सक के पास पहुँचे। उन्होंने डॉक्टर को बताया कि पिछले वर्ष नमिता के ८५ प्रतिशत नम्बर आए थे और इस वर्ष मात्र ६० प्रतिशत रह गये हैं। वह जिद्दी भी बहुत हो गयी है। डांटो तो उलटकर जवाब देती है। पढ़ाई नहीं करती। सारे समय आइने के सामने खड़ी रहती है। ज्यादा कहो तो खुद को नुकसान पहुँचाने की धमकी देती है। उसकी संगत भी अच्छी नहीं है।

डॉक्टर ने पूरी बात सुनकर नमिता के माता-पिता से पूछा कि डांटने के आलावा उन्होंने और कौन-कौन से उपाय नमिता को समझाने के किये? माता-पिता ने बताया—“हम लोगों ने उसको कई तरह के प्रलोभन भी दिये। जैसे—अगर वह हमारी बात मानेगी तो उसे नया मोबाइल खरीद देंगे, उसकी पॉकेटमनी

बढ़ा देंगे आदि। लेकिन सब बेकार गया। नमिता हमारी एक भी नहीं सुनती।

डॉक्टर ने पूरी गम्भीरता के साथ उनसे दो-तीन दिन रुकने व चुप रहने के लिए कहा। इस पर दोनों माता-पिता आवेश में आ गये और बोले—“यह तो नामुमकिन है। इतने कम मार्क्स लायी है, फिर भी हम चुप रहें?”

किशोरों और माता-पिता के विचारों में अंतर तो पहले भी था लेकिन पहले की अपेक्षा आज बहुत अधिक अंतर है। पहले चूँकि इंटरनेट, सैटेलाइट चैनल्स, मोबाइल फोन नहीं थे अतः आज व्यवहार और विचारों में उन सब सुविधाओं के होने से अधिक अंतर होना भी लाजिमी है। जब हम अपने बाहर इतना बदलाव देख रहे हैं, तो हमें अंदर से भी उतना ही बदलना होगा। समय के साथ चलते हुए किशोर बच्चों के मन को पढ़कर ही व्यवहार करना होगा।

हम तो नमिता के प्रिंसिपल से मिलने वाले हैं कि वो ही उनको समझाएँ या कोई सजा दें।”

डॉक्टर ने जब उनसे नमिता के प्रति उनकी भावनाओं की बात शुरू की तो मां रो पड़ी - “पहले वह मेरी सारी बात मानती थी। मुझे सब कुछ बताती थी। पर, अब तो लगता है, नमिता कहीं खो गई है। वह बिल्कुल बदल गयी है।” तब डॉक्टर ने उसको समझाया— “आपकी नमिता अब भी उतनी ही अच्छी है। आपकी पहली वाली नमिता ही है। बस, हमको उसकी भावनाओं को महसूस करते हुए उसके मन की आवाज सुननी पड़ेगी।”

डॉक्टर ने इसके बाद नमिता से मिलकर

चर्चा करने की इच्छा जताई तो वह इस शर्त पर तैयार हुयी कि वहाँ उसके माता-पिता नहीं होंगे। नमिता ने डॉक्टर को बताया—‘मेरे माता-पिता मुझ पर विश्वास नहीं करते। मुझे लड़के-लड़कियों से बात नहीं करने देते। मैं आठवीं में आ गयी हूँ पर मुझे वे छोटी बच्ची ही समझते हैं कि मुझे कोई बहका लेगा। मैं अपनी दोस्तों के साथ समय बिताना चाहती हूँ किन्तु मम्मी हमेशा शक करती हैं। मेरा फोन चैक करती हैं। हमेशा पूछती है कि किस से और क्या बात कर रही थी। मुझे इन सबसे बड़ी खीज होती है। मेरा पढ़ने में भी मन नहीं लगता। मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता है, मैं मर जाना चाहती हूँ। आप मुझे नहीं, उनको समझाइये।’

हम देखते हैं, अधिकांश परिवारों में अभियोगी, गवाह और जज की भूमिकाएं अभिनीत की जाती हैं। बालक अभियोगी, उनके कार्यों की मां गवाह और पिता जज की भूमिका निभाते हैं। पिता के घर आते ही मां बालकों की शिकायतें और कारनामे सामने रख देती हैं और जज आपना फैसला सुना देते हैं। जबकि आवश्यकता इस बात की है कि किशोर बालकों को कटघरे में खड़ा करने की अपेक्षा उनके साथ मित्रतापूर्ण ढंग से, प्यार से खुलकर पूरी बात की जाए। उन्हें भी अपनी बात कहने का पूरा अवसर दिया जाए। इसके अलावा माता-पिता

को—‘तुम कुछ नहीं करोगे’, ‘फेल हो जाओगे’, ‘यही हाल रहा तो जिन्दगी में कुछ नहीं कर पाओगे’ जैसे व्यंग्य वाणों से परहेज करना चाहिए।

आज संयुक्त परिवार तो रहे नहीं, इसलिये माता-पिता पर अतिरिक्त जिम्मेदारी आ गयी है। और, बच्चे भी अपने मन की बात किसी अनुभवी व्यक्ति से नहीं कर पाते हैं। पहले मौसी, चाची, बुआ आदि से किशोर मन की बात कर लेते थे। मां भी अपनी बहिनों, जिटानी आदि से बच्चों की समस्याओं पर चर्चा कर अमूल्य सुझाव ले पाती थी। पर, अब जब कोई विकल्प ही नहीं है तो

माता-पिता, दोनों को एक दूसरे की बात खुद ही समझने की कोशिश करनी पड़ेगी।

केस-२

मनोचिकित्सक को एक दिन एक स्कूल के प्रिंसिपल ने बुलाया था। उस स्कूल के ७वीं और ८वीं कक्षा में पढ़ने वाले एक लड़के और एक लड़की को स्कूल यूनिफॉर्म में एक मल्टीप्लेक्स में फिल्म देखते पकड़ा गया था। मल्टीप्लेक्स के मैनेजर ने प्रिंसिपल को इस बात की सूचना दी थी। स्कूल के प्रिंसिपल ने दूरदर्शिता दिखाई और उनके माता-पिता को खबर करने की बजाय मनोचिकित्सक को बुलवा लिया। चिकित्सक ने देखा कि दोनों बच्चे प्रिंसिपल के सामने आंखें नीची किए बैठे थे। डॉक्टर ने उनके कंधे पर हाथ रखा, उनसे 'रिलेक्स' कहा तो प्रिंसिपल बिगड़ पड़ी, "डॉक्टर, इन्हें बढ़ावा मत दीजिए। इन्हें कड़ी सजा मिलनी चाहिए। मां-बाप तो इन्हें पढ़ाने के लिए भेजते हैं और ये गुल खिलाते हैं यहाँ आकर!"

डॉक्टर ने जब उन बच्चों से अकेले में बात की तो पता चला कि पढ़ाई में वे दोनों बहुत अच्छे थे। उन्होंने पहली बार ही क्लास बंक की थी। दोनों बच्चे सहमे हुए थे और यही कहे जा रहे थे, 'प्लीज, हमारे पैरेंट्स को मत बताइएगा। आगे से हम यह गलती नहीं करेंगे।' डॉक्टर ने उनसे कहा कि अगर उनकी जगह उनके भाई-बहन होते तो कैसा लगता? डॉक्टर ने उन बच्चों को खुद ही अपने व्यवहार का विश्लेषण करने को कहा कि क्या उन्होंने सही किया? साथ ही उन्हें क्या सजा मिलनी चाहिए, यह भी बताने को कहा। बच्चे आश्चर्यचकित रह गए। उन्हें लग रहा था कि उन्हें स्कूल से निकाल दिया जाएगा। उस दिन बच्चों के माता-पिता को कुछ नहीं बताया गया। एक सप्ताह बाद फिर काउंसलर के बताने पर माता-पिता पहले तो बहुत नाराज हुए पर समझाने पर वे शांत हो गए। काउंसलर ने उनसे यह आश्वासन मांगा कि घर पर वे बच्चों को कोई सजा नहीं देंगे या उन पर कोई व्यंग्य नहीं करेंगे। अफसोस की बात यह है कि ऐसी जादू की झप्पी देने का चलन भारतीय परिवारों में कम देखने को मिलता है।

अंत में यही कि, किशोरों और माता-पिता के विचारों में अंतर तो पहले भी था लेकिन पहले की अपेक्षा आज बहुत अधिक अंतर है। पहले चूंकि इंटरनेट, सैटेलाइट चैनल्स, मोबाईल फोन नहीं थे अतः आज उन सब सुविधाओं के होने से व्यवहार और विचारों में अधिक अंतर होना भी लाजिमी है। जब हम अपने बाहर इतना बदलाव देख रहे हैं, तो हमें अंदर से भी उतना ही बदलना होगा। समय के साथ चलते हुए किशोर बच्चों के मन को पढ़कर ही व्यवहार करना होगा।

ई-169, रमेश मार्ग, सी स्कीम जयपुर-1



राष्ट्र-चिन्तन

लोकपाल बिल जल्दी पास करें देश के विशिष्ट नागरिकों की नेताओं से अपील

मुम्बई : देश की अतिविशिष्ट 14 दिग्गज हस्तियों की ओर से देश के प्रमुख नेताओं के नाम एक खुला पत्र जारी करते हुए मार्मिक अपील की गई है कि जन सामान्य भ्रष्टाचार की आग में झुलस रहा है, अतः सब दृष्टियों से उपयुक्त और मजबूत लोकपाल बिल जल्दी से जल्दी पार्लियामेंट में पास करावें। इन अपीलकर्ता विशिष्ट जनों में अशोक गांगुली, अजीम प्रेमजी, दीपक पारेख, जमशेदजी गोदरेज, अनु आगा, विमल जालान, एन. बागुल, केशव महेन्द्रा आदि हैं।

अपने पत्र में इन हस्तियों ने अपनी पीड़ा दर्शाते हुए कहा है कि - कतिपय कारपोरेट घरानों, राजनेताओं, सरकारी अधिकारियों तथा दलालों की मिलीभगत देश की आर्थिक स्थिति के लिए बहुत बड़ा खतरा है। राज्य-शासन, व्यवसाय एवं संस्थाओं में प्रशासनिक दम-खम ढीला पड़ रहा है। लोकपाल बिल के अलावा अभी हमें भूमि, न्याय, चुनाव तथा पुलिस व्यवस्था में सुधारों को भी शीघ्र हाथ में लेना होगा। नीतिगत फैसलों में तथा स्वीकृतियों में देरी के कारण बड़े-बड़े कारपोरेट्स अब विदेशों में विनियोजन का मानस बनाने लगे हैं।

उन्होंने सुझाव दिया कि रिश्वत लेने वाले और देने वाले, दोनों को कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए।

प्रधानमंत्री ने अन्ना हजारे को पत्र लिखा सख्त लोकपाल बिल लाएंगे

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अन्ना हजारे को पत्र लिखा है कि सख्त लोकपाल बिल लाने के लिए सरकार वचनबद्ध है तथा चुनाव के नियमों में 'राइट टू रि कॉल' के प्रावधान को शामिल करने के लिए राजनीतिक सहमति जरूरी है।

प्रधानमंत्री ने लिखा - 'जैसा कि आप जानते हैं, हम एक सशक्त लोकपाल कानून बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमें उम्मीद है कि निकट भविष्य में हम इसमें सफल हो जाएंगे। हालांकि हमारी सरकार भ्रष्टाचार से लड़ने और शासन में सुधार लाने के लिए एक व्यापक एजेंडे पर भी काम कर रही है। इसमें कई कानूनी, कार्यकारी और तकनीकी पहलुओं को शामिल किया जाएगा। लोकपाल की स्थापना इस व्यापक एजेंडे का ही एक हिस्सा है।' हमारी सरकार चुनाव सुधारों से संबंधित विभिन्न प्रस्तावों पर भी सक्रियता से विचार कर रही है। उनमें से 'राइट टू रि कॉल' का प्रस्ताव भी है।

राष्ट्र के नैतिक जागरण हेतु अणुव्रत न्यास, दिल्ली ने विद्यार्थी जगत में जागरूकता के संचार की एक रचनात्मक पहल की है— अणुव्रत निबन्ध लेखन, चित्रकला, गीत-गायन प्रतियोगिताओं की।

‘टूटते परिवारों का बच्चों पर प्रभाव’ शीर्षक से निबन्ध प्रतियोगिता में प्राप्त हुए विद्यार्थियों के लेखों में से एक चयनित लेख यहां प्रस्तुत है। - सम्पादक

कोमल मन को कोमल ही रहने दो

• कविता •

स्वार्थ और लालच में लिपटा आज का मानव सारे संबंधों को ध्वस्त करता जा रहा है। आज जीवन की प्रथम पाठशाला परिवार क्रमशः क्षीण होता जा रहा है। हिन्दी के महान् रचनाकार मुक्तिबोध ने एक आलेख में लिखा है कि पिछले पचास वर्षों की सबसे त्रासद घटना है— संयुक्त परिवार का विघटन। आखिर इस त्रासद घटना के क्या कारण हैं और टूटते पारिवारिक जीवन का सुकोमल बालक के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह अनिवार्य रूप से विचारणीय विषय है।

आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य धीरे-धीरे सारे संबंधों की सीमा को लघु आकार में बदलता जा रहा है और इसी का परिणाम है— संयुक्त परिवारों का विघटन। परिवार का अर्थ बीसवीं शताब्दी में खूब बदला है। जहां 18वीं-19वीं शताब्दी तक परिवार का तात्पर्य दादा-दादी, चाचा-चाची, ताऊ-ताई, माता-पिता, इनके बाल-बच्चों से भरे-पूरे एक मजबूत रिश्ते से होता था, वहीं बीसवीं सदी ने अपने पूर्वार्द्ध में ही हंसते-खिलखिलाते संयुक्त स्वरूप को डस लिया।

इसके पश्चात् परिवार का अर्थ एकल परिवार के रूप में सामने आया जिसमें चाचा, ताऊ और उनके बाल-बच्चों के लिए कोई स्थान नहीं रहा। दादा-दादी भी अनमने रूप से अकेले जीने के लिए विवश होने लगे और उनके लिए भी परिवार में या तो कोई स्थान नहीं रहा अथवा रहा भी तो काफी उपेक्षा से भरा हुआ रहा।

बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में पारिवारिक विघटन ने एक नया रूप लिया और पति-पत्नी में तनाव, संघर्ष और अलगाव की वजह से तलाक सामान्य घटना के रूप में सामने आया। इन सबके परिणामस्वरूप संयुक्त परिवार से न्यूक्लियर फैमिली बन चुका परिवार भी आज छिन्न-भिन्न होने की ओर अग्रसर हो रहा है।

आखिर प्रश्न यह है कि परिवार के टूटते जाने व लगातार विघटित होने से परिवार में कौन सबसे अधिक प्रभावित हुआ है? सुनिश्चित रूप से इसका उत्तर होगा— बच्चों पर ही सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। पारिवारिक टूटन का बच्चों पर पड़ने वाले प्रभावों तथा कारणों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हम इस तरह कर सकते हैं कि इसकी वजह से बालक का मन प्यार-दुलार की अपरिमित संभावनाओं से वंचित हो गया। परिवारों के टूटने से बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव के स्वरूप को हम निम्न शीर्षकों में व्यक्त कर सकते हैं :-

स्नेह-छाया से वंचित : जहां पहले परिवार के एकीकृत होने की वजह से बालक को परिवार के बड़ों का संरक्षण मिलता रहता था वहीं अब उसे वह प्राप्त नहीं हो पाता। दादा-दादी, चाचा, ताऊ और उनके बच्चों के संग घुलमिलकर जीवनयापन करता, विकसित होता बालक प्यार से भरा पूरा रहता था। किन्तु; अब केवल माता-पिता के साथ रहने के कारण वह उस स्नेह से वंचित हो गया

है। इस कारण बालक के अंदर स्नेह का स्रोत सूखता जा रहा है और वह विद्रोही बनता जा रहा है।

असुरक्षा की भावना : पहले जब परिवार के अनेक सदस्य होते थे तब वे एक-दूसरे के सुख-दुख का खयाल रखते थे तथा विपत्ति व परेशानियों के वक्त एक-दूसरे की सहायता करते थे; किन्तु अब ऐसा नहीं हो पा रहा है। माता-पिता दोनों के नौकरीशुदा होने की स्थिति में अन्य बड़े-बुजुर्गों के सुरक्षा कवच से दूर अकेले घर में जीने वाला बालक अब अत्यधिक असुरक्षा की भावना से भरता जा रहा है। इस वजह से उसके अंदर एक मनोवैज्ञानिक भय घर करने लगता है और वह सहमा-सहमा सा रहता है। पहले परिवार के अन्य सदस्यों के बीच रहने से उसमें इस प्रकार के डर की भावना बिल्कुल नहीं होती थी और वह अपने को काफी सुरक्षित महसूस करता था।

असामाजिकता की भावना : आज का बालक क्रमशः असामाजिक होता जा रहा है। वह समाज के अन्य व्यक्तियों और बच्चों के बीच सहजता से नहीं घुलमिल पाता। इसकी मूल वजह है कि परिवार नामक संगठन में ही बालक में सामाजिकता की भावना को बढ़ावा नहीं मिल पा रहा है। परिवारों के टूटते जाने की वजह से बालक बहुत से सदस्यों के बीच जीना नहीं सीख पाता जिसकी वजह से जब वह कभी अचानक समाज के बड़े तबके में जाता है

तो अलग-अलग रहना पसंद करने लगता है। इस असामाजिकता की भावना की वजह से उसमें अनेक प्रकार के ऐसे रोगों का जन्म होता है, जो मनोचिकित्सा से संबंधित हैं।

चिड़चिड़ापन, घृणा व अन्य लक्षण : परिवार के संयुक्त रहने पर बच्चा अपने मनोभावों को क्रमशः अन्य सदस्यों पर व्यक्त कर देता था; अतः उसके अंदर चिड़चिड़ापन या गुस्सा—घृणासदृश भाव के रूप में अन्दर एकत्र नहीं हो पाते थे और वह इसका रचन करके स्वस्थ बना रहता था। आज परिवार के टूटते जाने की वजह से बच्चे अपने विकृत मनोभावों को व्यक्त नहीं कर पाते और अंदर ही अन्दर घुलते रहते हैं, जो एक दिन विस्फोट का रूप धारण कर लेता है और बच्चा दुखद रूप में गुमसुम रहने लगता है।

अवसाद का भयावह रूप में विकास : परिवार के टूटते जाने से बच्चों में तनाव, हताशा स्थायी रूप से आकार लेने लगते हैं। अपने किसी भी प्रकार के मनोभावों को अभिव्यक्त करने के लिए साझीदार नहीं खोज पाने की वजह से वह दुःख, उदासी और अंततः अवसाद के गहन अंधकार में लीन होने लगता है। आज बच्चों के मानसिक रोगों का यह भी मुख्य कारण है।

आत्महत्या की प्रवृत्ति : आज के युग में कम उम्र में बच्चे आत्महत्या की ओर प्रवृत्त होते जा रहे हैं। इसकी मूल वजह शोध करने पर परिवारों का टूटना ही है। बच्चा प्यार-दुलार, सुरक्षा-संरक्षता से वंचित होकर अवसाद में डूबता जाता है। अंततः जीवन को समाप्त की ओर ले जाने की सोचने लगता है। यह अत्यंत भयावह स्थिति है।

भावानामक विकास नहीं होना : परिवार के टूटते जाने से बच्चों के लालन-पालन पर प्रभाव पड़ता है। पहले जहां बड़े-बुजुर्गों के हाथों में झूलते, कंधों पर चढ़ते, गोदी में खेलते बच्चे में विभिन्न भावात्मक व संवेगात्मक विचारों का समावेश होता था, वहीं आज इनके अभाव में बच्चा शून्य बनकर विभिन्न विकारों से ग्रस्त होता जा रहा है।

बेहतर लालन-पालन नहीं : आज एकल परिवार के अभिभावक भले ही बच्चों को खिलौनों व भौतिक सुख-सुविधाओं से लाद दें; किन्तु इन सबके बीच उनको उचित और पर्याप्त समय नहीं दे पाते। अतः, अकेलेपन में घुटता हुआ बच्चा बेहतर रूप में लालित व पालित नहीं हो पाता। कहना न होगा कि परिवारों के टूटने का बच्चों पर चतुर्दिक प्रभाव पड़ता है और न

सिर्फ वह मानसिक रूप से बल्कि सामाजिक, सांवेगिक व भावात्मक स्तर पर अपूर्ण विकसित होकर समाज में समस्याएं उत्पन्न करने वाले बालक के रूप में उभरता है। वह विद्रोही और रोगग्रस्त होकर स्वयं को भी नुकसान पहुंचाता है।

प्रसिद्ध हिन्दी लेखिका मन्नू भंडारी का उपन्यास 'आपका बंटी' की चर्चा से निबंध का समापन करना समुचित होगा। इस उपन्यास का 'बंटी'—छोटा बच्चा बंटी अपनी माता—मम्मी के अलगाव और टूटते परिवार का शिकार होकर कितने ही कष्टों और भयावह स्थितियों का सामना करता है, जो सचमुच बहुत दुखद है।

अतः, सुनिश्चित तौर पर परिवार का टूटना बच्चों के तन व मन को कष्टदायी स्थिति में ले जाता है। उसका कोमल, अविकसित, कच्चा अंकुरित होता जीवन इन आघातों को सहन करता हुआ असमय ही मुझाने लगता है। अतः; मेरा सभी अभिभावकों से निवेदन है, बालक के फूल से कोमल मन को कोमल ही रहने दें, आपकी दुविधा उसके कोमल मन पर नहीं लादें।

- कक्षा 10 'ब'
राव मानसिंह पब्लिक स्कूल
नजफगढ़, दिल्ली

नैतिकता का कार्य दूसरों के लिए न करते हुए आत्मधर्म समझकर करेंगे तो निराशा नहीं होगी।

◆ आचार्य तुलसी ◆

संप्रसारक :

एम. जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झाबूतल्ला रोड, बालीगंज—कोलकाता—700019

दूरभाष : 22809695

कृपया ध्यान दें

विद्यालय, परिवार, समाज, राष्ट्र अथवा स्वयं के जीवन से जुड़े विषयों पर बालक-बालिकाओं के अपने विचार, लेख कविता आदि भेज सकते हैं। चयनित रचना को 'अणुव्रत' में स्थान मिलेगा।

- संपादक

जीवन का सच्चा धन : सत्संस्कार

• मुनि दीपकुमार •

बाल्य अवस्था जीवन के प्रासाद के लिए नींव के समान है। विश्व के सभी विद्वानों और विचारकों ने इस अवस्था का महत्त्व स्वीकार किया है। नींव जितनी सबल होती है, भवन उतना ही सुदृढ़ होता है। आज बालकों की शिक्षा पर बहुत ध्यान दिया जाता है, उसके साथ संस्कार-निर्माण पर भी ध्यान देना आवश्यक है। सुभाषित प्रसिद्ध है--“माता शत्रुः पिता वैरी, येन बालो न पाठितः”--जो माता-पिता अपने बच्चों को नहीं पढ़ाते हैं, वे उनके लिए शत्रु के समान हैं। यहाँ शिक्षा का अर्थ संस्कारयुक्त शिक्षा है। आचार्य महाप्रज्ञ अपने प्रवचनों में कहते थे--‘येन बालो न पाठितः’ के स्थान पर ‘येन बालो न संस्कारितः’ होना चाहिए।

जो माता-पिता बच्चों को सत्संस्कारी नहीं बनाते, वे उनके शत्रु के समान हैं। बालक के लिए पहली पाठशाला परिवार होता है। वह परिवार में जैसा वातावरण देखता है, उसका वैसा ही संस्कार बन जाता है। इसलिए गुरुदेव तुलसी कहते थे--“यदि बच्चों को सुधारना है तो पहले अभिभावकों को सुधारना होगा।’ यदि घर में कोई धूम्रपान करेगा तो छोटे बालक भी उसका अनुसरण करेंगे। बच्चों का मस्तिष्क बहुत ग्रहणशील होता है। वह हर बात को ध्यान से देखता है और उसका अनुसरण करने का प्रयास करता है।

बच्चे घर के भविष्य होते हैं। उनके लिए वात्सल्य रस का सिंचन जरूरी है। वात्सल्य के साथ संस्कारों की सुधा-वर्षा भी होनी चाहिए। उसके बिना प्यार और वात्सल्य भी गरल बन जाते हैं। हजारों घरों का इतिहास इसका प्रमाण है। एक बार एक बड़े उद्योगपति आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन करने आये। आचार्यश्री ने कहा--आपके समाज ने बहुत प्रगति की है, आर्थिक दृष्टि से समृद्धि प्राप्त की है। तब उन्होंने कहा--आचार्यजी! हमारा समाज समृद्ध जरूर बना है, पर इसके

साथ संस्कारों में जो गिरावट आई है उसे देखते हुए यह नहीं कह सकते कि प्रगति हुई है। नई पीढ़ी नाइट-क्लबों में पैसे बर्बादी करती है। इसका कारण अच्छे संस्कारों का अभाव है। धन की अंधी दौड़ में हम हमारी मौलिक परम्पराओं और अच्छे संस्कारों को भूलते जा रहे हैं। इस प्रकार के अनुभव हमें अनेक विचारकों से सुनने को मिलते हैं।



सच्ची विरासत

अधिकतर लोग अपने बच्चों के लिए धन का संग्रह करके संतुष्ट हो जाते हैं। वे धन को उनके लिए सच्ची विरासत समझते हैं। पर, यह एकांगी दृष्टिकोण हानिकारक है। धन का अर्जन करने से उसका संरक्षण करने की कला अधिक महत्त्व रखती है। राजस्थानी भाषा की यह कहावत संस्कारों की सम्पदा पर प्रकाश डालती है--

पूत सपूत तो क्यूं धन संचे,

पूत कपूत तो क्यूं धन संचे।

-- पुत्र संस्कारी है तो वह अपने कौशल से घर

का भविष्य उज्ज्वल बना सकता है, यदि संस्कारविहीन है तो पिता के सारे गौरव को धूमिल बना देता है तथा मिट्टी मेंमिला देता है। **तीन ‘व’ का संगम**

बालक के जीवन में विनय, विवेक और विद्या के तीन ‘व’ का संगम होना चाहिए। तेरापंथ धर्मसंघ के प्रमुख संत मंत्री मुनि मगनलालजी की भाषा में संस्कार-निर्माण की यह पहली शिक्षा है। आज हर बालक विद्या के

क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहता है। इस दिशा में माता-पिता भी बहुत जागरूक हैं। वे सब प्रकार की व्यवस्था जुटाते हैं तथा विद्या के लिए बच्चों को निरन्तर प्रोत्साहन देते रहते हैं। पर, विनय और विवेक का विकास भी साथ में आवश्यक है। मंत्री मुनि कहते थे--तीन ‘व’ में विनय का पहला, विकास का दूसरा और विद्या का स्थान तीसरा होना चाहिए, तभी विद्या व्यक्ति, परिवार और समाज के लिए लाभदायक हो सकती है।

संगति का प्रभाव

जीवन में संगति का महत्त्व हर उम्र में होता है। पर, बाल्यावस्था में उसका विशेष

महत्त्व है। अच्छी संगति के प्रभाव से पतित मनुष्य के जीवन में भी परिवर्तन हो जाता है। इसी प्रकार कुसंगति के योग से सदाचारी और सत्संस्कारी का भी पतन हो जाता है। एक व्यक्ति के जीवन का पूर्वाह्न बहुत सुन्दर था। कुसंगति के प्रभाव से उत्तरार्द्ध में वह अपराधी हो गया। जिसके फलस्वरूप आखिरी वर्षों में उसे कारागृह में बन्दी होना पड़ा। इसी प्रकार अच्छी संगति के प्रभाव से वाल्मिकी जैसे डाकू भी संत बन गये।

प्राचीन युग में भारत की परिवार-व्यवस्था में बच्चों को सत्संस्कार प्राप्त होते थे। गोपालकृष्ण गोखले जब पांचवीं कक्षा के छात्र थे तब उनके शिक्षक ने कुछ प्रश्नों का उत्तर लिखने का निर्देश दिया। दूसरे दिन उन्होंने उत्तर दिखाए तो शिक्षक बहुत प्रसन्न हुआ और उनको पुरस्कार दिया। इस पुरस्कार से वे दुःखी हुए और रोने लगे। शिक्षक ने जब रोने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा—“सर! ये उत्तर मैंने नहीं, मेरे बड़े भाई ने लिखे हैं। इसलिए मैं पुरस्कार का अधिकारी नहीं हूँ।” शिक्षक ने उनकी सत्यवादिता से खुश होकर पुनः पुरस्कार दिया। शिक्षक ने जब पूछा—“तुम्हें ये संस्कार कहाँ से प्राप्त हुए?” तब उन्होंने कहा—“मुझे मेरे माता-पिता से सत्यनिष्ठा के संस्कार मिले हैं।”

■ सहनशीलता

हर बालक को सहनशीलता का प्रशिक्षण अवश्य मिलना चाहिए। आचार्य महाप्रज्ञ ने एक सूत्र दिया—‘सहन करो-सफल बनो।’ विश्व के महापुरुषों ने सहन किया था तभी वे समाज के आदर्श पुरुष बने थे। आजकल के बालक माता-पिता के थोड़े से अनुशासन को सहन नहीं कर पाते, उनका मिजाज बहुत जल्द बिगड़ जाता है। थोड़ा-सा कुछ कहते ही मूड ‘ऑफ’ हो जाता है।

जीवन के हर मोड़ पर सहिष्णुता के अभाव में जीवन नीरस प्रतीत होता है। गुरुदेव तुलसी एक श्लोक कहा करते थे—

“नयणविह्वलं वयणं कमलविह्वलं च सरवरं तहय।

न य साहइ तह खंतीए विह्वलं माणुस लोए।।

मुख बहुत सुन्दर हो और आंखें न हों तो सौन्दर्य का कोई मूल्य नहीं है। सरोवर बहुत

जो माता-पिता बच्चों को सत्संस्कारी नहीं बनाते, वे उनके शत्रु के समान हैं। बालक के लिए पहली पाठशाला परिवार होता है। वह परिवार में जैसा वातावरण देखता है, उसका वैसा ही संस्कार बन जाता है। इसलिए गुरुदेव तुलसी कहते थे—“यदि बच्चों को सुधारना है तो पहले अभिभावकों को सुधारना होगा।” यदि घर में कोई धूम्रपान करेगा तो छोटे बालक भी उसका अनुसरण करेंगे। बच्चों का मस्तिष्क बहुत ग्रहणशील होता है। वह हर बात को ध्यान से देखता है और उसका अनुसरण करने का प्रयास करता है। बच्चे घर के भविष्य होते हैं। उनके लिए वात्सल्य रस का सिंचन जरूरी है। वात्सल्य के साथ संस्कारों की सुधा-वर्षा भी होनी चाहिए। उसके बिना प्यार और वात्सल्य भी गरल बन जाते हैं।

बड़ा हो और उसमें खिले हुए कमल न हों तो उसका आकर्षण नहीं बढ़ता। इसी प्रकार जीवन में अनेक अच्छाईयाँ हों पर सहिष्णुता न हो तो जीवन का सौन्दर्य नहीं निखरता। सहिष्णुता का प्रशिक्षण प्राप्त हो तो व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थितियों को पार करता हुआ सफलता का आरोहण कर लेता है। सहिष्णुता के विकास के लिए प्रेक्षाध्यान में निर्दिष्ट सहिष्णुता की अनुप्रेक्षा बहुत लाभदायक है।

■ समर्पण

सत्संस्कारों के विकास के लिए जीवन में समर्पण का बहुत महत्त्व है। समर्पण के तीन रूप हैं— लक्ष्य के प्रति समर्पण, आदर्शों के प्रति समर्पण तथा मार्गदर्शक के प्रति समर्पण। जीवन की सफलता के लिए हर व्यक्ति को अपने लक्ष्य का निर्धारण करना चाहिए तथा उसके प्रति समर्पण की जरूरत भी रहती है। जिसके मानस में समर्पण होता है, वह कठिनाइयों और बाधाओं को चीरकर निरन्तर आगे बढ़ता रहता है तथा अपने लक्ष्य को हस्तगत करने में सफल हो जाता है। जिसमें श्रद्धा और समर्पण का अभाव होता है वह समस्याओं से विचलित हो जाता है जिससे मंजिल पर पहुँच नहीं पाता। संस्कृत कवि ने लिखा है—

‘विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमाना।

प्रारब्ध मुत्तम जना न परित्यजंति।।

विघ्न बाधाएं उपस्थित होने पर भी महान् मनुष्य शुरु किये गए कार्य को बीच में नहीं छोड़ते तथा जो लक्ष्य के प्रति समर्पित होते हैं, वे ही महान् होते हैं।

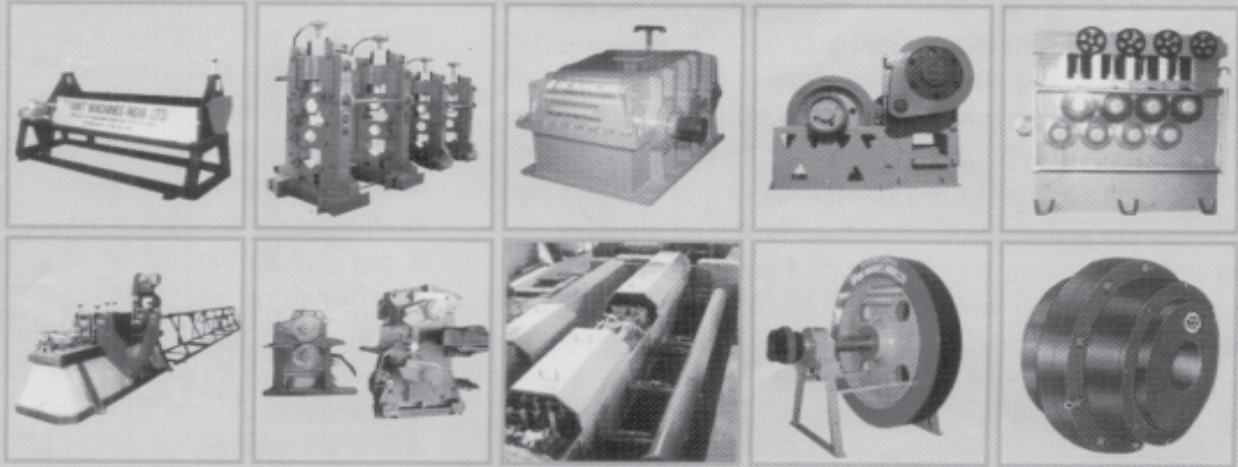
आजकल हर समाज के लोगों का परस्पर संबंध बहुत रहता है। पर, अपने आदर्शों के प्रति निष्ठा में शिथिलता होना अखरता है। महात्मा गांधी एक बार लंदन में एक ईसाई फादर के घर मेहमान बने थे। भोजन के बाद फादर ने बाइबल की अच्छी बातें गांधीजी को बताईं। गांधीजी गुणग्राहक थे। उन्होंने बड़े आदर से बाइबिल के उपदेशों को सुना। फादर ने सोचा—यदि एक गांधी ईसाई बन जाएंगे तो भारत के करोड़ों हिन्दू ईसाई बन जाएंगे। इस भावना से पादरी कई दिन तक गांधीजी को आमंत्रित करते रहे। एक दिन पादरी के बच्चों ने गांधीजी से पूछा—आप हमारा भोजन क्यों नहीं करते। गांधीजी ने उनको शाकाहार का विस्तार से महत्त्व बताया। यह सुनकर बच्चों ने फादर से कहा—कल से हम भी गांधीजी का भोजन करेंगे। यह सुनकर फादर ने सोचा—गांधी ईसाई बनेंगे या नहीं बनेंगे पर इनकी संगत से मेरे बालक कहीं हिन्दू नहीं बन जाएं; यह सोचकर उन्होंने गांधीजी को फिर निमंत्रण नहीं दिया।

इसी प्रकार मार्गदर्शक के प्रति भी समर्पण जरूरी है, तभी जीवन में अच्छे संस्कारों का विकास हो सकता है। जीवन में दो मार्गदर्शक मुख्य होते हैं, पहला—अभिभावक, दूसरा—गुरु। इन दोनों का जीवन में बहुत महत्त्व होता है। इसलिए जीवन में इन दोनों मार्गदर्शकों के प्रति सदा श्रद्धा और विनय का भाव रहना चाहिए तभी सत्संस्कारों के बीज जीवन में पल्लवित हो सकेंगे। ■

बोलना एक कला है, उसका प्रमुख सूत्र है,
अनावश्यक नहीं बोलना ।

आचार्य महाश्रमण

SMT IS THE POWER OF **STEEL** MILL TECHNOLOGY



- Fully Automatic Hot/Wire Rod/TMT Bar /Section Rolling Mills
- Mill Stands
- Flywheels
- Pinion Stand
- Reduction Gear Box
- Billet Shearing Machine
- Rotary Shearing Machine
- Cold Shearing Machine
- Flying Shear
- Online TMT Box (QST Process)
- Automatic Cooling Bed
- Section Straightening Machine
- De-coiling & Straightening & Cutting Machine
- Gears & Gear Couplings
- Eden Borne type Coiler
- Slag Crushing Unit
- Scrap Shearing Machine



SMT MACHINES (INDIA) LIMITED

An ISO-9001 Company & Govt. of India Recognized EXPORT HOUSE
G.T. Road, Near Industrial Focal Point, Mandi Gobindgarh - 147 301 (INDIA)
Phone: +91-1765-256337, 257742 Fax: 255199 Mobile: +91-93574-11101
E-mail: info@smtmachinesindia.org, Website: www.smtmachinesindia.org

माँ! ओस की बूंद-सी तुम

● संजय आचार्य 'वरुण' ●

इस कोने से लेकर
उस कोने तक
पूरे घर को
दिन में कई बार
अपने हाथों से
सहलाने वाली मां,
थम कर बैठती हो तब
जब गेहूं बीनने के बहाने
सींचती हो अपने हाथों से
दाने-दाने में इक मिठास।

उलझे-उलझे बालों वाली मां
कैसे कर लेती हो
इतनी सुलझी-सुलझी बातें
कि कई बार
निरुत्तर हो जाने के बाद भी
कितना सुकून से भरा-भरा
दिखाई देता है
बाबूजी का चेहरा?

मां, सारी रात तुम
बाबूजी की आहतों पर
कान लगाए-लगाए ही
ऊंघते-ऊंघते
कैसे कर लेती हो
नींद लेने का उपक्रम,
और, सुबह फिर
खिल-खुल जाती हो
किसी ताजा-तरीन
फूल की तरह?

मां, सचमुच कितने
आह्लादित होते होंगे बाबूजी
दादी के सामने
तुम्हें इस पकी उम्र में भी
लम्बा-सा घूंघट निकाल कर
किसी नववधू की तरह
सकुचाते हुए देखकर?

मां, ओस की बूंद-सी तुम
कितनी भली लगती हो
परिवार के पात पर
घर के आंगन में लगा
तुलसी का थान
शायद तुम्हें देख-देखकर ही
फल-फूल रहा है।

*आचार्यों का चौक, जीतमल
पिरोल, बीकानेर --334001*

स्वागत है द्वार पर!

● अशोक 'अंजुम' ●

दीवारें इस ओर हैं, दीवारें उस ओर।
ऐसे में फिर किस तरह, उगे प्यार की भोर।।

संबंधों के बीच में, सिक्कों की दीवार।
प्रेम-ज्योति इस ओर से, कैसे जाए पार?

आंखों में आंसू लिए, घूम रहे हम व्यर्थ।
धीरे-धीरे खो रहे, रिश्ते-नाते अर्थ।।

स्वागतम् है द्वार पर, पर अन्दर तकरार।
दिल पर आप लगाइए, पहले वन्दनवार।।

अरे-अरे निष्ठुर समय, कुछ तो रखना ध्यान।
बड़े भाग से आजकल, घर आते मेहमान।।

भाई-भाई ने रची, आंगन में दीवार।
अम्मा तड़पे इस तरफ, बापू हैं उस पार।।

नहीं बात-सी बात थी, टूट गए अनुबंध।
पलक झपकते हो गए, चूर-चूर संबंध।।

*615, टक गेट, कासिमपुर
अलीगढ़-202127 (उ.प्र.)*

केलवा में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के आयोजन अंधकार को मिटाने हेतु अणुव्रत एक दीप है



केलवा, २६ सितम्बर : अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में अणुव्रत समिति केलवा द्वारा अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का प्रारंभ हुआ। सप्ताह के पहले दिन पर्यावरण शुद्धि दिवस पर युवती मंडल एवं कन्यामंडल द्वारा अणुव्रत गीत की प्रस्तुति के बाद केलवा के सरपंच दिग्विजयसिंह राठौड़, राजसमन्द नगरपालिका की चेयरपर्सन आशा पालीवाल, उदयपुर के मुख्य वन संरक्षक एन.सी. जैन, पार्षद प्रदीप पालीवाल ने पर्यावरण शुद्धि पर अपने विचार रखे। चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी के वक्तव्य के बाद स्थानीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मुकेश कोठारी ने स्वागत भाषण किया। अणुव्रत सहप्रभारी मुनि अक्षयप्रकाश की विषय प्रस्तुति के बाद मंत्री मुनि का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

आचार्य महाश्रमण ने अपने उद्बोधन में कहा-- 'अंधकार को मिटाने के लिए अणुव्रत एक दीप है। अणुव्रत की दीपशिखा के माध्यम से आचार्य तुलसी ने समाज में व्याप्त अनैतिकतारूपी तमस को दूर करने का सलक्ष्य प्रयास किया था, वह प्रयास अब भी जारी है।' पर्यावरण की चेतना को जागृत करने के क्रम में उपस्थित जनसमूह को आचार्य महाश्रमण ने पानी-बिजली का दुरुपयोग न करने की सीख दी। आपने कहा-- 'सब अपने जीवन में संयम व व्रत की भावना को पुष्ट करें।' राजसमन्द पालिकाध्यक्ष ने सप्ताह में एक दिन घर से ऑफिस की यात्रा गाड़ी से न करने का संकल्प किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

प्रशासकीय सुधार, मानव संसाधन विकास एवं जनशक्ति योजना कमेटी, राजस्थान के चेयरमैन डा. एन. एम. सिंघवी एवं पाली के सांसद बद्रीराम जाखड़ ने आचार्य महाश्रमण के दर्शन किए और मार्गदर्शन प्राप्त किया। कार्यक्रम के उपरान्त पूज्य आचार्य महाश्रमण पर्यावरण-शुद्धि विषय पर आयोजित चित्र प्रतियोगिता के विशेष विजयों की प्रदर्शनी में पधारे और तत्संबंधी जानकारी प्राप्त की।

२७ सितम्बर : अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत जीवनविज्ञान दिवस कार्यक्रम में प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल, प्रदेश भाजपा मंत्री प्रमोद सामर हरिओमसिंह राठौड़ ने अपने विचार रखे। स्वागताध्यक्ष परमेश्वर बोहरा के स्वागत भाषण के बाद पूर्व शिक्षामंत्री व विधायक वासुदेव देवनानी ने अपने वक्तव्य में कहा-- 'जीवनविज्ञान विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति को प्रसन्न रहना सिखाता है। यह कठिनाइयों को झेलने की शक्ति प्रदान करता है।'।

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में कहा-- 'जीवनविज्ञान सम्यक् जीवन जीने की कला है। इसकी फलश्रुति है--अभय का विकास। जीवन सभी जीते हैं, किन्तु उद्देश्यपूर्ण जीवन जीना महत्त्वपूर्ण बात है। प्राचीन ग्रंथों में वर्णित बहत्तर कलाओं में निष्णात होने के बाद भी यदि व्यक्ति संयम एवं सादगीपूर्ण तथा नैतिक जीवन नहीं जीता है तो उसकी समस्त कलाएं व्यर्थ मानी जाती हैं। मानव होकर व्यक्ति अगर मानवता का जीवन न जीए तो उसका जीवन सार्थक और सफल नहीं होता।'

बच्चों को देश का भविष्य बताते हुए प्रवर आचार्य महाश्रमण ने कहा-- 'बचपन से ही बच्चों को जीवन जीने की कला सिखा दी जाए और उसका अभ्यास करा दिया जाए तो उनका जीवन समुन्नत और भविष्य समुज्ज्वल बन सकता है।' पूज्यप्रवर ने प्रवचन के बाद विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया।

सुख का राजपथ है अणुव्रत

२८ सितम्बर : अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत आज का कार्यक्रम अणुव्रत प्रेरणा दिवस के रूप में आयोजित हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि जयंतकुमार, मारवाड़जंक्शन के सिविल न्यायाधीश सुश्री मेघना जैन एवं प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

आचार्य महाश्रमण ने कहा-- 'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने जनता को अणुव्रत के रूप में एक ऐसा राजपथ दिखाया जिस पर चलने वाला व्यक्ति सुखी बन सकता है। अणुव्रत किसी धर्म विशेष, सम्प्रदाय विशेष या समाज विशेष से जुड़ा हुआ दर्शन नहीं है। हर व्यक्ति के लिए उसका द्वार हर समय खुला हुआ है। यह सर्वव्यापी कार्यक्रम है, जिसमें लोक कल्याण की भावना निहित है। इसका मूल उद्देश्य है-- व्यक्ति-व्यक्ति के भीतर नैतिकता और चरित्र का विकास। गृहस्थ को अर्थ की अपेक्षा होती है, किन्तु शुद्ध साधन द्वारा उपार्जित अर्थ ही यथार्थतः अर्थ है, अन्यथा वह अर्थाभास है, अनर्थ है। अणुव्रत से संबद्ध व्यक्ति अर्थाजर्जन में अणुव्रत के नियमों को न भूलें। उन्हें समझें और आत्मसात करने का प्रयास करें।' आचार्य श्री ने उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया।

२९ सितम्बर : अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का चौथा दिन 'सद्भावना दिवस' के रूप में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ अणुव्रत गीत से हुआ। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, बीकानेर के सांसद अर्जुन मेघवाल व अखिल भारतीय ब्रह्माकुमारी मिशन के सहसंयोजक राजेन्द्र व्यास ने अपने उद्गार व्यक्त किए। मंत्री मुनि का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

आचार्य महाश्रमण ने कहा-- 'सम्प्रदाय का अर्थ है--गुरु परंपरा। संप्रदाय कोई बुरी चीज नहीं है। यह तो हमारी विरासत है जो आगे से आगे गतिमान रहती है। किन्तु; जब यह साम्प्रदायिक उन्माद का रूप लेती है तो विनाशकारी बन सकती है। अणुव्रत का सन्देश है कि उन्माद की स्थिति पैदा न हो। साम्प्रदायिक

सद्भावना का विकास हो। इससे परस्पर नैकट्य बढ़ता है और शान्तिपूर्ण वातावरण का निर्माण होता है। सम्प्रदाय की अपेक्षा धर्म का स्थान उच्च है। सम्प्रदायों में बाह्य अन्तर हो सकता है, किन्तु आन्तरिक दृष्टि से उनमें काफी साम्य है। असमानता की अपेक्षा समानताओं को देखने का प्रयास हो।'

३० सितम्बर : अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का पांचवां दिन नशामुक्ति दिवस के रूप में आयोजित हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनि का प्रेरक अभिभाषण हुआ। मुनि अशोककुमार एवं विशिष्ट अणुव्रत-चिन्तक डा. महेन्द्र कर्णावट ने निर्धारित विषय पर अपने विचार रखे।

आचार्य प्रवर ने अपने प्रवचन में कहा-- 'तात्कालिक सुख से आकृष्ट होकर व्यक्ति नशे की गिरफ्त में आ जाता है। उसके भयंकर परिणामों को जानते हुए भी व्यक्ति उसे छोड़ नहीं पाता। नशा अपने साथ अनेक प्रकार की बुराइयों को लेकर आता है। यह घरेलू हिंसा का भी एक बड़ा कारण है। विवेकपूर्वक उसके दुष्परिणामों पर ध्यान देकर सलक्ष्य उससे मुक्त होने का प्रयास करें तो सफलता मिल सकती है।'

स्वयं पर करें अनुशासन

१ अक्टूबर : अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का छठा दिन 'अनुशासन दिवस' के रूप में आयोजित हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में राजनगर महिला मंडल ने गीत का संगान किया। मुनि उदितकुमार ने विचार व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने कहा-- 'दूसरों पर अनुशासन करने से पूर्व व्यक्ति स्वयं पर अनुशासन करे। जो स्वयं अनुशासित होता है, वही दूसरों पर अनुशासन कर सकता है। आत्मानुशासन के अभाव में दूसरों के अनुशासन की अपेक्षा रहती है। तेरापंथ में अनुशासन का बड़ा महत्त्व है। यहां अनुशासन की सुन्दर व्यवस्था चलती है। भारत लोकतांत्रिक प्रणाली वाला देश है। लोकतांत्रिक देश में जहां अभिव्यक्ति की आजादी है, वहां अनुशासन और ज्यादा जरूरी हो जाता है। आत्मानुशासन फलित होने पर ही व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र उन्नति प्राप्त करता है।'

अहिंसा दिवस का आयोजन

२ अक्टूबर : अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तिम दिन 'अहिंसा दिवस' कार्यक्रम में मुनि विजयकुमार ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल कोठारी के स्वागत भाषण के बाद अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष बाबूलाल गोलखा ने अणुव्रत की प्रवृत्तियों की अवगति दी। मंत्री मुनि सुमेरमलजी ने अहिंसा की शक्ति को अपरिमित बताया।

राजस्थान के पूर्व गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने कहा-- 'महात्मा गांधी ने आजादी की लड़ाई अहिंसा के मार्ग पर चलकर लड़ी थी। उसके सकारात्मक परिणाम भी आए थे। हिंसा से कभी किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत और आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा के द्वारा अहिंसा का संदेश दिया। आचार्य महाश्रमण उनके मिशन को आगे बढ़ा रहे हैं।'

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा-- 'व्यवहार में अहिंसा का भाव हो तो विश्वशान्ति व भ्रातृत्व भावना साकार हो सकती है। अभाव, अज्ञान व आवेश हिंसा के कारण हैं। इनका निवारण होने पर मानव मन में अहिंसा अवतरित हो सकती है।' आचार्यश्री ने आगे कहा-- 'भगवान महावीर ने अहिंसा के सन्देश को जनव्यापी बनाया। इसी को महात्मा गांधी ने आजादी की प्राप्ति के लिए अपना अस्त्र बनाया। उन्होंने अपने जीवन में अहिंसा के विविध प्रयोग किए। चित्तवृत्ति की शान्ति व्यक्ति को हिंसक मनोवृत्ति से उपरत करती है। हिंसा किसी समस्या का समाधान नहीं है। आचार्य भिक्षु हृदय परिवर्तन में विश्वास करते थे। आचार्य महाप्रज्ञ व्यक्ति के मनोभाव को बदलने के लिए योग और ध्यान के प्रयोगों को महत्त्व देते थे और इसके लिए समय-समय पर शिविरों के माध्यम से प्रशिक्षण देते थे। वह क्रम आज भी चल रहा है।'

...

मंडी गोविन्दगढ़ में विविध कार्यक्रम

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारम्भ साध्वी उज्ज्वल कुमारी के निर्देशन में हुआ। सहयोगी साध्वी द्वय-- लावण्य यशा व जयप्रभा के सान्निध्य में गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल के विशाल परिसर में पर्यावरण शुद्धि दिवस का आयोजन हुआ। लगभग 70 अध्यापक एवं 1500 छात्राओं को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा-- जीवन के हर क्षेत्र में पर्यावरण की शुद्धि जरूरी है। आज विकास के नाम पर प्रदूषण फैलाया जा रहा है, उन्होंने बच्चों को हरे-भरे वृक्ष नहीं काटने तथा पानी का अपव्यय नहीं करने का संकल्प कराया। लगभग एक हजार बालिकाओं ने कन्याभूषण हत्या नहीं करने का संकल्प भी स्वीकार किया।

जीवन-विज्ञान दिवस स्थानीय आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल में साध्वी लावण्ययशा के सान्निध्य में मनाया गया। उन्होंने बताया-- जीवन विज्ञान जीने की महान कला है जो बच्चों को दैनिक जीवन जीने के ढंग सिखलाता है। उन्होंने छात्रों को महाप्राण ध्वनि, ज्ञान मुद्रा, ब्रह्ममुद्रा आदि का प्रायोगिक प्रशिक्षण भी दिया। साध्वी सूरजप्रभा ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किया तथा स्कूल प्रिन्सिपल उषा शर्मा व प्रिन्सिपल रामेश्वर दास, रामनिवास जैन, प्रवीण जैन आदि ने भी विचार प्रकट किये।

अणुव्रत दिवस का आयोजन हर गोविन्द सीनियर सैकण्डरी स्कूल में हुआ। इसमें साध्वीश्री ने कहा-- अणुव्रत का उद्देश्य व्यक्ति के जीवन को श्रेष्ठ बनाकर समाज और राष्ट्र का सुधार करना है। इस अवसर पर उपस्थित लगभग 600 छात्र-छात्राओं ने अणुव्रत के नियमों को स्वीकार कर संकल्प-पत्र भरे।

...



अध्यक्ष व महामंत्री की अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह यात्रा

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा एवं महामंत्री सम्पत सामसुखा ने 25 सितंबर 2011 को कैलवा में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण से मांगलिक आशीर्वाद लेकर अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह की यात्रा प्रारंभ की। यात्रा का उद्देश्य था संगठन को मजबूत बनाने के क्रम में कार्यकर्ताओं की सार-संभाल एवं अणुव्रत आंदोलन में गतिशीलता लाना।

कैलवा से 'सम्बोधि' में मुनि शुभकरण के दर्शन कर सायंकाल सिरियारी पहुंचे। रात्रि विश्राम भीलवाड़ा में किया।

26 सितंबर, 2011 : अणुव्रत समिति भीलवाड़ा द्वारा महिला आश्रम उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रातः 7.15 बजे साध्वी प्रमोदश्री के सान्निध्य में 'अनुशासन दिवस' का आयोजन रखा गया। संस्था के प्रिंसिपल ने सभी का स्वागत किया। साध्वी प्रमोदश्री ने उपस्थित 1200 बालिकाओं को अनुशासन की महत्ता पर उद्बोधन दिया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पुखराज दक, सभाध्यक्ष भैरूलाल बाफना, तेयुप अध्यक्ष सुनील दक ने स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा व महामंत्री सम्पत सामसुखा ने अपने वक्तव्य में अनुशासन को जीवन शैली का अंग बनाने पर बल दिया। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के संरक्षक धर्माचन्द्र जैन, मंत्री मनोहरलाल बापना, जिला प्रभारी ज्ञानचंद कांठेड़, कोषाध्यक्ष शुभकरण चौरडिया, कार्यकारिणी सदस्य इन्द्रमल हिंगड़, एल. एल. गांधी, रोशनलाल पितलिया, नवीन बागरेचा इत्यादि की विशेष उपस्थिति रही। संयोजन अशोक सिंघवी ने किया।

कार्यक्रम की संपन्नता के उपरांत लक्ष्मीलाल गांधी के आवास पर अल्पाहार कर गंगापुर के लिए धर्माचन्द्र जैन, ज्ञानचंद कांठेड़ व मनोहरलाल बापना के साथ रवाना हुए। गंगापुर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश बोलिया के अमित बोलिया स्कूल में पहुंचे जहां 'सांप्रदायिक सौहार्द' दिवस पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं के मध्य भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी। बालिकाओं ने बड़-चढ़कर भाग लिया। प्रो. धर्माचन्द्र जैन ने विचार रखे। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश बोलिया व शाला प्रधान वी.एम. जोसफ ने सभी का स्वागत किया। समिति के



अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में बाबूलाल गोलछा की प्रस्तुति

सहमंत्री रमेश हिरण ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संयोजन मदनचंद मंडोवरा ने किया। विशिष्ट अतिथि श्रीमती पूनम मेहता, चैयरमैन, गंगापुर नगरपालिका ने भी अपने विचार रखे।

कार्यक्रम की सम्पन्नता के उपरांत सभी ने कालू कल्याण कुंज पहुंचकर वहां विराजित साध्वी गुणमाला के दर्शन किये। कार्यक्रम के बारे में जानकारी प्रस्तुत की। प्रकाश बोलिया के निवास पर भोजन कर आसीन्द के लिए रवाना हुए।

आसीन्द तेरापंथ सभा भवन पहुंच कर साध्वी मधुबाला के दर्शन किये। यहां 'अनुशासन दिवस' का आयोजन किया गया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष नौरतनमल कांठेड़ व संरक्षक कल्याणमल गोखरू के साथ अणुव्रत समिति द्वारा गोद लिये गए ग्राम 'बाघा-बा का खेड़ा'- का अवलोकन किया। वहां वृक्षारोपण किया गया। अणुव्रत महासमिति भी किसी एक ग्राम में अपनी सहभागिता करेगी अतः इस ग्राम को अणुव्रत ग्राम के रूप में लक्ष्य कर विकसित करने का लक्ष्य बनाया गया। ग्राम से संबंधित अन्य जानकारी और उपलब्ध कराने हेतु समिति अध्यक्ष से बात की गई ताकि सभी तथ्यों पर चिंतन किया जा सके। पास ही गौशाला के सामने एक भूखंड अणुव्रत महासमिति को आवंटन हेतु एनओसी हो गयी है। यह जानकारी नौरतनमल कांठेड़ ने दी। जिला प्रमुख श्रीमती सुशीला सालवी ने जिला परिषद से भूखंड को समतल करवाने हेतु भराव कार्य व चारदीवारी करवाने का आश्वासन दिया गया है।

यहां से विदा लेकर सरदारशहर के लिए रवाना हुए। रात्रि 1 बजे सरदारशहर पहुंच कर श्रीचंद नौलखा के आवास पर विश्राम किया।

27 सितंबर 2011 : अणुव्रत समिति सरदारशहर व रोटरी क्लब सरदारशहर के तत्वावधान में नशामुक्ति रैली का आयोजन हुआ। राजस्थान प्रदेश अणुव्रत समिति के पूर्व उपाध्यक्ष व पूर्व सभाध्यक्ष श्रीचंद नौलखा के यहां से गधैयों के नोहरे 'समवसरण' में पहुंचकर मुनि विनयकुमार 'आलोक' के दर्शन कर गधैयों की हवेली में विराजित साध्वी रतनकुमारी, साध्वी जिनबाला के दर्शन किये। वहां से मुनिश्री के साथ पदयात्रा करते हुए लाल मैदान में पहुंचे जहां 25-30 स्कूलों के लगभग 5000 की संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। जिला शिक्षा अधिकारी के दिशा-निर्देश में शालाओं के अध्यापकों व महिला मंडल की सदस्यों ने रैली को व्यवस्थित किया। अणुव्रत महासमिति अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा व महामंत्री सम्पत सामसुखा ने रैली को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई रैली पुनः समवसरण में पहुंचकर सभा में परिवर्तित हो गयी। रैली को मुनिश्री का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सरदारशहर के अनेक गणमान्य व्यक्ति रैली में उपस्थित थे। सुजानमल दूगड़, रतनलाल बच्छावत की विशेष उपस्थिति रही।

साध्वीवृंद द्वारा मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रावतमल सैनी ने सभी का स्वागत किया। मुनि विनयकुमार आलोक ने नशे के दुष्परिणामों की



सरदारशहर में मुनि विनयकुमार आलोक के सान्निध्य में नशामुक्ति रैली

विस्तार से व्याख्या की। साध्वी जिनबाला एवं साध्वी रतनकुमारी ने भी बच्चों को नशामुक्त रहने की प्रेरणा दी। कनकमल दूगड़ ने अपने जीवन की घटना बताते हुए नशे से तौबा करने की बात कही। महामंत्री सम्पत सामसुखा ने भी अपने विचार रखे। महासमिति के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने बच्चों को संस्कारवान बनाने की बात कही। शिक्षा अधिकारी, रोटरी क्लब व रतनलाल दफ्तरी ने अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन सिद्धार्थ चिंडालिया ने किया। संचालन साध्वीश्री ने किया।

कार्यक्रम की सम्पन्नता के बाद रतनगढ़ पहुंचे। रतनगढ़ अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा का मूल गृहस्थान है। उनके ससुराता आंचलिया परिवार में दोपहर का भोजन कर गोलछा ज्ञान मंदिर में साध्वी जयप्रभा के सान्निध्य में पहुंचे। अणुव्रत के कार्यक्रमों के बारे में चर्चा हुई। अणुव्रत के विभिन्न कार्यक्रम अलग-अलग स्थानों द्वारा निर्देशित व आयोजित किये जाते हैं। स्थानीय स्तर पर अणुव्रत का एक ही संगठन अणुव्रत समिति है। कौन सा कार्यक्रम किसके द्वारा निर्देशित है, समझने में दिक्कत आती है, साध्वीश्री का कहना था अणुव्रत के कार्यों का एक ही जगह से निर्देशन हो तो अच्छा रहेगा।

यहां पर तेरापंथ सभा व अणुव्रत समिति द्वारा बाबूलाल गोलछा अध्यक्ष अणुव्रत महासमिति का अभिनन्दन कार्यक्रम रखा गया। सभाध्यक्ष जतनलाल हीरावत ने स्वागत किया। वरिष्ठ श्रावक रूपचंद सेठिया ने भी अभिनन्दन में अपने विचार रखे। अणुव्रत समिति अध्यक्ष वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी व मंत्री महावीर सेवदा ने रतनगढ़ के लिए गौरव की बात बतायी। प्रमोद पांडिया ने भी अपने विचार रखे। महिला मंडल की ओर से

साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। महामंत्री सम्पत सामसुखा ने अणुव्रत के कार्यक्रमों की जानकारी दी। रतनगढ़ में अणुव्रत मार्ग - अणुव्रत द्वार के निर्माण के लिए प्रयास करने की बात कही। उपस्थित रतनगढ़ नगरपालिका के पार्षद ने अपनी तरफ से पूर्ण सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया। साध्वी जयप्रभा ने अणुव्रत के प्रति समर्पित भाव से कार्य करने की प्रेरणा दी। संयोजन कमल बैद ने किया। वहां से छपर के लिए रवाना हुए।

छपर पहुंचकर वहां विराजित शासन गौरव मुनि ताराचंद, मुनि सुमतिकुमार के दर्शन कर अणुव्रत कार्यक्रमों से अवगत करवाया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष बाबूलाल दुधोड़िया, मंत्री विनोद नाहटा, कार्यकर्ता प्रदीप सुराणा ने स्वागत किया। छपर में अणुव्रत कार्यों को गति प्रदान करने की प्रेरणा दी गयी। विनोद नाहटा ने वहां पर एक भूखंड बताया, जिसे अणुव्रत कार्यों के लिए प्रदत्त किया गया है, यह बताया गया। छपर से सुजानगढ़ के लिए रवाना हुए।

सुजानगढ़ में विराजित शासनश्री साध्वी राजीमती का दर्शन-लाभ लिया। साध्वीजी से अणुव्रत कार्यक्रमों के बारे में लम्बी चर्चा हुई। थली क्षेत्र में अणुव्रत की गति को लेकर साध्वीजी ने चिन्ता व्यक्त की। तेरापंथ समाज का उपेक्षा भाव व समाज में अणुव्रतियों व अणुव्रत के प्रति समर्पित कार्यकर्ताओं का अभाव खटकता है। समाज में नशामुक्ति व अणुव्रत आचार-संहिता अपनाने पर बल देने से ही कार्यक्रम को अच्छी गति प्राप्त हो सकेगी। साध्वीश्री से मंगल पाठ सुनकर लाडनू के लिए रवाना हुए। रात्रि विश्राम वहीं किया।

लाडनू में डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी को साथ लेकर प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार के दर्शन कर

आशीर्वाद लिया। डॉ. त्रिपाठी से अणुव्रत-ग्राम, व नशामुक्ति के बारे में जानकारी प्राप्त की। गुरुदेव आचार्य तुलसी के समय जिस जोश के साथ कार्यकर्ता अणुव्रत का कार्य करते थे, इतिहास की एक जीवन्त झलक उनके वार्तालाप में देखने को मिली। हम उसी प्रकार अब अणुव्रत को कैसे गतिशील बनायें, इस पर भी चर्चा चली। डॉ. त्रिपाठी लम्बे काल से अणुव्रत कार्यों से जुड़े हुए हैं अतः उनके साथ काफी लम्बी चर्चा हुई एवं भावी कार्यक्रमों के बारे में विचार-विमर्श किया गया।

28 सितंबर 2011 : अणुव्रत समिति लाडनू द्वारा अहिंसा भवन में 'अणुव्रत प्रेरणा दिवस' का आयोजन प्रो. मुनि महेन्द्र कुमार के सान्निध्य में रखा गया। स्थानीय समिति के अध्यक्ष अली अकबर रिजवी ने सभी का स्वागत करते हुए अणुव्रत को अपनाने की प्रेरणा दी। प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने अणुव्रत कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने, सघन कार्यक्रमों को संचालित करने की प्रेरणा दी। मुनि अजीतकुमार व मुनि अभिजीत ने भी अपने विचार व्यक्त किये। महासमिति अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा व महामंत्री सम्पत सामसुखा ने 'अणुव्रती बनो' अभियान पर विशेष बल दिया। शहर के अधिक से अधिक लोगों को अणुव्रत समिति से जोड़ने की बात कही। कार्यक्रम का संयोजन वीरेन्द्र भाटी 'मंगल' ने किया। कार्यकर्ताओं का कहना था कि अगर जैन विश्व भारती अणुव्रत भवन बनाने के लिए भूखंड उपलब्ध करवा देती है तो अणुव्रत समिति अपने संसाधनों से भवन का निर्माण करवा लेगी।

गौतम ज्ञानशाला में विराजित समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा व समणी कुसुमप्रज्ञा से भी अणुव्रत कार्यक्रमों व अणुव्रत पत्रिका के बारे में चर्चा हुई व मार्गदर्शन प्राप्त किया। आचार्य कालू कल्याण महाविद्यालय की प्राचार्या समणी डॉ. मल्लिप्रज्ञा ने यहां 13-14 अक्टूबर को आयोजित होने वाले कार्यक्रम 'उडान-2011' कार्यक्रम में आने का निमंत्रण दिया। दोपहर में प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार से विशेष मार्ग-दर्शन प्राप्त हुआ। मुनिश्री से प्रेरणा लेकर हम लाडनू से जयपुर के लिए रवाना हुए।

शाम को अणुविभा केन्द्र - जयपुर पहुंचकर मुनि कुलदीपकुमार व मुनि मुकुलकुमार के दर्शन किये। शिक्षा समिति जयपुर के नव-निर्वाचित अध्यक्ष नरेश मेहता को बधाई दी। सहज रूप से ही जयपुर के विशिष्ट

कार्यकर्ताओं से मिलना हुआ। उनके साथ सायंकालीन आहार लिया। अणुव्रत पाक्षिक के संपादक महेन्द्र जैन भी उपस्थित थे।

29 सितंबर 2011 : अणुव्रत समिति जयपुर द्वारा 'साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस' का आयोजन किया गया। समिति के अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' द्वारा सभी का स्वागत किया गया व सांप्रदायिक सौहार्द की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता सुरेन्द्र शर्मा पूर्व डीआईजी ने सांप्रदायिक सौहार्द पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करते हुए कहा- विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों द्वारा अपने आपको सर्वश्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति ही सौहार्द को विकृत करती है। मुनि कुलदीपकुमार तथा अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने भी अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन समिति की मंत्री कल्पना जैन ने किया। संचालन पन्नालाल पुगलिया ने किया।

कार्यक्रम के बाद भिक्षु साधना केन्द्र में विराजित साध्वी रामकुमारी के दर्शन कर मांगलिक प्राप्त कर जयपुर से जोधपुर के लिए रवाना हुए। जोधपुर रात्रि 12.30 बजे पहुंचकर विश्राम किया।

30 सितंबर, 2011 : अणुव्रत समिति जोधपुर की मंत्री श्रीमती सुधा भंसाली के आवास पर सुबह का नाश्ता कर जोधपुर शहर सभाभवन में मुनि रवीन्द्रकुमार के दर्शन किये। यहां साध्वी यशोधरा के सान्निध्य में अणुव्रत गीत- गायन प्रतियोगिता का कार्यक्रम आयोजित था। सभा भवन जाटाबास जोधपुर शहर के अध्यक्ष धनपत मेहता, युवक परिषद के अध्यक्ष दिलीप श्रीमाल, मंत्री प्रदीप चोरड़िया ने महासमिति अध्यक्ष व महामंत्री का साहित्य व मेमेन्टो द्वारा स्वागत किया। प्रतियोगिता में तीन विद्यालयों ने भाग लिया। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। साध्वी यशोधरा ने आशीर्वाचन प्रदान किया। संचालन अध्यक्ष गोविन्दराज पुरोहित ने किया।

द्वितीय सत्र में कार्यक्रम तातेड़ भवन सरदारपुरा में रखा गया। मुनि रवीन्द्रकुमार के सान्निध्य में पारितोषिक वितरण समारोह व नशामुक्ति का कार्यक्रम रखा गया। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के सदस्य ओमप्रकाश लोहरा ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर मुनि रवीन्द्रकुमार, मुनि पृथ्वीराज, बाबूलाल गोलछा, सम्पत सामसुखा, हनवन्तराज मेहता ने विचार रखे। अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित अणुव्रत गीत, निबंध, प्रश्नमंच व पोस्टर प्रतियोगिता के लगभग 118 विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कार

प्रदान कियेगये। आभार ज्ञापन सुधा भंसाली ने किया।

कार्य सम्पन्न कर जोधपुर से रात्रि में पाली पहुंचे। सज्जनराज बाठिया के आवास पर भोजन कर सभा भवन पहुंचे। साध्वी भीखांजी (लाडनूँ) व साध्वी चन्द्रकला के दर्शन किये। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मंत्री व कार्यकर्ताओं से सुबह के कार्यक्रम के बारे में चर्चा की। पाली में अणुव्रत के कार्य के बारे में चर्चा की। पाली में अणुव्रत नगर, अणुव्रत वाटिका, अणुव्रत द्वार बने हुए हैं, जिनका अवलोकन किया। अहिंसा द्वार निर्माणाधीन है। संस्थाओं में अच्छा सौहार्द व सहयोग है। कार्यकर्ता भी जागरूक हैं।

1 अक्टूबर, 2011 : अणुव्रत समिति पाली द्वारा 'अनुशासन दिवस' का आयोजन हुआ। साध्वी भीखांजी ने अपने आशीर्वाचन में अनुशासन की महत्ता पर प्रकाश डाला। साध्वी चन्द्रकला ने अनुशासन में रहने की प्रेरणा दी। सहवर्तनी साध्वियों ने सुमधुर गीत का संगान किया। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने बच्चों में संस्कार निर्माण की बात कही। महामंत्री सम्पत सामसुखा ने कहा-- हम पहले स्वयं को अनुशासित करें। इस अवसर पर भेरचंद गोगड़, उगमचंद गादिया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सुशील लुणावत ने अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष एवं महामंत्री का साहित्य भेंटकर अभिनन्दन किया। यहां से केलवा के लिए रवाना हुए।

चारभुजा पहुंचकर साध्वी कनकश्री एवं महामंत्री सम्पत सामसुखा की बहिन साध्वी डॉ. निर्मलयशा के दर्शन किए। महामंत्री के लघु भ्राता के यहां अल्पाहार लेकर केलवा के लिए रवाना हुए। केलवा अणुव्रत प्रभारी मुनि अक्षयप्रकाश एवं मुनि सुखलाल के दर्शन किए। उन्हें यात्रा वृत्तान्त की अवगति दी। मुनिद्वय के साथ अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के

दर्शनों का लाभ लिया। देशभर की 100 समितियों की संगठन यात्रा का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

केलवा, 2 अक्टूबर 2011 : अणुव्रत समिति केलवा के तत्वावधान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा की उपस्थिति में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का अन्तिम दिवस 'अहिंसा दिवस' के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान के पूर्व गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया थे।

भीलवाड़ा, 2 अक्टूबर, 2011 : अणुव्रत समिति भीलवाड़ा द्वारा साध्वी प्रमोदश्री के सान्निध्य में सभा भवन में 'सांप्रदायिक सौहार्द दिवस' मनाया गया। साध्वी प्रमोदश्री ने सांप्रदायिक सौहार्द पर विचार रखे। मुख्य अतिथि सुरजीत सिंह ने कहा-- प्रभु ईसामसीह ने प्रेम का संदेश दिया है कि हमें प्रेम के रास्ते पर चलना चाहिए। इस अवसर पर जामा मस्जिद भीलवाड़ा की तरफ से शाहपुरा के मौलाना मुमताज, निम्बार्क आश्रम के संत मोहनशरण शास्त्री, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पुखराज दक, अणुव्रत महासमिति के महामंत्री सम्पत सामसुखा, सभाध्यक्ष भैरूलाल बापना, तेयुप अध्यक्ष सुनील दक, महिला मंडल अध्यक्ष कीर्ति बोर्दिया ने अपने विचार रखे। संचालन अणुव्रत समिति के मंत्री अशोक सिंघवी ने किया।

शाहपुरा में सायंकालीन कार्यक्रम 'अहिंसा दिवस' का आयोजन रखा गया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सोमेश्वर व्यास ने सभी का स्वागत किया। प्रमुख वक्ता धर्मचिन्द जैन थे। महासमिति के महामंत्री सम्पत सामसुखा ने अपने प्रेरक विचार रखे। संचालन रामनारायण उपाध्याय ने किया। इस कार्यक्रम की संपन्नता के साथ अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह यात्रा का समापन हुआ।

-- सम्पत सामसुखा, महामंत्री



अणुव्रत प्रवक्ता जी.एल. नाहर की अणुव्रत उद्बोधन यात्रा

पर्यावरण शुद्धि दिवस : 26 सितम्बर, 2011: सवाईमाधोपुर : साध्वी विद्यावतीजी (द्वितीय) के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में जी.एल. नाहर ने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के आयोजन की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि - व्यक्ति अणुव्रत के विशिष्ट सूत्र-“मैं क्रूरतापूर्ण व्यवहार नहीं करूंगा” की अनुपालना का दृढ़ संकल्प कर ले तो पर्यावरण की समस्या का समाधान स्वतः ही निकल आयेगा। साध्वीश्री ने कहा- “पर्यावरण शुद्धि हेतु ‘मन की शुद्धि’ अनिवार्य है। मानव और पर्यावरण एक दूसरे के पूरक हैं, अतः उनका संतुलन आवश्यक है।”

स्थानीय अणुव्रत समिति के मंत्री रतनलाल जैन ने समिति को सुदृढ़ बनाने का तथा स्थानीय सभा द्वारा सभा में एक अणुव्रत प्रकोष्ठ का गठन करने आश्वासन दिया गया।

नशामुक्ति-दिवस : 27 सितम्बर : कोटा
मुनि रमेश कुमार ने नशे के अनेक रूपों व उनके दुष्परिणामों को रेखांकित करते हुए स्पष्ट किया कि व्यसन व्यक्तिगत जीवन को चौपट कर देता है। व्यक्ति की विश्वसनीयता पर प्रश्न-चिन्ह लग जाता है। अणुव्रत चरित्र-शुद्धि का आन्दोलन है। चरित्र-निष्ठ व्यक्ति ही चरित्र-सम्पन्न समाज एवं राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। व्यसन हमारा शत्रु है।

इसी दिन निःशुल्क नशामुक्ति शिविर भी अणुव्रत भवन में आयोजित किया गया।

अणुव्रत प्रेरणा दिवस : 28 सितम्बर : नोखा : साध्वी काव्यलता के सान्निध्य में अणुव्रत प्रेरणा दिवस का आयोजन हुआ। अणुव्रत प्रवक्ता जी.एल. नाहर ने अपने वक्तव्य में बताया कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने 13 दिसम्बर, 1956 को सपू हाऊस, नई दिल्ली में अणुव्रत आंदोलन प्रवर्तक आचार्य तुलसी के सान्निध्य में आयोजित प्रथम अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के उद्घाटन समारोह में भाग लिया था। संकल्प शक्ति के विकास का एक प्रमुख सूत्र है- व्रत। भारतीय संस्कृति में व्रत का बड़ा महत्व है। इसलिए अणुव्रत ‘संयम खलु जीवनम्’ के घोष के रूप में संयम की दृढ़ता पर जोर देता है। जब व्रत की चेतना जाग्रत हो जाती है, तो अर्थ की समस्या, पर्यावरण की समस्या, भूख की समस्या आदि सभी समस्याओं का समाधान प्राप्त किया जा सकता है।

साध्वी श्री ने कहा- मनुष्य को सही अर्थ में मनुष्य बनाने की प्रक्रिया है- अणुव्रत। यह असम्प्रदायिक धर्म है। मानव धर्म है। अनासक्त चेतना का विकास होने से ही अपनी पहचान का पथ प्रशस्त होता है। स्थानीय सभा में अणुव्रत-संयोजक के रूप में इन्दरचन्द वैद (कवि) को मनोनीत करने का निर्णय किया गया।

साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस : 29 सितम्बर : देशनोक : साध्वी रतनश्री ने कहा कि जाति व सम्प्रदाय की दीवारें मनुष्य को बांट देती हैं। ये दीवारें पारदर्शी बनें। इसके लिए अणुव्रत का घोष ‘इंसान पहले इंसान-फिर हिन्दू या मुस्लमान’ है। उन्होंने कहा कि चरित्र निर्माण के लिए अणुव्रत सर्व-हिताय है।

संयम दिवस : लूणकरणसर : 30 सितम्बर : कार्यक्रम में साध्वी पानकुमारी ने इच्छाओं का अल्पीकरण तथा छोटे-छोटे योग-साधना के प्रयोगों से संयम की साधना करने पर बल दिया। उन्होंने ‘संयम खलु जीवनम्’ का उल्लेख करते हुए कहा कि संयम के द्वारा ही विश्व की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। संयम की साधना अहिंसा ही है।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष जतनलाल बोथरा एवं अणुव्रत समिति के अध्यक्ष भागीरथ बिजारणीया ने भी विचार रखे।

अनुशासन दिवस : 01.10.2011 कालू (जिला-बीकानेर) : साध्वी फूलकुमारी ने कहा - सदाचार और उपासना को जोड़ दिया जाए तो समीकरण बनेगा- अच्छा व्यक्ति, अच्छा परिवार, अच्छा समाज और अच्छा राष्ट्र। यही अणुव्रत है। अणुव्रत दर्शन को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा कि संकल्प की साधना ही अणुव्रत है। अणुव्रत एक असाम्प्रदायिक मानव धर्म है जो हमें मानवीयता के उच्चतम धरातल से जोड़ता है। ‘निज पर शासन फिर अनुशासन’ के घोष को आत्मसात करने की विशेष प्रेरणा दी।

कालू की संक्षिप्त यात्रा में जतनलाल बोथरा, अध्यक्ष- तेरापंथी सभा- लूणकरणसर व सुरेन्द्र कुमार गंग सभा- सदस्य एवं विशिष्ट उद्योगपति का उल्लेखनीय सहयोग रहा। सभा भवन में एकत्रित विभिन्न वर्गों के पुरुषों, महिलाओं तथा स्थानीय अणुव्रत समिति के उपस्थित सदस्यों की संगोष्ठी में अणुव्रत प्रवक्ता जी. एल. नाहर ने कहा कि अहिंसा दर्शन को दुनिया

का श्रेष्ठतम जीवन दर्शन कहा जा सकता है। अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी का जन्म दिन विश्व स्तर पर अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह हम देश-वासियों के लिए अत्यंत गौरव की बात है। अणुव्रत का प्राण-तत्त्व संयम है व उसकी साधना एक अपेक्षा से अहिंसा ही है। संगोष्ठी में सोहनलाल रांका, मांगीलाल रांका, अनिल कुमार रांका एवं स्थानीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष अनिल जैन ने भी विचार व्यक्त किये।

पीलीबंगा : 23 अक्टूबर : जी.एल. नाहर ने साध्वी सोमलता को अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 1500 किलोमीटर की अणुव्रत-उद्बोधन-यात्रा में विभिन्न क्षेत्रों की लगभग सभी तेरापंथी सभाओं ने सभा की कार्यकारिणी समिति में एक अणुव्रत संयोजक की नियुक्ति का पक्का आश्वासन दिया है। अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जन्म-शताब्दी वर्ष के लिए अच्छे वातावरण का निर्माण हो, स्थानीय पत्रकार, साहित्यकार, राजनेता और सभी क्षेत्रों के लोग अणुव्रत के साथ जुड़ें, यह सबका प्रयत्न होना चाहिए।

विधानसभा अध्यक्ष एवं मुख्यमंत्री से मुनिश्री की वार्ता

दिल्ली। दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री के आवास पर मुनि जयकुमार ने देश की वर्तमान स्थिति एवं अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष समारोह पर चर्चा की। डॉ. योगानंद शास्त्री ने इस हेतु अपना व्यक्तिगत एवं सरकार द्वारा अधिक से अधिक सहयोग देने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर मुनि रोहितकुमार, मुनि मुदितकुमार, रमेश गोयल, सुशील कुहाड़, हीरालाल गेलड़ा, अरविन्द दूगड़ एवं संदीप डुंगरवाल उपस्थित थे।

अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री जारबोम गामलीन ने ग्रीनपार्क में मुनि जयकुमार के दर्शन किये। मुनिश्री अहिंसा, नैतिकता, शिक्षा एवं अणुव्रत विषयों पर मुख्यमंत्रीजी से चर्चा की। मुख्यमंत्री जारबोम गामलीन ने राजस्थान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के दर्शन करने की भावना व्यक्त की। मुख्यमंत्री का आचार्य महाप्रज्ञ एवं अणुव्रत साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

पश्चिम बंग अणुव्रत समिति, कोलकाता के आयोजन

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा निर्देशित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का आयोजन (26.09.21011 से 02.10.2011 तक) कोलकाता में साध्वी कनकश्री के पावन सान्निध्य में पश्चिम बंग प्रादेशिक अणुव्रत समिति एवं अणुव्रत समिति - कोलकाता के तत्वावधान में दक्षिण - कोलकाता सभा भवन में हुआ। निकट अतीत में कोलकाता में पहली बार ऐसा आयोजन हुआ है सभी कार्यक्रम पूर्ण व्यवस्थित, पूरे उत्साह के साथ, बड़ी उपस्थिति में सम्पन्न हुए। संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार है :

जीवन विज्ञान दिवस : 'आज की शिक्षा-पद्धति अधूरी है, बौद्धिकता के विकास पर बहुत ध्यान दिया जाता है, पर भावनात्मक विकास नहीं हो पाता। शिक्षा को संपूर्ण बनाने के लिए जीवन-विज्ञान शिक्षा का नया आयाम है और इसका पालन करने से व्यक्ति का पूर्ण विकास हो सकता है।' साध्वीश्री के इस विशेष प्रेरणा पाथेय के अलावा रतनलाल पारख ने अपने उद्बोधन में स्वयं के जीवन में जीवन विज्ञान के अवतरण से प्राप्त विशेष उपलब्धियों की चर्चा की। साध्वी विद्यावतीजी (द्वितीय) के सान्निध्य में सायंकालीन कार्यक्रम में अणुव्रत गीतों की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें कालुकन्या महाविद्यालय, लाडनू की छात्राओं की विशेष उपस्थिति रही। प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले संभागियों को पुरस्कृत किया गया। कुल 96 संभागी थे।

पर्यावरण विशुद्धि दिवस : 'पर्यावरण की समस्या आज की सबसे चिंतनीय समस्या है और पूरा विश्व इस समस्या से त्रस्त है। ऐसे विकट समय में अणुव्रत सारी सृष्टि को नया जीवनदान दे सकता है। हरे भरे वृक्षों को नहीं काटना, पानी का अपव्यय नहीं करना, अपने आन्तरिक और बाहरी वातावरण को शुद्ध करना, अणुव्रत के नियमों का पालन करना आदि से इस विकट समस्या का बहुत हद तक समाधान हो सकता है।' साध्वी कनकश्री का यह विशेष उद्बोधन प्राप्त हुआ। 'भगवान महावीर इस युग के प्रथम पर्यावरण वैज्ञानिक थे' इस विषय पर विशेष चर्चा आयोजित हुयी।

आज अपराह्न समय में 'बैठो और आंको' प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसका विषय था 'पर्यावरण विशुद्धि'। इसमें तीन ग्रुप बनाये गये - 8-12 वर्ष, 13-16 वर्ष, 17-20 वर्ष। प्रतियोगिता में लगभग 200 बच्चों ने अपनी प्रतिभा तथा कल्पना शक्ति का बखूबी प्रदर्शन किया। संभागियों को पुरस्कृत भी किया गया।

अनुशासन दिवस : 'अनुशासनहीनता आज की ज्वलंत समस्या है। सारी प्रकृति अनुशासन में रहती है, अनुशासन का पाठ पढ़ाती है, पर विडंबना है कि प्रकृति का सबसे बुद्धिमान प्राणी आज अनुशासन में नहीं रहना चाहता। इसी का प्रतिफल है कि आज तोड़-फोड़मूलक, हिंसात्मक प्रवृत्तियों का बोलबाला हो रहा है। आवश्यकता है कि अणुव्रत के सिद्धांत जीवन में उतरे।' - साध्वी कनकश्री ने कहा।

अपराह्न में रोटरी सदन कलकत्ता में 'अनुशासन से भ्रष्टाचार मिटाया जा सकता है' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अहिंसा दिवस : 'भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है और इसका आदि बिन्दु अहिंसा है। भगवान महावीर की अहिंसा, बुद्ध की करुणा, राम की सत्यनिष्ठा, कृष्ण का प्रेम, ईसा की सेवा, मुहम्मद साहब का भाईचारा सब एक ही बिन्दु की परिक्रमा करते हैं।' ऐसे विचार प्रकट करते हुए साध्वी कनकश्री ने कहा कि अहिंसा केवल सिद्धान्त नहीं, जीवन की शैली बने। राजस्थान पत्रिका के संपादक राजीव हर्ष विशेष रूप से उपस्थित थे। रात्रिकालीन कार्यक्रम में अहिंसा विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

नशामुक्ति दिवस : 'अणुव्रत का यह संदेश : व्यसनमुक्त हो सारा देश' विषय पर चर्चा करते हुए साध्वी कनकश्री ने कहा - नशा एक आदत है जो व्यक्ति को आदी बना देती है। आदी होना अच्छा भी है और बुरा भी है। आध्यात्मिक आदत का होना अच्छी बात है पर नशीली चीजों का आदी होना बरबादी का कारण है।

अणुव्रत प्रेरणा दिवस : 'अणुव्रती किसी भी क्षेत्र में हो अच्छा इंसान बने। अच्छा कार्य करे, नैतिक मूल्यों का सम्मान करे, सत्यनिष्ठ बने।' अणुव्रती बनने की प्रेरणा प्रदान करते हुए साध्वी कनकश्री ने कहा कि लगभग 62 वर्ष पूर्व आचार्य तुलसी ने अपनी दिव्य दृष्टि से भविष्य में होने वाले नैतिक मूल्यों के क्षरण की संभावनाओं को देखते हुए 'अणुव्रत' का प्रवर्तन किया था। आज की विषम परिस्थितियां इस 'अणुव्रत' की प्रासंगिकता का स्वयंभू प्रमाण हैं।

सांप्रदायिक सौहार्द दिवस : "अणुव्रत असांप्रदायिक धर्म है। धर्म का सही रूप है कि 'धर्म बांटता नहीं, जोड़ता है'। पर निहित स्वार्थ के लिए हमने इसे संप्रदाय का जामा पहना दिया।" साध्वी कनकश्री ने आगे कहा कि अणुव्रत किसी संप्रदाय से बंधा नहीं है, इसीलिए यह सबका है, पूरे युग का है। आचार्य तुलसी जैन धर्म के एक अंग तेरापंथ के आचार्य होते हुए भी गिरजाघरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों व अन्य उपासना स्थलों में गये तो हरिजनों के घरों में भी गये। उन्होंने सदा सांप्रदायिक सौहार्द की मिसाल कायम की। दक्षिण कलकत्ता तेरापंथी सभा द्वारा प्रायोजित आज के सर्वधर्म सम्मेलन कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित थे--

माते-ए-इस्लामी पं. बंगाल के वजीर जनाब अब्दुल अजीज, ऑल-इंडिया माइनोंरिटी एंड वीकर सेक्शन काउंसिल के चेयरमैन तथा मदर टेरेसा इंटरनेशनल एवार्ड कमेटी के चेयरमैन एंथोनी अरुण विश्वास एवं गुरुद्वारा रास बिहारी के डॉ. सुखवंत सिंह ने सांप्रदायिक सौहार्द पर विचार रखे।

सभी कार्यक्रमों का संयोजन प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश सुराणा ने किया। अणुव्रत समिति - कोलकाता के अध्यक्ष श्यामसुंदर चोरडिया, प्रतिभा कोठारी (मंत्री-पं. बंग. प्रा. अ. स.), कमला छाजेड़, सुनीता सेठिया, प्रकाश डागा, प्रकाश सुराणा सहित कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

— प्रकाश सुराणा, अध्यक्ष

अणुव्रत समिति, बीकानेर के आयोजन

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण द्वारा उद्घोषित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के आयोजन 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2011 तक बीकानेर शहर की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में निम्न प्रकार आयोजित किये गये :-

पर्यावरण शुद्धि दिवस महिला मण्डल स्कूल (जूनागढ़ के पास) के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। अणुव्रत शिक्षक संसद के खुशालचंद व्यास व पूनमचन्द स्वामी ने भाग लिया। अध्यक्षता शाला प्रधानाचार्य लतारानी गोस्वामी ने की। पर्यावरण शुद्धि दिवस में वायु, जल, ध्वनि मानसिक प्रदूषण पर विस्तार से विचार प्रकट किये गये और सैकड़ों छात्र-छात्राओं से संकल्प-पत्र भरवाये गये। उपस्थित शिक्षक-अभिभावक व छात्रों से एक वर्ष में एक पेड़ लगाने और उसकी सुरक्षा व देखभाल करने का आग्रह किया गया।

जीवन विज्ञान दिवस रमेश इंग्लिश स्कूल में आयोजित हुआ। शिक्षक नेता सत्यनारायण आचार्य, राजस्थान समाजशास्त्रीय समिति के अध्यक्ष मुख्य अतिथि की उपस्थिति में अणुव्रत समिति, बीकानेर के अध्यक्ष डॉ. गोपाल आचार्य ने प्रार्थना सभा में जीवन-विज्ञान-योग व उसके महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रार्थना, आसन, महाप्राण ध्वनि, कायोत्सर्ग, दीर्घश्वास प्रेक्षा, ज्ञानकेन्द्र प्रेक्षा, संकल्प और वन्दना का जीवन में सर्वोपरि स्थान है।

अणुव्रत प्रेरणा दिवस - रांगड़ी चौक, बोथरा मोहल्ला की लाल कोठी में साध्वी जयश्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। साध्वी प्रियदर्शना व अनुप्रेक्षा ने भी विचार प्रकट किये। उन्होंने अणुव्रत आचार संहिता, नैतिकता, सादगी, मानवता व इंसानियत को जीवन का हिस्सा बनाने हेतु प्रेरित किया।

साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस महारानी सुदर्शना कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना की प्रभारी डॉ. बबीता जैन व निधि अग्रवाल के संयोजन में तथा प्रिन्सिपल मनीराम मुख्य अतिथि के सान्निध्य में मनाया गया।

प्रिन्सिपल मनीराम ने कहा कि मानवीय मूल्यों व नैतिकता का जीवन में आचरण करना

चाहिये। मेघराज सेठिया ने अणुव्रत वर्गीय नियम शिक्षकों व छात्राओं को पढ़कर सुनाए। कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत गीत 'संयममय जीवन' के गायन से हुई।

नशामुक्ति दिवस राजस्थान बाल मन्दिर के प्रांगण में प्रधानाचार्य रमेश व्यास के संयोजन में सम्पन्न हुआ। अध्यक्षता डॉ. गोपाल आचार्य ने की। वक्ताओं में मेघराज सेठिया, खुशालचन्द व्यास व झंवरलाल गोलछा तथा संजय बेद थे।

सैकड़ों छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुये 'नशा नाश का द्वार है' पर प्रभावशाली भाषण व नशामुक्ति पोस्टर का विमोचन किया गया। मादक पदार्थ व तम्बाकू सेवन से होने वाली बीमारियों से अवगत कराया गया। शराब, गांजा, चरस, पान-गुटका, सिगरेट आदि के स्वास्थ्य को नुकसान के बारे में विस्तृत चर्चा हुयी।

अनुशासन दिवस श्री जैन कन्या महाविद्यालय, बीदासर- बारी के बाहर के प्रांगण में साध्वी उज्ज्वल प्रभा व साध्वी प्रियदर्शना के सान्निध्य में मनाया गया। जीवन में अनुशासन का महत्व बताते हुये साध्वी श्री ने संकल्प शक्ति का प्रयोग करवाया। प्रिन्सिपल डॉ. प्रभा भार्गव ने सबका आभार प्रकट किया। उन्हें अणुव्रत साहित्य भेंट किया गया। साध्वीवृंद ने शिक्षकों व छात्राओं के प्रश्नों के उत्तर दिये व जिज्ञासाएं समाहित कीं।

अहिंसा दिवस राजकीय बारह गुवाड़ बालिका सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, पुष्करणा स्कूल परिसर में किया गया। कार्यक्रम साध्वी कमलप्रभा व साध्वी अनुप्रेक्षा के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। उन्होंने अहिंसा का महत्व बताते हुये उदारता, सहनशीलता, संयम, सादगी, नैतिकता, सदाचार का महत्व बताते हुये उन्हें जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी। श्रीमती प्रभा पारीक, प्रधानाचार्य ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया और समय-समय पर जीवन-विज्ञान योगों को छात्राओं को सिखाने हेतु आने का निमंत्रण दिया। उन्हें श्रद्धानिष्ठ श्रावक भंवरलाल नाहर ने अणुव्रत साहित्य भेंट किया।

- डॉ. गोपाल आचार्य
अध्यक्ष

जीवन विज्ञान हमें जीना सिखाता है

उदयपुर, 27 सितम्बर : अणुव्रत समिति, उदयपुर द्वारा महिला मण्डल-उदयपुर के तत्वावधान में साध्वी कनक रेखा के सान्निध्य में 'जीवन विज्ञान दिवस' मनाया गया।

मुख्य अतिथि राजसमन्द की विधायक किरण माहेश्वरी ने बालिकाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि जो धर्म के साथ शिक्षा होती है वही सही माने में शिक्षा होती है। पढ़ाई के साथ व्यावहारिक शिक्षा का भी जीवन में होना अनिवार्य है। हम अपने व्यवहार से दूसरों का दिल जीत सकते हैं तो उसी प्रकार अपने कार्य, व्यवहार, संस्कार से एक श्रेष्ठ जीवन जीते हुए समाज की सेवा कर सकते हैं।

विदुषी साध्वी कनक रेखा ने बताया कि शिक्षा व्यक्ति के जीवन को सजाती है, संवारी है। शिक्षा सिर्फ बौद्धिक ज्ञान, आजीविका या किसी लक्ष्य की प्राप्ति तक सीमित नहीं होनी चाहिए बल्कि शिक्षा से चारित्रिक निर्माण होना चाहिए, जिससे जीवन श्रेष्ठ बन सके। साध्वीश्री ने जीवन विज्ञान के प्रयोग भी कराये, जैसे-- दीर्घ श्वास लेना-छोड़ना, सीधा बैठना, ध्यान करना इत्यादि। साध्वीश्री ने बच्चों को नशा-मुक्त जीवन जीने की सलाह देते हुए अणुव्रत आचार संहिता के कुछ नियमों के संकल्प भी दिलाए।

समिति के अध्यक्ष गणेश डागलिया ने जीवन विज्ञान दिवस की महत्ता बताते हुए छात्रों को चारित्रिक निर्माण के नियमों से अवगत कराया।

इस अवसर पर डॉ. शंकरलाल इण्टोदिया, अरविन्द चित्तोड़ा, सुनील खोखावत, जमनालाल दशोरा आदि उपस्थित थे। धन्यवाद कार्यकारी महामंत्री राजेन्द्र सेन ने दिया।

दादर में व्यसन-मुक्ति-दिवस

दादर (मुंबई) : अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत परेल स्थित तुलसी मानस हिन्दी विद्यालय के 250 विद्यार्थियों के बीच साध्वी अशोकश्री की सहयोगी साध्वी चिन्मयप्रज्ञा ने छात्र-छात्राओं को अच्छी आदतों को ग्रहण करने व बुरी आदतों से दूर रहने की प्रेरणा दी। साध्वी चारुप्रभा ने गीत द्वारा व्यसनों के प्रभाव को चित्रित किया। अनेक विद्यार्थी व शिक्षकों ने व्यसन-मुक्ति संकल्प-पत्र भी भरे।

नशे की प्रवृत्ति खतरनाक

कोटा, 28 सितम्बर : “वर्तमान युग में सर्वाधिक खतरनाक है बढ़ती हुई नशे की प्रवृत्ति। व्यक्ति गलत सोहबत अथवा शौकिया तौर पर नशे की गिरफ्त में आ जाता है; किन्तु बाद में उसे छोड़ने में बहुत ही कठिनाई महसूस करता है। शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सभी दृष्टियों से नशा व्यक्ति की दुर्दशा करने वाला है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों एवं दृढ़-इच्छा शक्ति से व्यक्ति नशे से छुटकारा पा सकता है।” ये विचार अणुव्रत समिति एवं संवेदना सेवा एवं रिसर्च फाउण्डेशन, कोटा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित निःशुल्क नशामुक्ति शिविर में शिविरार्थियों को सम्बोधित करते हुए मुनि रमेश कुमार ने स्थानीय अणुव्रत भवन में व्यक्त किए।

इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमार ‘अमन’ ने कहा— अपराध प्रवृत्ति में नशा और गुस्ता ये दो मुख्य कारण बनते हैं। नशा नाश का द्वार है। जीवन को बरबादी के कगार पर पहुंचाने वाला है। नशा करने वाला स्वयं तो दुःखी बनता है साथ ही उसका पूरा परिवार तथा पड़ोसी भी दुःखी बनते हैं। व्यक्ति प्रतिदिन 10 मिनट के लिए दीर्घ श्वास का प्रयोग करे तो कोई भी नशा क्यों न करता हो वह उससे छुटकारा पा सकता है।

संवेदना सेवा समिति के अध्यक्ष डॉ. आर.सी. साहनी एवं उनकी पूरी टीम ने काऊन्सिलिंग करके शिविरार्थियों को नशे के कारण होने वाली हानियों के बारे में समझाया तथा कतिपय पति एवं पत्नी के बीच उत्पन्न कटुताओं को भी दूर किया।

...

प्रशिक्षक-प्रशिक्षण

कार्यशाला सम्पन्न

लाडनू, 24 सितम्बर : जैन विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा 19 सितम्बर से 24 सितम्बर तक आयोजित छः दिवसीय शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यशाला के समापन पर प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने कहा--“किसी भी उपलब्धि को पाने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। पुरुषार्थ के लिए जीवन की सही समझ होनी चाहिए। समाज में अनेक समस्याएं हैं जिनका समाधान सही समझ से होता है। सही समझ का विकास जीवन-विज्ञान की शिक्षा से होता है। यह प्रशिक्षण कार्यशाला एक ज्ञान-यज्ञ है, इसमें सभी संभागियों ने अपनी आहुतिया दी हैं। इस कार्यशाला में जो कुछ सीखा है, आगे बांटना है। दीप से दीप जलाकर इस अभियान को महाअभियान बनाना है।”

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने बताया - जीवन विज्ञान चूंकि व्यक्तित्व विकास का माध्यम है; अतः इस शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हम सबको निरन्तर प्रयास करने हैं। उन्होंने बताया कि इस छः दिवसीय कार्यशाला में कोलकाता, दिल्ली, इन्दौर, उज्जैन, अहमदाबाद, फैजाबाद, सुल्तानपुर, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, भिवानी, सीकर, सरदारशहर, अलवर, जयपुर आदि स्थानों से 42 संभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला में डॉ. संजीव गुप्ता, डॉ. अशोक भास्कर, युवराज सिंह, डा. प्रद्युम्न सिंह, समणी श्रेयस प्रज्ञा एवं रामदेववामन ने विशेष प्रशिक्षण दिये। प्रो. महेन्द्र कुमार, प्रो. जे.पी. एन. मिश्रा डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी एवं डॉ. समणी मल्लिप्रज्ञा की विशेष कक्षाएं आयोजित हुईं।

...

उदयपुर में बनेगा

अणुव्रत भवन

उदयपुर, 21 सितम्बर, 2011 : अणुव्रत

समिति-उदयपुर के अध्यक्ष गणेश डागलिया ने अवगत कराया कि उदयपुर में एक भव्य अणुव्रत भवन बनेगा। डागलिया के अनुसार एस.एस. इन्जीनियरिंग कॉलेज, उमरड़ा के संस्थापक-संरक्षक एवं अध्यक्ष मनमोहनराज सिंघवी अणुव्रत भवन हेतु उमरड़ा स्थित उनके परिसर में भूमि उपलब्ध करवाने के साथ-साथ आर्थिक सहयोग भी प्रदान कर रहे हैं। स्थानीय दान दाताओं के सहयोग से शीघ्र ही निर्माणकार्य प्रारम्भ किया जा रहा है। समिति के उपाध्यक्ष एवं उद्योगपति मानक नाहर ने भी इस कार्य हेतु आर्थिक सहयोग देने की घोषणा की है।

कटक में अणुव्रत समिति का गठन

कटक में समणी निर्देशिका ज्ञानप्रज्ञा के सान्निध्य में अणुव्रत समिति का गठन हुआ। अणुव्रत महासमिति की संगठन मंत्री, अमृत सांसद पुष्पा सिंघी ने कर्मठ युवा कार्यकर्ता सुनील कुमार कोठारी का नाम अध्यक्ष के रूप में घोषित किया। नव नियुक्त अध्यक्ष कोठारी ने पदाधिकारी एवं कार्यसमिति सदस्यों के नामों की घोषणा करते हुए अणुव्रत के प्रति सदैव समर्पित रहने का संकल्प व्यक्त किया। उन्होंने उपाध्यक्ष - राजकुमार पुगलिया व सुशीला सेठिया, मंत्री शांतिलाल लोढ़ा, सहमंत्री - मनोज दूगड़, कोषाध्यक्ष-- राजेन्द्र लूणिया व संगठन मंत्री - मधु कुंडलिया को मनोनीत किया। समणी जी ने स्वयं के, समाज व राष्ट्र के विकास हेतु जागरूकतापूर्वक कार्य करने की प्रेरणा दी।

...

तेयुप जयपुर द्वारा वृहद् रक्तदान शिविर : 1111 यूनिट रक्त संचयन

तेरापंथ युवक परिषद्, जयपुर द्वारा एक वृहद् रक्तदान शिविर का आयोजन लोढ़ा इम्पेक्स-सीतापुरा में किया गया। जयपुर महानगर के चिकित्सालयों में रक्त की आवश्यकता को देखते हुये 1000 यूनिट के लक्ष्य के साथ तेयुप के सदस्यों ने सीतापुरा क्षेत्र के एक-एक उद्योग, फैक्ट्री में जाकर रक्तदान की प्रेरणा की। कार्यक्रम के प्रायोजक उद्योगपति दलपत लोढ़ा स्वयं कार्यकर्ताओं के साथ थे। राजस्थान के सबसे बड़े सरकारी हॉस्पिटल एस.एम.एस. की टीम के अलावा स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक, फोर्टिस हॉस्पिटल, सन्तोकबा दुर्लभजी हॉस्पिटल, भगवान महावीर कैंसर चिकित्सालय व कैलाश हॉस्पिटल-बहरोड़ की टीमों ने रक्त संकलन किया। विभिन्न उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों के अलावा समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों व युवक परिषद् के सदस्यों ने भी रक्तदान किया। मानव सेवा के इस पुनीत कार्य की सर्वत्र सराहना की गई।

कुल प्राप्त 1111 यूनिट में लोढ़ा इम्पेक्स 450 व कम्प्यूकोम 125 यूनिट के रक्त संचय उल्लेखनीय रहे। कार्यक्रम की संयोजना में प्रायोजक दलपत लोढ़ा, अमृत सांसद पन्नालाल पुगलिया, मनोज श्यामसुखा, गौरव जैन, विकास जैन, सुबोध पुगलिया, सत्येन्द्र जैन के अलावा तेयुप जयपुर की कार्यकारिणी सदस्यों का श्रम सराहनीय रहा।

सहयोगी : अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना

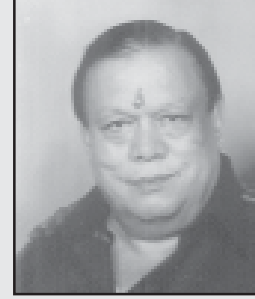
■ विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी



श्री मेघराज सेठिया

सरलिया मार्केट
शिवांगी रोड
नया बाजार, सिलीगुड़ी
मो. : 09932785703

■ विशेष अणुव्रत योगक्षेमी



श्री हरकचंद बिरदीचंद बैद (राजाजी)

पुत्र : पूनमचंद बैद • पौत्र : निर्मल-राजेश • प्रपौत्र : हरशित
मे. पूनम ट्रेड एजेन्सी, नया बाजार, दिल्ली-6
आवास : बी-150, सेकन्ड फ्लोर, फेज-1, विवेक विहार, दिल्ली-95
मे. पानमल जैन एंड कम्पनी डीमापुर - 797112

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना के अन्तर्गत पाँच वर्षों तक नियमित रूप से अर्थ विसर्जन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर अणुव्रत आंदोलन के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनें। आपका अर्थ सहयोग हमारे कार्य का आधार सम्बल बनेगा। आप अपनी विसर्जन राशि बैंक ड्राफ्ट से अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली के नाम से भिजवायें अथवा केनरा बैंक की किसी भी स्थानीय शाखा में अणुव्रत महासमिति के खाता क्रमांक 0158101010750 में जमा कर लिखित सूचना भिजवाएं। **आपका सहयोग : हमारा आधार संबल।**

इस योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष एक निश्चित अर्थ राशि विसर्जित करने वाले अर्थ प्रदाताओं के तीन वर्ग हैं—

विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी

प्रतिवर्ष 51000=00 रु. का अर्थ सहयोग

विशेष अणुव्रत योगक्षेमी

प्रतिवर्ष 21000=00 रु. का अर्थ सहयोग

अणुव्रत योगक्षेमी

प्रतिवर्ष 11000=00 रु. का अर्थ सहयोग

मंगलकामनाएं !

अणुव्रत परिवार के सभी सदस्यगण, अणुव्रत पाक्षिक के प्रिय पाठकगण, प्रबुद्ध लेखकगण एवं अणुव्रत आंदोलन से जुड़े सभी सहयोगी महानुभावों एवं समस्त मानव जाति को पावन पर्व दीपावली एवं अणुव्रत दिवस की हार्दिक मंगलकामनाएं।

विनीत :

बाबूलाल गोलछा

सम्पत सामसुखा

अध्यक्ष

महामंत्री

सहयोगी :

प्रथम अणुव्रत पत्रिका योगक्षेमी

ऋषि सामसुखा

स्विफ्ट कॉलेज ऑफ आईटी एंड मैनेजमेन्ट

हर्जी महादेव रोड, भीलवाड़ा 311001 (राज.)

“अणुव्रत पत्रिका योगक्षेमी योजना”

अणुव्रत पाक्षिक योगक्षेमी योजना के अंतर्गत प्रकाशन एवं प्रसार अभियान के तहत यह विशेष योजना प्रारंभ की गयी है। इसके अंतर्गत एकमुश्त राशि 5100 रु. देकर बनने वाले सदस्य को अणुव्रत पाक्षिक आगामी 15 वर्षों तक निरंतर भेजी जायेगी। इसके अलावा अणुव्रत पाक्षिक प्रकाशन में सदस्य का फोटो एवं पता प्रकाशित किया जायेगा।